ॐ

स्वामी शरण कृत

सामवेद

सरल पाठ, सम्पूर्ण संहिता

प्रकाशक

पालीवाल प्रकाशन

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

गायत्री साहित्य केन्द्र

पालीवाल भवन, 117/एच-1/02, पाण्डु नगर,

जे. के. मन्दिर के सामने, कानपुर - 208005

वेबसाइट - vedayan.simplesite.com

मो. 9839105629, 8687849004, 7985402016

संस्करण : मार्गशीर्ष पूर्णिमा, 2070 वि., 5115 युगाब्द

(दिसम्बर 2013 ई.)

सर्वाधिकार : स्वामी शरण

सहयोग राशि : पाँच सौ रुपये

ॐ

सामवेद

सरल पाठ, सम्पूर्ण संहिता

अनुक्रम

निवेदन		04
सामवेद पूर्वार्चिकः,		
प्रथमो अध्यायः,	म. 1,	10
द्वितीयो अध्यायः,	म. 115,	32
तृतीयो अध्यायः,	म. 233,	52
चतुर्थो अध्यायः,	म. 352,	76
पञ्चमो अध्यायः,	म. 467,	98
षष्ठो अध्यायः,	म. 586,	121
सामवेद उत्तरार्चिकः		
सप्तमो अध्यायः,	म. 651,	135
अष्टमो अध्यायः,	म. 713,	147
नवमो अध्यायः,	म. 775,	159
दशमो अध्यायः,	म. 830,	170
एकादशो अध्यायः,	म. 886,	181
द्वादशो अध्यायः,	म. 955,	194

त्रयोदशो अध्यायः,	म. 1031,	209
चतुर्दशो अध्यायः,	म. 1116,	224
पञ्चदशो अध्यायः,	म. 1175,	235
षोडशो अध्यायः,	म. 1253,	249
सप्तदशो अध्यायः,	म. 1347,	266
अष्टादशो अध्यायः,	म. 1379,	272
एकोनविंशो अध्यायः,	म. 1435,	284
विंशो अध्यायः,	म. 1489,	295
एकविंशो अध्यायः,	म. 1535,	304
द्वाविंशो अध्यायः,	म. 1573,	312
त्रयोविंशो अध्यायः,	म. 1617,	321
चतुर्विंशो अध्यायः,	म. 1657,	329
पञ्चविंशो अध्यायः,	म. 1711,	340
षड्विंशो अध्यायः,	म. 1765,	351
सप्तविंशो अध्यायः,	म. 1816,	361
अष्टाविंशो अध्यायः,	म. 1849,	368

ॐ

निवेदन

वेद विश्व का प्राचीनतम साहित्य तथा भारतीय धर्म - संस्कृति का मूल स्रोत है। वेद का पाठ तथा स्वाध्याय करना हमारा परम धर्म है। हमारी मान्यताएं, चिन्तन तथा आचार - विचार वेद के अनुकूल होना चाहिए। वेदमन्त्रों के अनेक प्रकार के पाठ प्रचलित हैं। सरल पाठ में मन्त्र का सन्धियों से मुक्त सरल पाठ प्रस्तुत किया जाता है। इसका अर्थ है कि पदान्त में अन्य पद की सन्धि नहीं होती है। सरल पाठ में क्रिया विभक्ति अथवा नामिक विभक्ति के पश्चात् कोई शब्द या पद सन्धि के द्वारा नहीं मिलाया जाता है। इसी प्रकार अव्यय आदि शब्दों में जहाँ विभक्ति का लोप होता है, उनके अन्त में भी किसी पद या शब्द या शब्दांश की सन्धि नहीं होती है। इस प्रकार सरल पाठ में सभी पद पृथक् तथा स्पष्ट होते हैं। वेद मन्त्रों का सरल पाठ जनसाधारण के लिए, विशेष रूप से विद्यार्थियों के लिए वेद पाठ तथा अर्थ समझने के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है।

यजुर्वेद आकार में भी बहुत विशाल नहीं है। यह सामवेद की तुलना में कुछ ही अधिक है। इसके मन्त्रों का पाठ धार्मिक कर्मकाण्डों में सबसे अधिक होता है। अधिक प्रचलन के कारण ही इसके अर्थ तथा भाष्य अनेक प्रकार से किये गये हैं। वास्तव में अनेक भाष्यकारों कर्मकाण्ड में प्रयोग काल की उपयोगिता के आधार पर अनेक सन्दर्भ जोड़ दिये हैं। कर्मकाण्ड के समय उनकी उपयोगिता भी अवश्य होती होगी, परन्तु उन सन्दर्भों तथा टिप्पणियों को मन्त्र का अर्थ मान लेने से भ्रम भी उत्पन्न होते रहे हैं। मूल मन्त्र पर ध्यान देते ही मूल आध्यात्मिक अर्थ स्पष्ट हो जाता है तथा इस प्रकार के भ्रमों के लिए कोई अवकाश नहीं रह जाता है। इसकी शत शाखायें कही जाती हैं। यह धार्मिक कार्यों में अनुप्रयोग के अनुसार

प्रस्तुतीकरण अथवा सम्पादन के ही कारण है। मन्त्रों को प्रमुखतः अध्याय तथा सूक्त के रूप में व्यवस्थित किया गया है। यजुर्वेद में चालीस अध्याय हैं। अध्याय - सूक्त क्रम सरल, व्यवस्थित तथा व्यवहारिक भी है।

इस संस्करण में मूल सरल पाठ ही दिया गया है। हमसे वेदभाष्य का जो भी प्रयास बन सका है, उसमें हमने मन्त्रार्थ में मन्त्र का यथासम्भव शाब्दिक अनुवाद देने का प्रयास किया है। वेदमन्त्र के किस पद के लिए भाषा में किस पद का प्रयोग किया गया है, यह भी पूर्णतः स्पष्ट है। मन्त्र का पद यथावत् देकर भाषा में अर्थ दिया गया है। संस्कृत में बहुधा वर्तमान काल की सहायक क्रियाएं अस्ति (है) आदि का लोप होता है, अर्थात् इनके विना वाक्य पूर्ण हो जाता है। भाषा में इनका प्रयोग आवश्यक होता है। हमने प्रयास किया है कि उनको भी कोष्ठक में दिया जाये जिससे यह स्पष्ट रहे कि यह शब्द वेदमन्त्र में नहीं है तथा वाक्य पूरा करने के लिए भाषा में लिखना पड़ा है। इसी प्रकार संयोजक शब्दों (अथवा, तथा आदि) भी वाक्य पूर्ण करने के लिए इसी रूप में दिये गये हैं। इस प्रकार हमने मन्त्रार्थ में तटस्थता, निष्पक्षता, वस्तुनिष्ठता तथा प्रामाणिकता का ध्यान रखने का पूर्ण प्रयास किया है। फिर भी यदि कोई भूल-चूक रह गयी होगी तो विद्वानों के मार्गदर्शन के अनुसार भविष्य में संशोधन-परिष्कार किया जा सकता है।

भावार्थ में मन्त्र के भाव तथा सन्देश को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। यह वेदार्थ नहीं है, भावार्थ है। इसमें हमारे विवेक की सीमा है तथा मतभेद के लिए पर्याप्त अवकाश भी है। इससे वेदमन्त्र तथा वेदार्थ की प्रामाणिकता प्रभावित नहीं होती है। प्रवचनकर्ता इसमें अपने विवेक के अनुसार परिवर्तन-परिष्कार के लिए स्वतन्त्र हैं।

पदार्थ में मुख्यतः धातुज शब्दों में धातु स्पष्ट करना आवश्यक माना गया है। अन्य पदों सर्वनाम, अव्यय, संख्या, उपसर्ग आदि के अर्थ को लेकर कोई मतभेद नहीं है। संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रियाएं धातुज हैं। उनमें धातु

स्पष्ट कर देने से वास्तविक शाब्दिक अर्थ स्पष्ट हो जाता है। कुछ धातुएं अनेकार्थी भी होती हैं। मन्त्र में जिस अर्थ की उपयोगिता हो, उसे ग्रहण कर सकते हैं। धातु के एक से अधिक अर्थों के अनुसार भी यदि मन्त्र का अर्थ हो सकता है तो श्लेष के रूप में स्वीकार्य है। इसमें विचारधारा को लेकर कोई दुराग्रह नहीं होना चाहिए। हमें वेद के विचारों को महत्व देना चाहिए, वेदमन्त्रों का अर्थ अपने विचार के अनुसार करने का दुराग्रह उचित नहीं है। वेदमन्त्रों का सरल स्वाभाविक शाब्दिक अर्थ सभी अध्येता सहज रूप से जानें तथा उसका चिन्तन-मनन कर स्वयम् अपने विवेक के अनुसार विचार विकसित करें। इसके पश्चात् भावार्थ तथा व्याख्या प्रत्येक व्यक्ति अपने विवेक के अनुसार स्वतन्त्र रूप से कर सकता है।

वेदार्थ करने में अनेक विद्वान् अपने विचार को वेद में दर्शाने का प्रयास करते हैं। इसके लिए अनेक शब्द ही नहीं वाक्यांश तथा कई वाक्य तथा वेदमन्त्र का अर्थ करते समय जोड़ देते हैं जिनके लिए कोई शब्द या पद वेदमन्त्र में होता ही नहीं है। इसे अध्याहार कहा जाता है। कहा जाता है कि अध्याहार मन्त्र का अर्थ स्पष्ट करने के लिए दिया जाता है। स्पष्ट है कि इस प्रकार विद्वान् मन्त्रार्थ के स्थान पर भावार्थ करते हैं। कई विद्वान् तो पदार्थ में भी अध्याहार के नाम ऐसी टिप्पणियां तक दे देते हैं जिनको उचित नहीं माना जा सकता है। हम उनकी आलोचना नहीं करना चाहते हैं। उन्होंने जो भी प्रयास किये, उससे ही वेद के अध्ययन को दिशा मिली तथा हम इस प्रकार निष्पक्ष प्रामाणिक वेदार्थ करने का प्रयास कर पा रहे हैं। भविष्य में विद्वान् अधिक उत्तम, निष्पक्ष तथा प्रामाणिक वेदार्थ प्रस्तुत करेंगे, ऐसी आशा - अपेक्षा करना स्वाभाविक है।

हमारा यह पवित्र कार्य प्रारम्भ ही न हो पाता यदि डॉ. उमेश पालीवाल जी ने यह पवित्र संकल्प न लिया होता। उन्होंने पालीवाल प्रकाशन के रूप में आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न कार्यालय उपलब्ध

कराया तथा समय-समय पर पर्याप्त आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया। यह सम्पूर्ण कार्य इसी से हो पा रहा है। यह कार्य जितना कुछ भी बन सकेगा, मेरे जीवन काल में अथवा उसके पश्चात् हमारे सहयोगी युवा देवमण्डल के माध्यम से, उसका श्रेय डॉ. उमेश पालीवाल जी को मिलना ही चाहिए। इस वेंदसेवा तथा शोधकार्य के प्रकाशन तथा प्रचार-प्रसार की क्षमता तथा सामर्थ्य व्यावहारिक रूप में डॉ. उमेश पालीवाल जी में ही है, अतः इसका दायित्व तथा अधिकार स्वाभाविक रूप से उनका है ही। हमारे सभी युवा सहयोगी उनकी छत्रछाया में दायित्व का निर्वाह करने में सक्षम हैं। हम तो उनको धन्यवाद दे पाने की स्थिति में भी नहीं हैं।

डॉ. कृष्णदत्त जी भी कठिन समय में महत्वपूर्ण सहयोग देकर हमारा मनोबल बनाये रखने का कार्य किया है, इसके लिए हम उनके अतीव आभारी हैं। हम अपने अन्य सभी उदारमना सहयोगियों के प्रति भी आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझते हैं।

वेद तथा संस्कृत भाषा को सरल एवम् जन साधारण के लिए बोधगम्य बनाने के हमारे इस पवित्र कार्य में युवा सहयोगी श्री गौरव श्रीवास्तव जी का भी अमूल्य योगदान है। जिस तरह उन्होंने निष्ठा, समर्पण तथा परिश्रम पूर्वक इस अमृत विद्या को सीखा-समझा तथा कार्य किया, उससे हमारी आशा - अपेक्षा बढ़ी है। धात्वादि कोश तथा सविता पाठ के सम्पादन में उन्होंने जिस योग्यता तथा निष्ठा का परिचय दिया है, उससे उनपर हमारा विश्वास बढ़ा है। हमें पूर्ण विश्वास है कि श्री गौरव जी इस कार्य को आगे बढ़ायेंगे तथा चारो वेदों का इसी रूप में निष्पक्ष एवम् प्रामाणिक भाष्य प्रस्तुत करेंगे। परम पिता परमात्मा इस कार्य के लिए उनको आवश्यक संसाधन, मनोबल तथा योग्यता-क्षमता प्रदान करे, यही प्रार्थना है।

पुस्तकों के प्रकाशन तथा प्रचार-प्रसार का दायित्व तथा अधिकार

इन सभी सहयोगियों को समान रूप से है, मात्र संशोधन-परिवर्तन में श्री गौरव जी की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण मानी जानी चाहिए। महत्वपूर्ण यह है कि कार्य आगे बढ़ते रहना चाहिए, यथासम्भव मिलकर कार्य करना उत्तम है, आवश्यक प्रतीत हो तो सभी सहयोगी स्वतन्त्र रूप से भी संगठन, प्रकाशन तथा प्रचार-प्रसार का कार्य कर सकते हैं। आशा है, आप सभी का सहयोग हमारे युवा देवमण्डल को इस वेदकार्य को पूर्णता प्रदान करने के लिए प्राप्त होता रहेगा।

स्वामी शरण

ॐ

सामवेद-संहिता

पूर्वार्चिकः (छन्द आर्चिकः)

अथ प्रथमो अध्यायः

आग्नेयम् पर्वम् काण्डम् वा

(1) सूक्त 1

1. अग्न आ याहि वीतये,
गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि ॥1॥

2. त्वम् अग्ने यज्ञानाम् होता,
विश्वेषाम् हितः।
देवेभिः मानुषे जने ॥2॥

3. अग्निम् दूतम् वृणीमहे,
होतारम् विश्ववेदसम्।
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥3॥

4. अग्निः वृत्राणि जङ्घनत्,
द्रविणस्युः विपन्यया।
समिद्धः शुक्र आहुतः ॥4॥

5. प्रेष्ठम् वो अतिथिम् स्तुषे,
मित्रम् इव प्रियम्।
अग्ने रथम् न वेद्यम्॥5॥

6. त्वम् नो अग्ने महोभिः,
पाहि विश्वस्या अरातेः।
उत द्विषो मर्त्यस्य॥6॥

7. एहि ऊ षु ब्रवाणि ते,
अग्न इत्थेतरा गिरः।
एभिः वर्धासि इन्दुभिः॥7॥

8. आ ते वत्सो मनो यमत्,
परमात् चित् सधस्थात्।
अग्ने त्वाम् कामये गिरा॥8॥

9. त्वाम् अग्ने पुष्करात् अधि,
अथर्वा निरमन्थत।
मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः॥9॥

10. अग्ने विवस्वत् आ भर,
अस्मभ्यम् ऊतये महे।
देवो हि असि नो दृशे॥10॥

(2) सूक्त 2

11. नमः ते अग्न ओजसे,
गृणन्ति देव कृष्टयः।
अमैः अमित्रम् अर्दय॥1॥

12. दूतम् वो विश्ववेदसम्,
हव्यवाहम् अमर्त्यम्।
यजिष्ठम् ऋञ्जसे गिरा॥2॥

13. उप त्वा जामयो गिरो,
देदेशतीः हविष्कृतः।
वायोः अनीके अस्थिरन्॥3॥

14. उप त्वा अग्ने दिवेदिवे,
दोषावस्तः धिया वयम्।
नमो भरन्त एमसि॥4॥

15. जराबोध तत् विविड्ढि,
विशेविशे यज्ञियाय।
स्तोमम् रुद्राय दृशीकम्॥5॥

16. प्रति त्यम् चारुम् अध्वरम्,
गोपीथाय प्र हूयसे।
मरुद्भिः अग्न आ गहि॥6॥

17. अश्वम् न त्वा वारवन्तम्,
वन्दध्या अग्निम् नमोभिः।
सम्राजन्तम् अध्वराणाम्॥7॥

18. और्वभृगुवत् शुचिम्,
अप्नवानवत् आ हुवे।
अग्निम् समुद्रवाससम्॥8॥

19. अग्निम् इन्धानो मनसा,
धियम् सचेत मर्त्यः।
अग्निम् इन्धे विवस्वभिः॥9॥

20. आत् इत् प्रत्नस्य रेतसो,
ज्योतिः पश्यन्ति वासरम्।
परो यत् इध्यते दिवि॥10॥

(3) सूक्त 3

21. अग्निम् वो वृधन्तम्,
अध्वराणाम् पुरूतमम्।
अच्छा नप्त्रे सहस्वते॥1॥

22. अग्निः तिग्मेन शोचिषा,
यंसद् विश्वम् नि अत्रिणम्।
अग्निः नो वंसते रयिम्॥2॥

23. अग्ने मृड महान् अस्यय,
आ देवयुम् जनम्।
इयेथ बर्हिः आ सदम्॥3॥

24. अग्ने रक्षा णो अंहसः,
प्रति स्म देव रीषतः।
तपिष्ठैः अजरो दह॥4॥

25. अग्ने युङ्क्ष्वा हि ये तव,
अश्वासो देव साधवः।
अरम् वहन्ति आशवः॥5॥

26. नि त्वा नक्ष्य विश्पते,
द्युमन्तम् धीमहे वयम्।
सुवीरम् अग्न आहुत॥6॥

27. अग्निः मूर्द्धा दिवः ककुत्,
पतिः पृथिव्या अयम्।
अपाम् रेतांसि जिन्वति॥7॥

28. इमम् ऊ षु त्वम् अस्माकम्,
सनिम् गायत्रम् नव्यांसम्।
अग्ने देवेषु प्र वोचः॥8॥

29. तम् त्वा गोपवनो गिरा,
जनिष्ठत् अग्ने अङ्गिरः।
स पावक श्रुधी हवम् ॥9॥

30. परि वाजपतिः कविः,
अग्निः हव्यानि अक्रमीत्।
दधत् रत्नानि दाशुषे ॥10॥

31. उत् उ त्यम् जातवेदसम्,
देवम् वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥11॥

32. कविम् अग्निम् उप स्तुहि,
सत्यधर्माणम् अध्वरे।
देवम् अमीवचातनम् ॥12॥

33. शम् नो देवीः अभिष्टये,
शम् नो भवन्तु पीतये।
शम् योः अभि स्त्रवन्तु नः ॥13॥

34. कस्य नूनम् परीणसि,
धियो जिन्वसि सत्पते।
गोषाता यस्य ते गिरः ॥14॥

(4) सूक्त 4

35. यज्ञा यज्ञा वो अग्नये,
गिरा गिरा च दक्षसे।
प्र प्र वयम् अमृतम्,
जातवेदसम् प्रियम्,
मित्रम् न शंसिषम् ॥1॥

36. पाहि नो अग्न एकया,
पाहि उत द्वितीयया।
पाहि गीर्भिः तिसृभिः,
ऊर्जाम् पते पाहि,
चतसृभिः वसो ॥2॥

37. बृहद्भिः अग्ने अर्चिभिः,
शुक्रेण देव शोचिषा।
भरद्वाजे समिधानो,
यविष्ठ्य रेवत्, पावक दीदिहि ॥3॥

38. त्वे अग्ने स्वाहुत,
प्रियासः सन्तु सूरयः।
यन्तारो ये मघवानो,
जनानाम् ऊर्वम्, दयन्त गोनाम् ॥4॥

39. अग्ने जरितः विश्पतिः,
तपानो देव रक्षसः।
अप्रोषिवान् गृहपते महान् असि,
दिवः पायुः दुरोणयुः ॥5॥

40. अग्ने विवस्वत् उषसः,
चित्रम् राधो अमर्त्य।
आ दाशुषे जातवेदो वहा,
त्वम् अद्य आ देवान् उषर्बुधः ॥6॥

41. त्वम् नः चित्र ऊत्या वसो,
राधांसि चोदय।
अस्य रायः त्वम् अग्ने रथीः असि,
विदा गाधम् तुचे तु नः ॥7॥

42. त्वम् इत् सप्रथा असि,
अग्ने त्रातः ऋतः कविः।
त्वाम् विप्रासः समिधान,
दीदिव आ विवासन्ति वेधसः ॥8॥

43. आ नो अग्ने वयोवृधम्,
रयिम् पावक शंस्यम्।
रास्वा च न उपमाते,
पुरुस्पृहम् सुनीती सुयशस्तरम् ॥9॥

44. ये विश्वा दयते वसु,
होता मन्द्रो जनानाम्।
मधोः न पात्रा प्रथमानि,
अस्मै प्र स्तोमा यन्तु अग्नये ॥10॥

(5) सूक्त 5

45. एना वो अग्निम् नमसा,
ऊर्जो नपातम् आ हुवे।
प्रियम् चेतिष्ठम् अरतिम्,
स्वध्वरम् विश्वस्य दूतम् अमृतम् ॥1॥

46. शेषे वनेषु मातृषु,
सम् त्वा मर्त्तास इन्धते।
अतन्द्रो हव्यम् वहसि,
हविष्कृत आत् इत् देवेषु राजसि ॥2॥

47. अदर्शि गातुवित्तमो,
यस्मिन् व्रतानि आ दधुः।
उपो षु जातम् आर्यस्य वर्धनम्,
अग्निम् नक्षन्तु नो गिरः ॥3॥

48. अग्निः उक्थे पुरोहितो,
ग्रावाणो बर्हिः अध्वरे।
ऋचा यामि मरुतो ब्रह्मणस्पते,
देवा अवो वरेण्यम् ॥4॥

49. अग्निम् ईडिष्व अवसे,
गाथाभिः शीरशोचिषम्।
अग्निम् राये पुरुमीढ श्रुतम्,
नरो अग्निः सुदीतये छर्दिः ॥5॥

50. श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिः,
देवैः अग्ने सयावभिः।
आ सीदतु बर्हिषि,
मित्रो अर्यमा प्रातर्यावभिः अध्वरे ॥6॥

51. प्र दैवोदासो अग्निः,
देव इन्द्रो न मज्मना।
अनु मातरम् पृथिवीम्,
वि वावृते तस्थौ नाकस्य शर्मणि ॥7॥

52. अध ज्मो अध वा दिवो,
बृहतो रोचनात् अधि।
अया वर्धस्व तन्वा गिरा मम,
आ जाता सुक्रतो पृण ॥8॥

53. कायमानो वना त्वम्,
यत् मातृः अजगन् अपः।
न तत् ते अग्ने प्र मृषे निवर्त्तनम्,
यत् दूरे सन् इह आभुवः ॥9॥

54. नि त्वाम् अग्ने मनुः दधे,
ज्योतिः जनाय शश्वते।
दीदेथ कण्व ऋतजात,
उक्षितो यम् नमस्यन्ति कृष्टयः ॥10॥

(6) सूक्त 6

55. देवो वो द्रविणोदाः,
पूर्णाम् विवष्टु आसिचम्।
उत् वा सिञ्चध्वम्,
उप वा पृणध्वम्,
आत् इत् वो देव ओहते ॥1॥

56. प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः,
प्र देवी एतु सूनृता।
अच्छा वीरम् नर्यम्,
पंक्तिराधसम् देवा,
यज्ञम् नयन्तु नः ॥2॥

57. ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये,
तिष्ठा देवो न सविता।
ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता,
यत् अञ्जिभिः वाघद्भिः
वि ह्वायामहे ॥3॥

58. प्र यो राये निनीषति,
मर्त्तो यः ते वसो दाशत्।
स वीरम् धत्ते अग्न,
उक्थशंसिनम् त्मना सहस्त्रपोषिणम्॥4॥

59. प्र वो यह्वम् पुरूणाम्,
विशाम् देवयतीनाम्।
अग्निम् सूक्तेभिः वचोभिः वृणीमहे,
यम् सम् इत् अन्य इन्धते॥5॥

60. अयम् अग्निः सुवीर्यस्य,
ईशे हि सौभगस्य।
राय ईशे स्वपत्यस्य,
गोमत ईशे वृत्रहथानाम्॥6॥

61. त्वम् अग्ने गृहपतिः,
त्वम् होता नो अध्वरे।
त्वम् पोता विश्ववार प्रचेता,
य़क्षि यासि च वार्यम्॥7॥

62. सखायः त्वा ववृमहे,
देवम् मर्त्तास ऊतये।
अपान्नपातम् सुभगम्,
सुदंससम् सुप्रतूर्त्तिम् अनेहसम्॥8॥

(7) सूक्त 7

63. आ जुहोता हविषा मर्जयध्वम्,
नि होतारम् गृहपतिम् दधिध्वम्।
इडः पदे नमसा रातहव्यम्,
सपर्यता यजतम् परस्त्यानाम्॥1॥

64. चित्र इत् शिशोः तरुणस्य वक्षयो,
न यो मातरौ अन्वेति धातवे।
अनूधा यत् अजीजनत् अधा चित् आ
ववक्षत् सद्यो महि दूत्यम् अचरन्॥2॥

65. इदम् त एकम् पर ऊ त एकम्,
तृतीयेन ज्योतिषा सम् विशस्व।
संवेशनः तन्वे चारुः एधि,
प्रियो देवानाम् परमे जनित्रे॥3॥

66. इमम् स्तोमम् अर्हते जातवेदसे,
रथम् इव सम् महेमा मनीषया।
भद्रा हि नः प्रमतिः अस्य संसदि,
अग्ने सख्ये मा रिषाम वयम् तव॥4॥

67. मूर्धानम् दिवो अरतिम् पृथिव्या,
वैश्वानरम् ऋत आ जातम् अग्निम्।
कविम् सम्राजम् अतिथिम् जनानाम्,
आसन् नः पात्रम् जनयन्त देवाः॥5॥

68. वि त्वत् आपो न पर्वतस्य पृष्ठात्,
उक्थेभिः अग्ने जनयन्त देवाः।
तम् त्वा गिरः सुष्टुतयो वाजयन्ति,
आजिम् न गिर्ववाहो जिग्युः अश्वाः ॥6॥

69. आ वो राजानम् अध्वरस्य रुद्रम्
होतारम् सत्ययजम् रोदस्योः।
अग्निम् पुरा तनयित्नोः अचित्तात्,
हिरण्यरूपम् अवसे कृणुध्वम् ॥7॥

70. इन्धे राजा सम् अर्यो नमोभिः,
यस्य प्रतीकम् आहुतम् घृतेन।
नरो हव्येभिः ईडते सबाध आ,
अग्निः अग्रम् उषसाम् अशोचि ॥8॥

71. प्र केतुना बृहता याति अग्निः,
आ रोदसी वृषभो रोरवीति।
दिवः चित् अन्तात् उपमाम् उदानट्,
अपाम् उपस्थे महिषो ववर्ध ॥9॥

72. अग्निम् नरो दीधितिभिः अरण्योः,
हस्तच्युतम् जनयत प्रशस्तम्।
दूरेदृशम् गृहपतिम् अथर्व्युम् ॥10॥

(8) सूक्त 8

73. अबोधि अग्निः समिधा जनानाम्,
प्रति धेनुम् इव आयतीम् उषासम्।
यह्वा इव प्र वयाम् उज्जिहानाः,
प्र भानवः सस्रते नाकम् अच्छ ॥1॥

74. प्र भूः जयन्तम् महाम् विपोधाम्,
मूरैः अमूरम् पुराम् दर्माणम्।
नयन्तम् गीर्भिः वना धियम् धा,
हरिश्मश्रुम् न वर्मणा धनर्चिम् ॥2॥

75. शुक्रम् ते अन्यद् यजतम् ते अन्यद्,
विषुरूपे अहनी द्यौः इव असि।
विश्वा हि माया अवसि स्वधावन्,
भद्रा ते पूषन् इह रातिः अस्तु ॥3॥

76. इडाम् अग्ने पुरुदंसम् सनिम् गोः,
शश्वत्तम् हवमानाय साध।
स्यात् नः सूनुः तनयो विजावा,
अग्ने सा ते सुमतिः भूतु अस्मे ॥4॥

77. प्र होता जातो महान् नभोवित्,
नृषद्मा सीदत् अपाम् विवर्ते।
दधत् यो धायि सुते वयांसि,
यन्ता वसूनि विधते तनूपाः ॥5॥

78. प्र सम्राजम् असुरस्य प्रशस्तम्,
पुंसः कृष्टीनाम् अनुमाद्यस्य।
इन्द्रस्य इव प्र तवसः कृतानि,
वन्दद्वारा वन्दमाना विवष्टु ॥6॥

79. अरण्योः निहितो जातवेदा,
गर्भ इव इत् सुभृतो गर्भिणीभिः।
दिवेदिवे ईड्यो जागृवद्भिः,
हविष्मद्भिः मनुष्येभिः अग्निः ॥7॥

80. सनात् अग्ने मृणासि यातुधानान्,
न त्वा रक्षांसि पृतनासु जिग्युः।
अनु दह सहमूरान् कयादो,
मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः ॥8॥

(9) सूक्त 9

81. अग्न ओजिष्ठम् आ भर,
द्युम्नम् अस्मभ्यम् अध्रिगो।
प्र नो राये पनीयसे,
रत्सि वाजाय पन्थाम् ॥1॥

82. यदि वीरो अनु स्यात्,
अग्निम् इन्धीत मर्त्यः।
आजुह्वत् हव्यम् आनुषक्,
शर्म भक्षीत दैव्यम् ॥2॥

83. त्वेषः ते धूम ऋण्वति,
दिवि सन् शुक्रः आततः।
सूरो न हि द्युता त्वम्,
कृपा पावक रोचसे ॥3॥

84. त्वम् हि क्षैतवत् यशो,
अग्ने मित्रो न पत्यसे।
त्वम् विचर्षणे श्रवो,
वसो पुष्टिम् न पुष्यसि ॥4॥

85. प्रातः अग्निः पुरुप्रियो,
विशः स्तवेत अतिथिः।
विश्वे यस्मिन् अमर्त्ये,
हव्यम् मर्त्तास इन्धते ॥5॥

86. यत् वाहिष्ठम् तत् अग्नये,
बृहत् अर्च विभावसो।
महिषीव त्वत् रयिः,
त्वत् वाजा उदीरते ॥6॥

87. विशोविशो वो अतिथिम्,
वाजयन्तः पुरुप्रियम्।
अग्निम् वो दुर्यम् वचः,
स्तुषे शूषस्य मन्मभिः ॥7॥

88. बृहद् वयो हि भानवे,
अर्च आ देवाय अग्नये।
यम् मित्रम् न प्रशस्तये,
मर्तासो दधिरे पुरः ॥8॥

89. अगन्म वृत्रहन्तमम्,
ज्येष्ठम् अग्निम् आनवम्।
यः स्म श्रुतर्वन् आर्क्षे,
बृहत् अनीक इध्यते॥9॥

90. जातः परेण धर्मणा,
यत् सवृद्भिः सह अभुवः।
पिता यत् कश्यपस्य अग्निः,
श्रद्धा माता मनुः कविः॥10॥

(10) सूक्त 10

91. सोमम् राजानम् वरुणम्,
अग्निम् अनु आ रभामहे।
आदित्यम् विष्णुम् सूर्यम्,
ब्रह्माणम् च बृहस्पतिम्॥1॥

92. इत एत उदारुहन्,
दिवः पृष्ठानि आ रुहन्।
प्र भूः जयो यथा पथो,
द्याम् अङ्गिरसो ययुः॥2॥

93. राये अग्ने महे त्वा,
दानाय समिधीमहि।
ईडिष्वा हि महे वृषन्,
द्यावा होत्राय पृथिवी॥3॥

94. दधन्वे वा यत् ईम् अनु,
वोचद् ब्रह्म इति वेः उ तत्।
परि विश्वानि काव्या नेमिः,
चक्रम् इव अभुवत्॥4॥

95. प्रति अग्ने हरसा हरः,
शृणाहि विश्वतः परि।
यातुधानस्य रक्षसो,
बलम् नि उब्ज वीर्यम्॥5॥

96. त्वम् अग्ने वसून् इह,
रुद्रान् आदित्यान् उत।
यज आ स्वध्वरम् जनम्,
मनुजातम् घृतप्रुषम्॥6॥

(11) सूक्त 11

97. पुरु त्वा दाशिवान् वोचे,
अरिः अग्ने तव स्विदा।
तोदस्येव शरण आ महस्य॥1॥

98. प्र होत्रे पूर्व्यम् वचो,
अग्नये भरता बृहत्।
विपाम् ज्योतींषि बिभ्रते न वेधसे ॥2॥

99. अग्ने वाजस्य गोमत,
ईशानः सहसो यहो।
अस्मे देहि जातवेदो महि श्रवः ॥3॥

100. अग्ने यजिष्ठो अध्वरे,
देवान् देवयते यज।
होता मन्द्रो वि राजसि अति स्रिधः ॥4॥

101. जज्ञाना सप्त मातृभिः,
मेधाम् आशासत श्रिये।
अयम् ध्रुवो रयीणाम् चिकेतत् आ ॥5॥

102. उत स्या नो दिवा मतिः,
अदितिः ऊत्या अगमत्।
सा शन्ताता मयः करत् अप स्रिधः ॥6॥

103. ईडिष्वा हि प्रतीव्याम्,
यजस्व जातवेदसम्।
चरिष्णुधूमम् अगृभीत शोचिषम् ॥7॥

104. न तस्य मायया च न,
रिपुः ईशीत मर्त्यः।
यो अग्नये ददाश हव्यदातये ॥8॥

105. अप त्यम् वृजिनम् रिपुम्,
स्तेनम् अग्ने दुराध्यम्।
दविष्ठम् अस्य सत्पते कृधी सुगम् ॥9॥

106. श्रुष्टी अग्ने नवस्य मे,
स्तोमस्य वीर विश्पते।
नि मायिनः तपसा रक्षसो दह ॥10॥

(12) सूक्त 12

107. प्र मंहिष्ठाय गायत,
ऋताव्ने बृहते शुक्रशोचिषे।
उपस्तुतासो अग्नये ॥1॥

108. प्र सो अग्ने तव ऊतिभिः,
सुवीराभिः तरति वाजकर्मभिः।
यस्य त्वम् सख्यम् आविथ ॥2॥

109. तम् गूर्धया स्वः नरम् देवासो,
देवम् अरतिम् दधन्विरे।
देवत्रा हव्यम् ऊहिषे ॥3॥

110. मा नो हृणीथा अतिथिम्,
वसुः अग्निः पुरुप्रशस्त एषः।
यः सुहोता स्वध्वरः ॥4॥

111. भद्रो नो अग्निः आहुतो,
भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः।
भद्रा उत प्रशस्तयः ॥5॥

112. यजिष्ठम् त्वा ववृमहे,
देवम् देवत्रा होतारम् अमर्त्यम्।
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥6॥

113. तत् अग्ने द्युम्नम् आ भर,
यत् सासाह आ सदने,
कञ्चित् अत्रिणम्।
मन्युम् जनस्य दूढ्यम् ॥7॥

114. यद् वा उ विश्पतिः शितः,
सुप्रीतो मनुषो विशे।
विश्व इत् अग्निः प्रति,
रक्षांसि सेधति ॥8॥

इति प्रथमो अध्यायः

ॐ

अथ द्वितीयो अध्यायः

एन्द्रम् पर्वम् काण्डम् वा

(13) सूक्त 1

115. तत् वो गाय सुते सचा,
पुरुहूताय सत्वने।
शम् यत् गवे न शाकिने ॥1॥

116. यः ते नूनम् शतक्रतो,
इन्द्र द्युम्नितमो मदः।
तेन नूनम् मदे मदेः ॥2॥

117. गाव उप वद अवटे,
मही यज्ञस्य रप्सुदा।
उभा कर्णा हिरण्यया ॥3॥

118. अरम् अश्वाय गायत,
श्रुतकक्ष अरम् गवे।
अरम् इन्द्रस्य धाम्ने ॥4॥

119. तम् इन्द्रम् वाजयामसि,
महे वृत्राय हन्तवे।
स वृषा वृषभो भुवत् ॥5॥

120. त्वम् इन्द्र बलात् अधि,
सहसो जात ओजसः।
त्वम् सन् वृषन् वृषा इत असि॥6॥

121. यज्ञ इन्द्रम् अवर्धयद्,
यत् भूमिम् व्यवर्तयत्।
चक्राण ओपशम् दिवि॥7॥

122. यत् इन्द्र अहम् यथा त्वम्,
ईशीय वस्व एक इत्।
स्तोता मे गोसखा स्यात्॥8॥

123. पन्यम् पन्यम् इत् सोतार,
आ धावत मद्याय।
सोमम् वीराय शूराय॥9॥

124. इदम् वसो सुतम् अन्धः,
पिबा सुपूर्णम् उदरम्।
अनाभयिन् ररिम आ ते॥10॥

(14) सूक्त 2

125. उत् घ इत् अभि श्रुतामघम्,
वृषभम् नर्यापसम्।
अस्तारम् एषि सूर्य॥1॥

126. यत् अद्य कच्च वृत्रहन्,
उदगा अभि सूर्य।
सर्वम् तत् इन्द्र ते वशे॥2॥

127. य आनयत् परावतः,
सुनीती तुर्वशम् यदुम्।
इन्द्रः स नो युवा सखा॥3॥

128. मा न इन्द्र अभि आ दिशः,
सूरो अक्तुषु आ यमत्।
त्वा युजा वनेम तत्॥4॥

129. आ इन्द्र सानसिम् रयिम्,
सजित्वानम् सदासहम्।
वर्षिष्ठम् ऊतये भर॥5॥

130. इन्द्रम् वयम् महाधन,
इन्द्रम् अर्भे हवामहे।
युजम् वृत्रेषु वज्रिणम्॥6॥

131. अपिबत् कद्रुवः सुतम्,
इन्द्रः सहस्रबाह्वे।
तत्र आददिष्ट पौंस्यम्॥7॥

132. वयम् इन्द्र त्वायवो,
अभि प्र नोनुमो वृषन्।
विद्धी त्वा अस्य नो वसो ॥8॥

133. आ घा ये अग्निम् इन्धते,
स्तृणन्ति बर्हिः आनुषक्।
येषाम् इन्द्रो युवा सखा ॥9॥

134. भिन्धि विश्वा अप द्विषः,
परि बाधो जही मृधः।
वसु स्पार्हम् तत् आभर ॥10॥

(15) सूक्त 3

135. इह इव शृण्व एषाम्,
कशा हस्तेषु यत् वदान्।
नि यामम् चित्रम् ऋञ्जते ॥1॥

136. इम उ त्वा वि चक्षते,
सखाय इन्द्र सोमिनः।
पुष्टावन्तो यथा पशुम् ॥2॥

137. सम् अस्य मन्यवे विशो,
विश्वा नमन्त कृष्टयः।
समुद्राय इव सिन्धवः ॥3॥

138. देवानाम् इत अवो महत्,
तत् आ वृणीमहे वयम्।
वृष्णाम् अस्मभ्यम् ऊतये ॥4॥

139. सोमानाम् स्वरणम्,
कृणुहि ब्रह्मणस्पते।
कक्षीवन्तम् य औशिजः ॥5॥

140. बोधन्मना इत् अस्तु,
नो वृत्रहा भूर्यासुतिः।
शृणोतु शक्र आशिषम् ॥6॥

141. अद्य आ नो देव सवितः,
प्रजावत्सावीः सौभगम्।
परा दुःष्वप्न्यम् सुव ॥7॥

142. क्व स्य वृषभो युवा,
तुविग्रीवो अनानतः।
ब्रह्मा कः तम् सपर्यति ॥8॥

143. उपह्वरे गिरीणाम्,
सङ्गमे च नदीनाम्।
धिया विप्रो अजायत ॥9॥

144. प्र सम्राजम् चर्षणीनाम्,
इन्द्रम् स्तोता नव्यम् गीर्भिः।
नरम् नृषाहम् मंहिष्ठम्॥10॥

(16) सूक्त 4

145. अपात् उ शिप्री अन्धसः,
सुदक्षस्य प्रहोषिणः।
इन्दोः इन्द्रो यवाशिरः॥1॥

146. इमा उ त्वा पुरूवसो,
अभि प्र नोनुवुः गिरः।
गावो वत्सम् न धेनवः॥2॥

147. अत्रा ह गोः अमन्वत,
नाम त्वष्टुः अपीच्यम्।
इत्था चन्द्रमसो गृहे॥3॥

148. यत् इन्द्रो अनयत् रितो,
महीः अपो वृषन्तमः।
तत्र पूषा भुवत् सचा॥4॥

149. गौः धयति मरुताम्,
श्रवस्युः माता मघोनाम्।
युक्ता वह्वी रथानाम्॥5॥

150. उप नो हरिभिः सुतम्,
याहि मदानाम् पते।
उप नो हरिभिः सुतम्॥6॥

151. इष्टा होत्रा असृक्षत,
इन्द्रम् वृधन्तो अध्वरे।
अच्छ अवभृथम् ओजसा॥7॥

152. अहम् इत् हि पितुः परि,
मेधाम् ऋतस्य जग्रह।
अहम् सूर्य इव अजनि॥8॥

153. रेवतीः नः सधमाद,
इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः।
क्षुमन्तो याभिः मदेम॥9॥

154. सोमः पूषा च चेततुः,
विश्वासाम् सुक्षितीनाम्।
देवत्रा रथ्योः हिता॥10॥

(17) सूक्त 5

155. पान्तमा वो अन्धस,
इन्द्रम् अभि प्र गायत।
विश्वासाहम् शतक्रतुम्,
मंहिष्ठम् चर्षणीनाम्॥1॥

156. प्र व इन्द्राय मादनम्,
हर्यश्वाय गायत।
सखायः सोमपाव्ने ॥2॥

157. वयम् उ त्वा तदिदर्था,
इन्द्र त्वायन्तः सखायः।
कण्वा उक्थेभिः जरन्ते ॥3॥

158. इन्द्राय मद्वने सुतम्,
परिष्टोभन्तु नो गिरः।
अर्कम् अर्चन्तु कारवः ॥4॥

159. अयम् त इन्द्र सोमो,
निपूतो अधि बर्हिषि।
एहि इम् अस्य द्रव आ पिब ॥5॥

160. सुरूपकृत्नुम् ऊतये,
सुदुघाम् इव गोदुहे।
जुहूमसि द्यवि द्यवि ॥6॥

161. अभि त्वा वृषभा सुते,
सुतम् सृजामि पीतये।
तृम्पा व्यश्नुही मदम् ॥7॥

162. य इन्द्र चमसेषु आ,
सोमः चमूषु ते सुतः।
पिब इत् अस्य त्वम् ईशिषे ॥8॥

163. योगे योगे तवस्तरम्,
वाजे वाजे हवामहे।
सखाय इन्द्रम् ऊतये ॥9॥

164. आ तु आ इत आ निषीदत,
इन्द्रम् अभि प्र गायत।
सखायः स्तोमवाहसः ॥10॥

(18) सूक्त 6

165. इदम् हि अनु ओजसा,
सुतम् राधानाम् पते।
पिबा तु अस्य गिर्वणः ॥1॥

166. महान् इन्द्रः पुरः च नो,
महित्वम् अस्तु वज्रिणे।
द्यौः न प्रथिना शवः ॥2॥

167. आ तू न इन्द्र क्षुमन्तम्,
चित्रम् ग्राभम् संगृभाय।
महाहस्ती दक्षिणेन ॥3॥

168. अभि प्र गोपतिम् गिरा,
इन्द्रम् अर्च यथा विदे।
सूनुम् सत्यस्य सत्पतिम्॥4॥

169. कया नः चित्र आ भुवत्,
ऊती सदावृधः सखा।
कया शचिष्ठया वृता॥5॥

170. त्यम् उ वः सत्रासाहम्,
विश्वासु गीर्षु आयतम्।
आच्यावयसि ऊतये॥6॥

171. सदसस्पतिम् अद्भुतम्,
प्रियम् इन्द्रस्य काम्यम्।
सनिम् मेधाम् अयासिषम्॥7॥

172. ये ते पन्था अधो दिवो,
येभिः वि अश्वम् ऐरयः।
उत श्रोषन्तु नो भुवः॥8॥

173. भद्रम् भद्रम् न आ भर,
इषम् ऊर्जम् शतक्रतो।
यत् इन्द्र मृडयासि नः॥9॥

174. अस्ति सोमो अयम् सुतः,
पिबन्ति अस्य मरुतः।
उत स्वराजो अश्विना॥10॥

(19) सूक्त 7

175. ईङ्खयन्तीः अपस्युव,
इन्द्रम् जातम् उपासते।
वन्वानासः सुवीर्यम्॥1॥

176. नकि देवा इनीमसि,
न कि आ योपयामसि।
मन्त्रश्रुत्यम् चरामसि॥2॥

177. दोषो आगाद् बृहद्गाय,
द्युमद्गामम् आथर्वण।
स्तुहि देवम् सवितारम्॥3॥

178. एषो उषा अपूर्व्या,
व्युच्छति प्रिया दिवः।
स्तुषे वाम् अश्विना बृहत्॥4॥

179. इन्द्रो दधीचो अस्थभिः,
वृत्राणि अप्रतिष्कुतः।
जघान नवतीः नव॥5॥

180. इन्द्र एहि मत्सि अन्धसो,
विश्वेभिः सोमपर्वभिः।
महान् अभिष्टिः ओजसा ॥6॥

181. आ तू न इन्द्र वृत्रहन्,
अस्माकम् अर्धम् आ गहि।
महान् महीभिः ऊतिभिः ॥7॥

182. ओजः तत् अस्य तित्विष,
उभे यत् समवर्तयत्।
इन्द्रः चर्मेव रोदसी ॥8॥

183. अयम् उ ते समतसि,
कपोत इव गर्भधिम्।
वचः तत् चित् न ओहसे ॥9॥

184. वात आ वातु भेषजम्,
शम्भु मयोभु नो हृदे।
प्र न आयूंषि तारिषत् ॥10॥

(20) सूक्त 8

185. यम् रक्षन्ति प्रचेतसो,
वरुणो मित्रो अर्यमा।
न किः स दभ्यते जनः ॥1॥

186. गव्या उ षु णो यथा,
पुरा अश्वया उत रथया।
वरिवस्य आ महोनाम् ॥2॥

187. इमाः त इन्द्र पृश्नयो,
घृतम् दुहत आशिरम्।
एनाम् ऋतस्य पिप्युषीः ॥3॥

188. अया धिया च गव्यया,
पुरुणामन् पुरुष्टुत।
यत् सोमे सोम आभुवः ॥4॥

189. पावका नः सरस्वती,
वाजेभिः वाजिनीवती।
यज्ञम् वष्टु धियावसुः ॥5॥

190. क इमम् नाहुषीषु,
आ इन्द्रम् सोमस्य तर्पतयात्।
स नो वसूनि आ भरात् ॥6॥

191. आ याहि सुषुमा हि त,
इन्द्र सोमम् पिबा इमम्।
आ इदम् बर्हिः सदो मम ॥7॥

192. महि त्रीणाम् अवः अस्तु,
द्युक्षम् मित्रस्य अर्यम्णः।
दुराधर्षम् वरुणस्य॥8॥

193. त्वावतः पुरूवसो,
वयम् इन्द्र प्रणेतः।
स्मसि स्थातः हरीणाम्॥9॥

(21) सूक्त 9

194. उ त्वा मदन्तु सोमाः,
कृणुष्व राधो अद्रिवः।
अव ब्रह्मद्विषो जहि॥1॥

195. गिर्वणः पाहि नः सुतम्,
मधोः धाराभिः अज्यसे।
इन्द्र त्वादातम् इत् यशः॥2।

196. सदा व इन्द्रः चर्कृषत्,
आ उप उ नु स सपर्यन्।
न देवो वृतः शूर इन्द्रः॥3॥

197. आ त्वा विशन्तु इन्दवः,
समुद्रम् इव सिन्धवः।
न त्वाम् इन्द्र अति रिच्यते॥4॥

198. इन्द्रम् इत् गाथिनो बृहत्,
इन्द्रम् अर्केभिः अर्किणः।
इन्द्रम् वाणीः अनूषत॥5॥

199. इन्द्र इषे ददातु न,
ऋभुक्षणम् ऋभुम् रयिम्।
वाजी ददातु वाजिनम्॥6॥

200. इन्द्रो अङ्ग महत् भयम्,
अभीषत् अपचुच्यवत्।
स हि स्थिरो विचर्षणिः॥7॥

201. इमा उ त्वा सुते सुते,
नक्षन्ते गिर्वणो गिरः।
गावो वत्सम् न धेनवः॥8॥

202. इन्द्रा नु पूषणा वयम्,
सख्याय स्वस्तये।
हुवेम वाजसातये॥9॥

203. न कि इन्द्र त्वत् उत्तरम्,
न ज्यायो अस्ति वृत्रहन्।
न क्येवम् यथा त्वम्॥10॥

(22) सूक्त 10

204. तरणिम् वो जनानाम्,
त्रदम् वाजस्य गोमतः।
समानम् उ प्र शंसिषम्॥1॥

205. असृग्रम् इन्द्र ते गिरः,
प्रति त्वाम् उदहासत।
सजोषा वृषभम् पतिम्॥2॥

206. सुनीथो घा स मर्त्यो,
यम् मरुतो यम् अर्यमा।
मित्राः पान्ति अद्रुहः॥3॥

207. यत् वीडौ इन्द्र यत् स्थिरे,
यत् पर्शाने पराभृतम्।
वसु स्पार्हम् तदा भर॥4॥

208. श्रुतम् वो वृत्रहन्तमम्,
प्र शर्धम् चर्षणीनाम्।
आशिषे राधसे महे॥5॥

209. अरम् त इन्द्र श्रवसे,
गमेम शूर त्वावतः।
अरम् शक्र परेमणि॥6॥

210. धानावन्तम् करम्भिणम्,
अपूपवन्तम् उक्थिनम्।
इन्द्र प्रातः जुषस्व नः॥7॥

211. अपाम् फेनेन नमुचेः,
शिरः इन्द्र उदवर्त्तयः।
विश्वा यत् अजय स्पृधः॥8॥

212. इमे त इन्द्र सोमाः,
सुतासो ये च सोत्वाः।
तेषाम् मत्स्व प्रभूवसो॥9॥

213. तुभ्यम् सुतासः सोमाः,
स्तीर्णम् बर्हिः विभावसो।
स्तोतृभ्य इन्द्र मृडय॥10॥

(23) सूक्त 11

214. आ व इन्द्रम् कृविम् यथा,
वाजयन्तः शतक्रतुम्।
मंहिष्ठम् सिञ्च इन्दुभिः॥1॥

215. अतः चित् इन्द्र न उपा,
याहि शतवाजया।
इषा सहस्त्रवाजया॥2॥

216. आ बुन्दम् वृत्रहा ददे,
जातः पृच्छात् वि मातरम्।
क उग्राः के ह शृण्विरे ॥3॥

217. बृबदुक्थम् हवामहे,
सृप्रकरस्नम् ऊतये।
साधः कृण्वन्तम् अवसे ॥4॥

218. ऋजुनीती नो वरुणो,
मित्रो नयति विद्वान्।
अर्यमा देवैः सजोषाः ॥5॥

219. दूरात् इह इव यत् सतो,
अरुणप्सुः अशिश्वितत्।
वि भानुम् विश्वथा तनत् ॥6॥

220. आ नो मित्रावरुणा,
घृतैः गव्यूतिम् उक्षतम्।
मध्वा रजांसि सुक्रतू ॥7॥

221. उत् उ त्ये सूनवो गिरः,
काष्ठा यज्ञेषु अत्नत।
वाश्राः अभिज्ञु यातवे ॥8॥

222. इदम् विष्णुः वि चक्रमे,
त्रेधा नि दधे पदम्।
समूढम् अस्य पांसुले ॥9॥

(24) सूक्त 12

223. अतीहि मन्युषाविणम्,
सुषुवांसम् उपेरय।
अस्य रातौ सुतम् पिब ॥1॥

224. कत् उ प्रचेतसे महे,
वचो देवाय शस्यते।
तत् हि इत् अस्य वर्धनम् ॥2॥

225. उक्थम् च न शस्यमानम्,
नागोः अयिः आचिकेत।
न गायत्रम् गीयमानम् ॥3॥

226. इन्द्र उक्थेभिः मन्दिष्ठो,
वाजानाम् च वाजपतिः।
हरिवान् सुतानाम् सखा ॥4॥

227. आ याहि उप नः सुतम्,
वाजेभिः मा हृणीयथाः।
महान् इव युवजानिः ॥5॥

228. कदा वसो स्तोत्रम् हर्यत,
आ अव श्मशा रुधद्वाः।
दीर्घम् सुतम् वाताप्याय ॥6॥

229. ब्राह्मणात् इन्द्र राधसः,
पिबा सोमम् ऋतून् अनु।
तव इदम् सख्यम् अस्तृतम् ॥7॥

230. वयम् घा ते अपि स्मसि,
स्तोतार इन्द्र गिर्वणः।
त्वम् नो जिन्व सोमपाः ॥8॥

231. आ इन्द्र पृक्षु कासु चित्,
नृम्णम् तनूषु धेहि नः।
सत्राजित् उग्र पौंस्यम् ॥9॥

232. एव आ हि असि वीरयुः,
एव आ शूर उत स्थिरः।
एव आ ते राध्यम् मनः ॥10॥

इति द्वितीयो अध्यायः

ॐ

अथ तृतीयो अध्यायः

एन्द्रम् पर्वम् काण्डम् वा

(25) सूक्त 1

233. अभि त्वा शूर नोनुमो,
अदुग्धा इव धेनवः।
ईशानम् अस्य जगतः,
स्वर्दृशम् ईशानम् इन्द्र तस्थुषः ॥1॥

234. त्वाम् इत हि हवामहे,
सातौ वाजस्य कारवः।
त्वाम् वृत्रेषु इन्द्र सत्पतिम्,
नरः त्वाम् काष्ठासु अर्वतः ॥2॥

235. अभि प्र वः सुराधसम्,
इन्द्रम् अर्च यथा विदे।
यो जरितृभ्यो मघवा,
पुरूवसुः सहस्त्रेण इव शिक्षति ॥3॥

236. तम् वो दस्मम् ऋतीषहम्,
वसोः मन्दानम् अन्धसः।
अभि वत्सम् न स्वसरेषु,
धेनव इन्द्रम् गीर्भिः नवामहे ॥4॥

237. तरोभिः वो विदद्वसुम्,
इन्द्रम् सबाध ऊतये।
बृहद् गायन्तः सुतसोमे,
अध्वरे हुवे भरम् न कारिणम् ॥5॥

238. तरणिः इत् सिषासति,
वाजम् पुरन्ध्या युजा।
आ व इन्द्रम् पुरुहूतम्,
नमे गिरा नेमिम् तष्टा इव सुद्रुवम् ॥6॥

239. पिबा सुतस्य रसिनो,
मत्स्व आ न इन्द्र गोमतः।
आपिः नो बोधि सधमाद्ये,
वृधे अस्मान् अवन्तु ते धियः ॥7॥

240. त्वम् हि एहि चेरवे,
विदा भगम् वसुत्तये।
उद्वावृषस्व मघवन् गविष्टय,
उत् इन्द्र अश्वम् इष्टये ॥8॥

241. न हि वः चरमम् च न,
वसिष्ठः परि मंसते।
अस्माकम् अद्य मरुतः सुते सचा,
विश्वे पिबन्तु कामिनः ॥9॥

242. मा चित् अन्यत् वि शंसत,
सखायो मा रिषण्यत।
इन्द्रम् इत् स्तोता वृषणम्,
सचा सुते मुहुः उक्था च शंसत ॥10॥

(26) सूक्त 2

243. न किष्टम् कर्मणा नशत्,
यः चकार सदावृधम्।
इन्द्रम् न यज्ञैः विश्वगूर्तम्,
ऋभ्वसम् अधृष्टम् धृष्णुम् ओजसा ॥1॥

244. य ऋते चित् अभिश्रिषः,
पुरा जत्रुभ्य आतृदः।
सन्धाता सन्धिम् मघवा,
पुरूवसुः निष्कर्ता विह्रुतम् पुनः ॥2॥

245. आ त्वा सहस्त्रम् आ शतम्,
युक्ता रथे हिरण्यये।
ब्रह्मयुजो हरय इन्द्र,
केशिनो वहन्तु सोमपीतये ॥3॥

246. आ मन्द्रैः इन्द्र हरिभिः,
याहि मयूररोमभिः।
मा त्वा के चित् नि येमुः इत्,
पाशिनो अति धन्वा इव तान् इहि ॥4॥

247. त्वम् अङ्ग प्र शंसिषो,
देवः शविष्ठ मर्त्यम्।
न त्वत् अन्यो मघवन् न अस्ति,
मर्डिता इन्द्र ब्रवीमि ते वचः ॥5॥

248. त्वम् इन्द्र यशा असि,
ऋजीषी शवसः पतिः।
त्वम् वृत्राणि हंसि अप्रतीनि,
एक इत् पुरु अनुत्तः चर्षणीधृतिः ॥6॥

249. इन्द्रम् इत् देवतातय,
इन्द्रम् प्रयति अध्वरे।
इन्द्रम् समीके वनिनो,
हवामह इन्द्रम् धनस्य सातये ॥7॥

250. इमा उ त्वा पुरूवसो,
गिरो वर्धन्तु या मम।
पावकवर्णाः शुचयो,
विपश्चितो अभि स्तोमैः अनूषत ॥8॥

251. उत् उ त्ये मधुमत्तमा,
गिर स्तोमास ईरते।
सत्राजितो धनसा अ क्षितो,
ऊतयो वाजयन्तो रथा इव ॥9॥

252. यथा गौरो अपा कृतम्,
तृष्यन् एति अव इरिणम्।
आपित्वे नः प्रपित्वे तूयम् आ गहि,
कण्वेषु सु सचा पिब ॥10॥

(27) सूक्त 3

253. शग्धि उ षु शचीपत,
इन्द्र विश्वाभिः ऊतिभिः।
भगम् न हि त्वा यशसम्,
वसुविदम् अनु शूर चरामसि ॥1॥

254. या इन्द्र भुज आभरः,
स्वर्वान् असुरेभ्यः।
स्तोतारम् इत् मघवन्,
अस्य वर्धय ये च त्वे वृक्तबर्हिषः ॥2॥

255. प्र मित्राय प्र अर्यम्णे,
सचथ्यम् ऋतावसो।
वरूथ्ये वरुणे छन्द्यम्,
वचः स्तोत्रम् राजसु गायत ॥3॥

256. अभि त्वा पूर्वपीतय,
इन्द्र स्तोमेभिः आयवः।
समीचीनास ऋभवः,
समस्वरन् रुद्रा गृणन्त पूर्व्यम् ॥4॥

257. प्र व इन्द्राय बृहते,
मरुतो ब्रह्म अर्चत।
वृत्रम् हनति वृत्रहा,
शतक्रतुः वज्रेण शतपर्वणा॥5॥

258. बृहत् इन्द्राय गायत,
मरुतो वृत्रहन्तमम्।
येन ज्योतिः अजनयम् ऋतावृधो,
देवम् देवाय जागृवि॥6॥

259. इन्द्र क्रतुम् न आ भर,
पिता पुत्रेभ्यो यथा।
शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत,
यामनि जीवा ज्योतिः अशीमहि॥7॥

260. मा न इन्द्र परा वृणक्,
भवा नः सधमाद्ये।
त्वम् न ऊती त्वम् इत् न आप्यम्,
मा न इन्द्र परा वृणक्॥8॥

261. वयम् घ त्वा सुतावन्त,
आपो न वृक्तबर्हिषः।
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु,
वृत्रहन् परि स्तोतार आसते॥9॥

262. यत् इन्द्र नाहुषीषु आ,
ओजो नृम्णम् च कृष्टिषु।
यत् वा पञ्च क्षितीनाम् द्युम्नम्,
आ भर सत्रा विश्वानि पौंस्या॥10॥

(28) सूक्त 4

263. सत्यम् इत्था वृषा इत् असि,
वृषजूतिः नो अविता।
वृषा हि उग्र शृण्विषे,
परावति वृषो अर्वावति श्रुतः॥1॥

264. यत् शक्र असि परावति,
यत् अर्वावति वृत्रहन्।
अतः त्वा गीर्भिः द्युगत्,
इन्द्र केशिभिः सुतावान् आ विवासति॥2॥

265. अभि वो वीरम् अन्धसो मदेषु,
गाय गिरा महा विचेतसम्।
इन्द्रम् नाम श्रुत्यम् शाकिनम् वचो यथा॥3॥

266. इन्द्र त्रिधातु शरणम्,
त्रिवरूथम् स्वस्तये।
छर्दिः यच्छ मघवद्भ्यः,
च मह्यम् च यावया दिद्युम् एभ्यः॥4॥

267. श्रायन्त इव सूर्यम्,
विश्वा इत् इन्द्रस्य भक्षत ।
वसूनि जाता उ जनिमानि,
ओजसा प्रति भागम् न दीधिम ॥5॥

268. न सीम् अदेव आप,
तत् इषम् दीर्घायो मर्त्यः।
एतग्वा चित् य एतशो,
युयोजते इन्द्रो हरी युयोजते॥6॥

269. आ नो विश्वासु हव्यम्,
इन्द्रम् समत्सु भूषत।
उप ब्रह्माणि सवनानि,
वृत्रहन् परमज्या ऋचीषम॥7॥

270. तव इत् इन्द्र अवमम्,
वसु त्वम् पुष्यसि मध्यमम्।
सत्र आ विश्वस्य परमस्य,
राजसि न किः त्वा गोषु वृण्वते॥8॥

271. क्व इयथ क्व इत् असि,
पुरुत्रा चित् हि ते मनः।
अलर्षि युध्म खजकृत्,
पुरन्दर प्र गायत्रा अगासिषुः॥9॥

272. वयम् एनम् इत् आ ह्यो,
अपीपेम इह वज्रिणम्।
तस्मा उ अद्य सवने,
सतुम् भर आ नूनम् भूषत श्रुते॥10॥

(29) सूक्त 5

273. यो राजा चर्षणीनाम्,
याता रथेभिः अध्रिगुः।
विश्वासाम् तरुता पृतनानाम्,
ज्येष्ठम् यो वृत्रहा गृणे॥1॥

274. यत इन्द्र भयामहे,
ततो नो अभयम् कृधि।
मघवन् शग्धि तव तम्,
ऊतये वि द्विषो वि मृधो जहि॥2॥

275. वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणा,
अंसत्रम् सोम्यानाम्।
द्रप्सः पुराम् भेत्ता,
शश्वतीनाम् इन्द्रो मुनीनाम् सखा॥3॥

276. बट् महान् असि सूर्य्य,
बट् आदित्य महान् असि।
महः ते सतो महिमा,
पनिष्टम मह्ना देव महान् असि॥4॥

277. अश्वी रथी सुरूप इत्,
गोमान् यत् इन्द्र ते सखा।
श्वात्रभाजा वयसा सचते,
सदा चन्दैः याति सभाम् उप ॥5॥

278. यत् द्याव इन्द्र ते शतम्,
शतम् भूमीः उत स्युः।
न त्वा वज्रिन् सहस्त्रम् सूर्य्या,
अनु न जातम् अष्ट रोदसी ॥6॥

279. यत् इन्द्र प्राक् अपाक् उदक्,
न्यक् वा हूयसे नृभिः।
सिमा पुरू नृषूतो असि,
आनवे असि प्रशर्ध तुर्वशे ॥7॥

280. कः तम् इन्द्र त्वा वसो,
आ मर्त्यो दधर्षति।
श्रद्धा हि ते मघवन् पार्ये,
दिवि वाजी वाजम् सिषासति ॥8॥

281. इन्द्राग्नी अपात् इयम्,
पूर्वा आगात् पद्वतीभ्यः।
हित्वा शिरो जिह्वया रारपत्,
चरत् त्रिंशत् पदा नि अक्रमीत ॥9॥

282. इन्द्र नेदीय आ इत्,
इहि मितमेधाभिः ऊतिभिः।
आ शन्तम शन्तमाभिः अभिष्टिभिः,
आ स्वापे स्वापे स्वापिभिः ॥10॥

(30) सूक्त 6

283. इत ऊती वो अजरम्,
प्रहेतारम् अप्रहितम्।
आशुम् जेतारम् हेतारम् रथीतमम्,
अतूर्तम् तुग्रियावृधम् ॥1॥

284. मो षु त्वा वाघतः चन,
आरे अस्मत् नि रीरमन्।
आरात्तात् वा सधमादम् न,
आ गहीह वा सन् उप श्रुधि ॥2॥

285. सुनोता सोमपव्ने,
सोमम् इन्द्राय वज्रिणे।
पचता पक्तीः अवसे कृणुध्वम्,
इत् पृणत् इत् पृणते मयः ॥3॥

286. यः सत्राहा विचर्षणिः,
इन्द्रम् तम् हूमहे वयम्।
सहस्त्रमन्यो तुविनृम्ण,
सत्पते भवा समत्सु नो वृधे ॥4॥

287. शचीभिः नः शचीवसू,
दिवा नक्तम् दिशस्यतम्।
मा वाम् रातिः उप दसत्,
कदा चन अस्मत् रातिः कदा चन ॥5॥

288. यदा कदा च मीढुषे,
स्तोता जरेत मर्त्यः।
आत् इत् वन्देत वरुणम्,
विपा गिरा धर्त्तारम् विव्रतानाम् ॥6॥

289. पाहि गा अन्धसो मद,
इन्द्राय मेध्यातिथे।
यः सम्मिश्लो हर्यो अर्यो,
हिरण्यय इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥7॥

290. उभयम् शृणवत् च न,
इन्द्रो अर्वागिदम् वचः।
सत्राच्या मघवान् सोमपीतये,
धिया शविष्ठ आ गमत् ॥8॥

291. महे च न त्वाद्रिवः,
परा शुल्काय दीयसे।
न सहस्त्राय नायुताय,
वज्रिवो न शताय शतामघ ॥9॥

292. वस्यान् इन्द्र असि मे,
पितुः उत भ्रातुः अभुञ्जतः।
माता च मे छदयथः समा,
वसो वसुत्वनाय राधसे ॥10॥

(31) सूक्त 7

293. इम इन्द्राय सुन्विरे,
सोमासो दध्याशिरः।
तान् आ मदाय वज्रहस्त,
पीतये हरिभ्याम् याही ओक आ ॥1॥

294. इम इन्द्र मदाय ते,
सोमाः चिकित्र उक्थिनः।
मधोः पपान उप नो गिरः,
शृणु रास्व स्तोत्राय गिर्वणः ॥2॥

295. आ त्वा अद्य सबर्दुघाम्,
हुवे गायत्रवेपसम्।
इन्द्रम् धेनुम् सुदुघाम् अन्याम्,
इषम् उरुधाराम् अरङ्कृतम् ॥3॥

296. न त्वा बृहन्तो अद्रयो,
वरन्त इन्द्र वीडवः।
यत् शिक्षसि स्तुवते मावते,
वसु न किः तत् आ मिनाति ते ॥4॥

297. क ईम् वेद सुते सचा,
पिबन्तम् कत् वयो दधे।
अयम् यः पुरो विभिनति,
ओजसा मन्दानः शिप्री अन्धसः ॥5॥

298. यत् इन्द्र शासो अव्रतम्,
च्यावया सदसः परि।
अस्माकम् अंशुम् मघवन्,
पुरुस्पृहम् वसव्ये अधि बर्हय ॥6॥

299. त्वष्टा नो दैव्यम् वचः,
पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः।
पुत्रैः भ्रातृभिः अदितिः नु पातु,
नो दुष्टरम् त्रामणम् वचः ॥7॥

300. कदा चन स्तरीः असि,
न इन्द्र सश्चसि दाशुषे।
उप उप इत् नु मघवन्,
भूय इत् नु ते दानम् देवस्य पृच्यते ॥8॥

301. युङ्क्ष्वा हि वृत्रहन्तम,
हरी इन्द्र परावतः।
अर्वाचीनो मघवन् सोमपीतय,
उग्र ऋष्वेभिः आ गहि ॥9॥

302. त्वाम् इदा ह्यो नरो,
अपीप्यन् वज्रिन् भूर्णयः।
स इन्द्र स्तोमवाहसः,
इह श्रुधि उप स्वसरम् आ गहि ॥10॥

(32) सूक्त 8

303. प्रति उ अदर्शि आयती,
उच्छन्ती दुहिता दिवः।
अप उ मही वृणुते,
चक्षुषा तमो ज्योतिः कृणोति सूनरी ॥1॥

304. इमा उ वाम् दिविष्टय,
उस्त्रा हवन्ते अश्विना।
अयम् वाम् अह्वे अवसे,
शचीवसू विशम् विशम् हि गच्छथः ॥2॥

305. कुष्ठः को वाम् अश्विना,
तपानो देवा मर्त्यः।
घ्नता वाम् अश्नया क्षपमाणो,
अंशुना इत्थम् उ आत् उ अन्यथा ॥3॥

306. अयम् वाम् मधुमत्तमः,
सुतः सोमो दिविष्टिषु।
तम् अश्विना पिबतम् तिरो,
अह्न्यम् धत्तम् रत्नानि दाशुषे ॥4॥

307. आ त्वा सोमस्य गल्दया,
सदा याचन् अहम् ज्या।
भूर्णिम् मृगम् न सवनेषु,
चुक्रुधम् क ईशानम् न याचिषत्॥5॥

308. अध्वर्यो द्रावया त्वम्,
सोमम् इन्द्रः पिपासति।
उप उ नूनम् युयुजे,
वृषणा हरी आ च जगाम वृत्रहा॥6॥

309. अभीषतः तत् आ भर,
इन्द्र ज्यायः कनीयसः।
पुरूवसुः हि मघवन्,
बभूविथ भरे भरे च हव्यः॥7॥

310. यत् इन्द्र यावतः त्वम्,
एतावत् अहम् ईशीय।
स्तोतारम् इत् दधिषे,
रदावसो न पापत्वाय रंसिषम्॥8॥

311. त्वम् इन्द्र प्रतूर्तिषु,
अभि विश्वा असि स्पृधः।
अशस्तिहा जनिता, वृत्रतूः असि,
त्वम् तूर्य तरुष्यतः॥9॥

312. प्र यो रिरिक्षे ओजसा,
दिवः सदोभ्यः परि।
न त्वा विव्याच रज,
इन्द्र पार्थिवम् अति विश्वम् ववक्षिथ॥10॥

(33) सूक्त 9

313. असावि देवम् गोऋजीकम् अन्धो,
नि अस्मिन इन्द्रो जनुषा ईम् उवोच।
बोधामसि त्वा हर्यश्व यज्ञैः बोधा,
न स्तोमम् अन्धसो मदेषु॥1॥

314. योनिः ते इन्द्र सदने अकारि,
तम् आ नृभिः पुरुहूत प्र याहि।
असो यथा नो अविता वृधः चित्,
ददो वसूनि ममदः च सोमैः॥2॥

315. अदर्दः उत्सम् असृजो वि खानि,
त्वम् अर्णवान् बद्बधानाम् अरम्णाः।
महान्तम् इन्द्र पर्वतम् वि यत् वः,
सृजत् धारा अव यत् दानवान् हन्॥3॥

316. सुष्वाणास इन्द्र स्तुमसि त्वा,
सनिष्यन्तः चित् तु विनृम्ण वाजम्।
आ नो भर सुवितम् यस्य कोना,
तना त्मना सह्याम त्वोताः॥4॥

317. जगृह्या ते दक्षिणम् इन्द्र हस्तम्,
वसूयवो वसुपते वसूनाम्।
विद्मा हि त्वा गोपतिम् शूर गोनाम्,
अस्मभ्यम् चित्रम् वृषणम् रयिम् दाः ॥5॥

318. इन्द्रम् नरो नेमधिता हवन्ते,
यत् पार्या युनजते धियः ताः।
शूरो नृषाता श्रवसः च काम,
आ गोमति व्रजे भजा त्वम् नः ॥6॥

319. वयः सुपर्णा उप सेदुः इन्द्रम्,
प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः।
अप ध्वान्तम् ऊर्णुहि पूर्धि चक्षुः,
मुमुग्धि अस्मान् निधयेव बद्धान् ॥7॥

320. नाके सुपर्णम् उप यत् पतन्तम्,
हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा।
हिरण्यपक्षम् वरुणस्य दूतम्,
यमस्य योनौ शकुनम् भुरण्युम् ॥8॥

321. ब्रह्म जज्ञानम् प्रथमम् पुरस्तात्,
वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतः,
च योनिम् असतः च विवः ॥9॥

322. अपूर्व्या पुरुतमानि अस्मै,
महे वीराय तवसे तुराय।
विरप्शिने वज्रिणे शन्तमानि,
वचांसि अस्मै स्थविराय तक्षुः ॥10॥

(34) सूक्त 10

323. अव द्रप्सो अंशुमतीम् अतिष्ठत्,
ईयानः कृष्णो दशभिः सहस्रैः।
आवत् तम् इन्द्रः शच्या धमन्तम्,
अप स्नीहितिम् नृमणा अध द्राः ॥1॥

324. वृत्रस्य त्वा श्वसथात् ईषमाणा,
विश्वे देवा अजहुः ये सखायः।
मरुद्भिः इन्द्र सख्यम् ते अस्तु,
अथ इमा विश्वाः पृतना जयासि ॥2॥

325. विधुम् दद्राणम् समने बहूनाम्,
युवानम् सन्तम् पलितो जगार।
देवस्य पश्य काव्यम् महित्वा,
अद्य आ ममार स ह्यः समान ॥3॥

326. त्वम् ह त्यत् सप्तभ्यो जायमानो,
अशत्रुभ्यो अभवः शत्रुः इन्द्र।
गूढे द्यावापृथिवी अन्वविन्दो,
विभुमद्भ्योः भुवनेभ्यो रणम् धाः ॥4॥

327. मेडिम् न त्वा वज्रिणम् भृष्टिमन्तम्,
पुरुधस्मानम् वृषभम् स्थिरप्स्नुम्।
करोषि अर्यः तरुषीः दुवस्युः,
इन्द्र द्युक्षम् वृत्रहणम् गृणीषे॥5॥

328. प्र वो महे महे वृधे भरध्वम्,
प्रचेतसे प्र सुमतिम् कृणुध्वम्।
विशः पूर्वीः प्र चर चर्षणिप्राः॥6॥

329. शुनम् हुवेम मघवानम् इन्द्रम्,
अस्मिन् भरे नृतमम् वाजसातौ।
शृण्वन्तम् उग्रम् ऊतये समत्सु,
घ्नन्तम् वृत्राणि सञ्जितम् धनानि॥7॥

330. उत् उ ब्रह्माणि ऐरत श्रवस्य,
इन्द्रम् सम् अर्ये महया वसिष्ठ।
आ यो विश्वानि श्रवसा ततान,
आ उप श्रोता म ईवतो वचांसि ॥8॥

331. चक्रम् यत् अस्य अप्सु आ निषत्तम्,
उत उ तत् अस्मै मधु इत् चच्छद्यात्।
पृथिव्याम् अतिषितम् यत् ऊधः,
पयो गोषु अदधा ओषधीषु॥9॥

(35) सूक्त 11

332. त्यम् उ षु वाजिनम् देवजूतम्,
सहोवानम् तरुतारम् रथानाम्।
अरिष्टनेमिम् पृतनाजम् आशुम्,
स्वस्तये ताक्ष्यम् इह आ हुवेम ॥1॥

333. त्रातारम् इन्द्रम् अवितारम् इन्द्रम्,
हवे हवे सुहवम् शूरम् इन्द्रम्।
हुवे नु शक्रम् पुरुहूतम् इन्द्रम्,
इदम् हविः मघवा वेतु इन्द्रः॥2॥

334. यजामह इन्द्रम् वज्रदक्षिणम्,
हरीणाम् रथ्याम् विव्रतानाम्।
प्र श्मश्रुभिः दोधुवत् ऊर्ध्वधा भुवत्,
वि सेनाभिः भयमानो वि राधसा॥3॥

335. सत्राहणम् दाधृषिम् तुम्रम् इन्द्रम्,
महाम् अपारम् वृषभम् सुवज्रम्।
हन्ता यो वृत्रम् सनिता उत वाजम्,
दाता मघानि मघवा सुराधाः॥4॥

336. यो नो वनुष्यन् अभिदाति मर्त,
उगणा वा मन्यमानः तुरो वा।
क्षिधी युधा शवसा वा तम् इन्द्र,
अभि स्याम वृषमणः त्वोताः॥5॥

337. यम् वृत्रेषु क्षितयः स्पर्धमाना,
यम् युक्तेषु तुरयन्तो हवन्ते।
यम् शूरसातौ यम् अपाम् उपज्मन्
यम् विप्रासो वाजयन्ते स इन्द्रः ॥6॥

338. इन्द्रापर्वता बृहता रथेन,
वामीः इषः आ वहतम् सुवीराः।
वीतम् हव्यानि अध्वरेषु देवा,
वर्धेथाम् गीर्भिः इडया मदन्ता ॥7॥

339. इन्द्राय गिरो अनिशितसर्गा,
अपः प्रैरयत् सगरस्य ब्रध्नात्।
यो अक्षेण इव चक्रियौ शचीभिः,
विष्वक् तस्तम्भ पृथिवीम् उत द्याम् ॥8॥

340. आ त्वा सखायः सख्या ववृत्युः,
तिरः पुरू चित् अर्णवाम् जगम्याः।
पितुः नपातम् आ दधीत वेधा,
अस्मिन् क्षये प्रतराम् दीद्यानः ॥9॥

341. को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य,
शिमीवतो भामिनो दुर्हृणायून्।
आसन् एषाम् अप्सुवाहः मयोभून,
य एषाम् भृत्याम् ऋणधत् सः जीवात् ॥10॥

(36) सूक्त 12

342. गायन्ति त्वा गायत्रिणो,
अर्चन्ति अर्कम् अर्किणः।
ब्रह्माणः त्वा शतक्रत,
उद् वंशम् इव ये मिरे ॥1॥

343. इन्द्रम् विश्वा अवीवृधन्,
समुद्रव्यचसम् गिरः।
रथीतमम् रथीनाम् वाजानाम्,
सत्पतिम् पतिम् ॥2॥

344. इमम् इन्द्र सुतम् पिब,
ज्येष्ठम् अमर्त्यम् मदम्।
शुक्रस्य त्वा अभ्यक्षरन्,
धारा ऋतस्य सादने ॥3॥

345. यत् इन्द्र चित्र म इह,
न अस्ति त्वादातम् अद्रिवः।
राधः तत् नो विदद्वस,
उभया हस्त्य आ भर ॥4॥

346. श्रुधी हवम् तिरश्च्या,
इन्द्र यः त्वा सपर्यति।
सुवीर्यस्य गोमतो,
रायः पूर्धि महान् असि ॥5॥

347. असावि सोमः इन्द्र ते,
शविष्ठ धृष्णो आ गहि।
आ त्वा पृणक्तु इन्द्रियम्,
रजः सूर्यो न रश्मिभिः ॥6॥

348. आ इन्द्र याहि हरिभिः,
उप कण्वस्य सुष्टुतिम्।
दिवो अमुष्य शासतो,
दिवम् यय दिवावसो ॥7॥

349. आ त्वा गिरो रथीः इव,
अस्थुः सुतेषु गिर्वणः।
अभि त्वा सम् अनूषत,
गावो वत्सम् न धेनवः ॥8॥

350. एत उ नु इन्द्रम् स्तवाम,
शुद्धम् शुद्धेन साम्ना।
शुद्धैः उक्थैः वावृध्वांसम्,
शुद्धैः आशीर्वान् ममत्तु ॥9॥

351. यो रयिम् वो रयिन्तमो,
यो द्युम्नैः द्युम्नवत्तमः।
सोमः सुतः स इन्द्र ते,
अस्ति स्वधापते मदः ॥10॥

इति तृतीयो अध्यायः

ॐ

अथ चतुर्थो अध्यायः

एन्द्रम् पर्वम् काण्डम् वा

(37) सूक्त 1

352. प्रति अस्मै पिपीषते,
विश्वानि विदुषे भर।
अरङ्गमाय जग्मये,
अपश्चादध्वने नरः ॥1॥

353. आ नो वयो वयो शयम्,
महान्तम् गह्वरेष्ठाम्।
महान्तम् पूर्विनेष्ठाम्,
उग्रम् वचो अपावधीः ॥2॥

354. आ त्वा रथम् यथा ऊतये,
सुम्नाय वर्तयामसि।
तुविकूः मिम् ऋतीषहम्,
इन्द्रम् शविष्ठ सत्पतिम् ॥3॥

355. स पूर्व्यो महोनाम् वेनः,
क्रतुभिः आनजे।
यस्य द्वारा मनुः पिता,
देवेषु धिय आनजे ॥4॥

356. यदि आ वहन्ति आशवो,
भ्राजमाना रथेषु आ।
पिबन्तो मदिरम् मधु,
तत्र श्रवांसि कृण्वते ॥5॥

357. त्यम् उ वो अप्रहणम्,
गृणीषे शवसः पतिम्।
इन्द्रम् विश्वासाहम् नरम्,
शचिष्ठम् विश्ववेदसम् ॥6॥

358. दधिक्राव्णो अकारिषम्,
जिष्णोः अश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्,
प्र ण आयूँषि तारिषत् ॥7॥

359. पुराम् भिन्दुः युवा कविः,
अमितौजा अजायत।
इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो,
धर्ता वज्री पुरुष्टुतः ॥8॥

(38) सूक्त 2

360. प्रप्र वः त्रिष्टुभम् इषम्,
वन्दद्वीराय इन्दवे।
धिया वो मेधसातये,
पुरन्धी आ विवासति ॥1॥

361. कश्यपस्य स्वर्विदो,
यौ आहुः सयुजौ इति।
ययो विश्वम् अपि व्रतम्,
यज्ञम् धीरा निचाय्य ॥2॥

362. अर्चत प्रार्चता नरः,
प्रियमेधासो अर्चत।
अर्चन्तु पुत्रका उत,
पुरम् इत् धृष्णु अर्चत ॥3॥

363. उक्थम् इन्द्राय शंस्यम्,
वर्धनम् पुरुनिः षिधे।
शक्रो यथा सुतेषु,
नो रारणत् सख्येषु च ॥4॥

364. विश्वानरस्य वः पतिम्,
अनानतस्य शवसः।
एवैः च चर्षणीनाम्,
ऊती हुवे रथानाम् ॥5॥

365. स घा यः ते दिवो नरो,
धिया मर्तस्य शमतः।
ऊती स बृहतो दिवो,
द्विषो अंहो न तरति ॥6॥

366. विभोः त इन्द्र राधसो,
विभ्वी रातिः शतक्रतो।
अथा नो विश्वचर्षणे,
द्युम्नम् सुदत्र मंहय॥7॥

367. वयः चित् ते पतत्रिणो,
द्विपात् चुतुष्पात् अर्जुनि।
उषः प्रारन् ऋतून् अनु,
दिवो अन्तेभ्यः परि॥8॥

368. अमी ये देवा स्थन मध्य,
आ रोचने दिवः।
कत् वः ऋतम् कत् अमृतम्,
का प्रत्ना व आहुतिः॥9॥

369. ऋचम् साम यजामहे,
याभ्याम् कर्माणि कृण्वते।
वि ते सदसि राजतो,
यज्ञम् देवेषु वक्षतः॥10॥

(39) सूक्त 3

370. विश्वाः पृतना अभिभूतरम् नरः,
सजूः ततक्षुः इन्द्रम् जजनुः च राजसे।
क्रत्वे वरे स्थेमनि आमुः ईम् उत,
उग्रम् ओजिष्ठम् तरसम् तरस्विनम्॥1॥

371. श्रत् ते दधामि प्रथमाय मन्यवे,
अहन् यत् दस्युम् नर्य्यम् विवेः अपः।
उभे यत्वा रोदसी धावताम् अनु,
भ्यसात् ते शुष्मात् पृथिवी चित् अद्रिवः॥2॥

372. समेत विश्वा ओजसा पतिम् दिवो,
य एक इत् भू अतिथिः जनानाम्।
स पूर्व्यो नूतनम् आ जिगीषम् तम्,
वर्तनीः अनु वावृत एक इत्॥3॥

373. इमे त इन्द्र ते वयम् पुरुष्टुत,
ये त्वा अरभ्य चरामसि प्रभूवसो।
न हि त्वदन्यो गिर्वणो गिर सघत्,
क्षोणीः इव प्रति तत् हर्य नो वचः॥4॥

374. चर्षणीधृतम् मघवानम् उक्थ्याम्,
इन्द्रम् गिरो बृहतीः अभ्यनूषत।
वावृधानम् पुरुहूतम् सुवृक्तिभिः,
अमर्त्यम् जरमाणम् दिवे दिवे॥5॥

375. अच्छा व इन्द्रम् मतयः स्वर्युवः,
सध्रीचीः विश्वा उशतीः अनूषत।
परि ष्वजन्त जनयो यथा पतिम्,
मर्यम् न शुन्ध्युम् मघवानम् ऊतये॥6॥

376. अभि त्यम् मेषम् पुरुहूतम् ऋग्मियम्,
इन्द्रम् गीर्भिः मदता वस्वो अर्णवम्।
यस्य द्यावो न विचरन्ति मानुषम्,
भुजे मंहिष्ठम् अभि विप्रम् अर्चत॥7॥

377. त्यम् सु मेषम् महया स्वर्विदम्,
शतम् यस्य सुभुवः साकम् ईरते।
अत्यम् न वाजम् हवनस्यदम् रथम,
इन्द्रम् ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः॥8॥

378. घृतवती भुवनानाम् अभिश्रिया उर्वी,
पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा।
द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा,
विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा॥9॥

379. उभे यत् इन्द्र रोदसी,
आप प्राथ उषा इव।
महान्तम् त्वा महीनाम्,
सम्राजम् चर्षणीनाम्।
देवी जनित्री अजीजनत्,
भद्रा जनित्री अजीजनत्॥10॥

380. प्र मन्दिने पितुमत् अर्चत आ वचो,
यः कृष्णगर्भा निरहन् ऋजिश्वना।
अवस्यवो वृषणम् वज्रदक्षिणम्,
मरुत्वन्तम् सख्याय हुवेमहि॥11॥

(40) सूक्त 4

381. इन्द्र सुतेषु सोमेषु,
क्रतुम् पुनीष उक्थ्यम् ।
विदे वृधस्य दक्षस्य महान् हि षः॥1॥

382. तम् उ अभि प्र गायत,
पुरुहूतम् पुरुष्टुतम्।
इन्द्रम् गीर्भिः तविषम् आ विवासत॥2॥

383. तम् ते मदम् गृणीम् असि,
वृषणम् पृक्षु सासहिम्।
उ लोककृत्नुम् अद्रिवो हरिश्रियम्॥3॥

384. यत् सोमम् इन्द्र विष्णवि,
यत् वा घ त्रिते आप्त्ये।
यद्वा मरुत्सु मन्दसे सम् इन्दुभिः॥4॥

385. आ इत् उ मधोः मदिन्तरम्,
सिञ्च आ अध्वर्यो अन्धसः।
एवा हि वीर स्तवते सदावृधः॥5॥

386. आ इन्दुम् इन्द्राय सिञ्चत,
पिबाति सोम्यम् मधु।
प्र राधांसि चोदयते महित्वना ॥6॥

387. एत उ नु इन्द्रम् स्तवाम,
सखायः स्तोम्यम् नरम्।
कृष्टीः यो विश्वा अभ्यस्ति एक इत् ॥7॥

388. इन्द्राय साम गायत,
विप्राय बृहते बृहत्।
ब्रह्मकृते विपश्चिते पनस्यवे ॥8॥

389. य एक इत् वि दयते,
वसु मर्ताय दाशुषे।
ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग ॥9॥

390. सखाय आ शिषामहे,
ब्रह्म इन्द्राय वज्रिणे।
स्तुष उ षु वो नृतमाय धृष्णवे ॥10॥

(41) सूक्त 5

391. गृणे तत् इन्द्र ते शव,
उपमाम् देवतातये।
यत् हंसि वृत्रम् ओजसा शचीपते ॥1॥

392. यस्य त्यत् शम्बरम् मदे,
दिवोदासाय रन्धयन्।
अयम् स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ॥2॥

393. आ इन्द्र नो गधि प्रिय,
सत्राजित् अगोह्य।
गिरिः न विश्वतः पृथुः पतिः दिवः ॥3॥

394. य इन्द्र सोमपातमो,
मदः शविष्ठ चेतति।
येन आ हंसि नि अत्रिणम् तम् ईमहे ॥4॥

395. तुचे तुनाय तत् सु नो,
द्राघीय आयुः जीवसे।
आदित्यासः समहसः कृणोतन ॥5॥

396. वेत्था हि निर्ऋतीनाम्,
वज्रहस्त परिवृजम्।
अहरहः शुन्ध्युः परिपदाम् इव ॥6॥

397. अप अमीवाम् अप स्त्रिधम्,
अप सेधत दुर्मतिम्।
आदित्यासो युयोतना नो अंहस ॥7॥

398. पिबा सोमम् इन्द्र मन्दतु,
त्वा यम् ते सुषाव हर्यश्वाद्रिः।
सोतुः बाहुभ्याम् सुयतो नार्वा ॥8॥

(42) सूक्त 6

399. अभ्रातृव्यो अना त्वम्,
अनापिः इन्द्र जनुषा सनादसि।
युधा इत् आपित्वम् इच्छसे ॥1॥

400. यो न इदम् इदम् पुरा,
प्र वस्य आनिनाय तम् उ व स्तुषे।
सखाय इन्द्रम् ऊतये ॥2॥

401. आ गन्ता मा रिषण्यत,
प्रस्थावानो माप स्थात समन्यवः।
दृढा चित् यमयिष्णवः ॥3॥

402. आ याहि अयम् इन्दवे,
अश्वपते गोपत उर्वरापते।
सोमं सोमपते पिब ॥4॥

403. त्वया ह स्वित् युजा वयम्,
प्रति श्वसन्तम् वृषभ ब्रुवीमहि।
संस्थे जनस्य गोमतः ॥5॥

404. गावः चित् घा समन्यवः,
सजात्येन मरुतः सबन्धवः।
रिहते ककुभो मिथः ॥6॥

405. त्वम् न इन्द्र आ भर,
ओजो नृम्णम् शतक्रतो विचर्षणे।
आ वीरम् पृतनासहम् ॥7॥

406. अधा हि इन्द्र गिर्वण,
उप त्वा काम ईमहे ससृग्महे।
उदेव ग्मन्त उदभिः ॥8॥

407. सीदन्तः ते वयो यथा,
गोश्रीते मधौ मदिरे विवक्षणे।
अभि त्वाम् इन्द्र नोनुमः ॥9॥

408. वयम् उ त्वाम् अपूर्व्य स्थूरम्,
न कच्चित् भरन्तो अवस्यवः।
वज्रिन् चित्रम् हवामहे ॥10॥

(43) सूक्त 7

409. स्वादोः इत्था विषूवतो,
मधोः पिबन्ति गौर्यः।
या इन्द्रेण सयावरीः,
वृष्णा मदन्ति शोभथा,
वस्वीः अनु स्वराज्यम् ॥1॥

410. इत्था हि सोम इत् मदो,
ब्रह्म चकार वर्धनम्।
शविष्ठ वज्रिन् ओजसा,
पृथिव्या निः शशा अहिम्,
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥2॥

411. इन्द्रो मदाय वावृधे,
शवसे वृत्रहा नृभिः।
तम् इत् महत्सु आजिषु,
ऊतिम् अर्भे हवामहे,
स वाजेषु प्र नो अविषत्॥3॥

412. इन्द्र तुभ्यम् इत् अद्रिवो,
अनुत्तम् वज्रिन् वीर्यम्।
यत् ह त्यम् मायिनम् मृगम्,
तव त्यत् मायया अवधीः,
अर्चन् ननु स्वराज्यम्॥4॥

413. प्रेहि अभीहि धृष्णुहि,
न ते वज्रो नि यंसते।
इन्द्र नृम्णम् हि ते शवो,
हनो वृत्रम् जय आ अपो,
अर्चन् ननु स्वराज्यम्॥5॥

414. यत् उदीरत आजयो,
धृष्णवे धीयते धनम्।
युंक्ष्वा मदच्युता हरी,
कम् हनः कम् वसौ दधो,
अस्मान् इन्द्र वसौ दधः॥6॥

415. अक्षन् अमीमदन्त हि,
अव प्रिया अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो,
विप्रा नविष्ठया मती,
योज आ नु इन्द्र ते हरी ॥7॥

416. उप उ षु शृणुही गिरो,
मघवन् मा अतथा इव।
कदा न सूनृतावतः,
कर इत् अर्थयास इत्,
योजा नु इन्द्र ते हरी॥8॥

417. चन्द्रमा अप्सु अन्तरा,
सुपर्णो धावते दिवि।
न वो हिरण्यनेमयः,
पदम् विन्दन्ति विद्युतो,
वित्तम् मे अस्य रोदसी॥9॥

418. प्रति प्रियतमम् रथम्,
वृषणम् वसुवाहनम्।
स्तोता वाम् अश्विनौ ऋषि,
स्तोमेभिः भूषति प्रति,
माध्वी मम श्रुतम् हवम्॥10॥

(44) सूक्त 8

419. आ ते अग्न इधीमहि,
द्युमन्तम् देव अजरम्।
यत् ह स्या ते पनीयसी समित्,
दीदयति द्यविः इषम्,
स्तोतृभ्यः आ भर॥1॥

420. आ अग्निम् न स्ववृक्तिभिः,
होतारम् त्वा वृणीमहे।
शीरम् पावकशोचिषम्,
वि वो मदे यज्ञेषु,
स्तीर्ण बर्हिषम् विवक्षसे॥2॥

421. महे नो अद्य बोधय,
उषो राये दिवित्मती।
यथा चित् नो अबोधय,
सत्यश्रवसि वाय्ये,
सुजाते अश्वसूनृते॥3॥

422. भद्रम् नो अपि वातय,
मनो दक्षम् उत क्रतुम्।
अथा ते सख्ये अन्धसो,
वि वो मदे रणा गावा,
न यवसे विवक्षसे॥4॥

423. क्रत्वा महान् अनुष्वधम्,
भीम आ वावृते शवः।
श्रिय ऋष्व उपाकयोः,
नि शिप्री हरिवान् दधे,
हस्तयोः वज्रम् आयसम्॥5॥

424. स घा तम् वृषणम् रथम्,
अधि तिष्ठाति गोविदम्।
यः पात्रम् हारियोजनम्,
पूर्णम् इन्द्र चिकेतति,
योजा नु इन्द्र ते हरी॥6॥

425. अग्निम् तम् मन्ये यो वसुः,
अस्तम् यम् यन्ति धेनवः।
अस्तम् अर्वन्त आशवो,
अस्तम् नित्यासो वजिन इषम्,
स्तोतृभ्य आ भर॥7॥

426. न तम् अंहो न दुरितम्,
देवासो अष्ट मर्त्यम्।
सजोषसो यम् अर्यमा मित्रो,
नयति वरुणो अति द्विषः ॥8॥

(45) सूक्त 9

427. परि प्र धन्व आ इन्द्राय,
सोम स्वादुः मित्राय पूष्णे भगाय ॥1॥

428. परि ऊ षु प्र धन्व वाजसातये,
परि वृत्राणि सक्षणिः।
द्विषः तरध्या ऋणया न ईरसे ॥2॥

429. पवस्व सोम महान् समुद्रः,
पिता देवानाम् विश्व अभि धाम ॥3॥

430. पवस्व सोम महे दक्षाय,
अश्वो न निक्तो वाजी धनाय ॥4॥

431. इन्दुः पविष्ट चारुः मदाय,
अपाम् उपस्थे कविः भगाय ॥5॥

432. अनु हि त्वा सुतम् सोम,
मदाम् असि महे समर्यराज्ये।
वाजान् अभि पवमान प्र गाहसे ॥6॥

433. क इर्म् व्यक्ता नरः सनीडा,
रुद्रस्य मर्या अथा स्वश्वाः ॥7॥

434. अग्ने तम् अद्य अश्वम् न स्तोमैः,
क्रतुम् न भद्रम् हृदि स्पृशम्।
ऋध्यामा त ओहैः ॥8॥

435. आविः मर्या आ वाजम् वाजिनो,
अग्मन् देवस्य सवितुः सवम्।
स्वर्गाम् अर्वन्तो जयत ॥9॥

436. पवस्व सोम द्युम्नि सुधारो,
महान् अवीनाम् अनु पूर्व्यः ॥10॥

(46) सूक्त 10

437. विश्वतोदावन् विश्वतो न आ भर,
यम् त्वा शविष्ठम् ईमहे ॥1॥

438. एष ब्रह्मा य ऋत्विय,
इन्द्रो नाम श्रुतो गृणे ॥2॥

439. ब्रह्माण इन्द्रम् महयन्तो अर्कैः,
अवर्धयन् अहये हन्तवा उ ॥3॥

440. अनवः ते रथम् अश्वाय तक्षुः त्वष्टा,
वज्रम् पुरुहूत द्यु मन्तम् ॥4॥

441. शम् पदम् मघम् रयीषिणे न कामम्,
अव्रतो हिनोति न स्पृशत् रयिम्॥5॥

442. सदा गावः शुचयो विश्वधायसः,
सदा देवा अरेपसः॥6॥

443. आ याहि वनसा सह गावः,
सचन्त वर्तनिम् यत् ऊधभिः॥7॥

444. उप प्रक्षे मधुमति क्षियन्तः,
पुष्येम रयिम् धीमहे त इन्द्र॥8॥

445. अर्चन्ति अर्कम् मरुतः,
स्वर्का आ स्तोभति,
श्रुतो युवा स इन्द्रः॥9॥

446. प्र व इन्द्राय वृत्रहन्तमाय,
विप्राय गाथम् गायत यम् जुजोषते॥10॥

(47) सूक्त 11

447. अचेति अग्निः चिकितिः,
हव्यवाड् न सुमद्रथः॥1॥

448. अग्ने त्वम् नो अन्तम उत,
त्राता शिवो भुवो वरूथ्यः॥2॥

449. भगो न चित्रो अग्निः,
महोनाम् दधाति रत्नम्॥3॥

450. विश्वस्य प्र स्तोभ पुरो वा सन्,
यदि वा इह नूनम्॥4॥

451. उषा अप स्वसुः तमः,
सम् वर्तयति वर्तनिम् सुजातता॥5॥

452. इमा नु कम् भुवना सीषधेम्,
इन्द्रः च विश्वे च देवाः॥6॥

453. वि स्त्रुतयो यथा पथा,
इन्द्र त्वत् यन्तु रातयः॥7॥

454. अया वाजम् देवहितम् सनेम,
मदेम शतहिमाः सुवीराः॥8॥

455. ऊर्जा मित्रो वरुणः पिन्वत इडाः
पीवरीम् इषम् कृणुही न इन्द्र॥9॥

456. इन्द्रो विश्वस्य राजति॥10॥

(48) सूक्त 12

457. त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरम्,
तुविशुष्मः तृम्पत् सोमम् अपिबत्,
विष्णुना सुतम् यथावशम्।
स ईम् ममाद महि कर्म,
कर्तवे महाम् उरुम्
सैनम् सश्चत् देवः देवम्,
सत्य इन्दुः सत्यम् इन्द्रम्॥1॥

458. अयम् सहस्त्रमानवो दृशः
कवीनाम् मतिः ज्योतिः विधर्म।
ब्रध्न समीचीः उषसः समैरयत् अरेपसः
सचेतसः स्वसरे मन्युमन्तः चिता गोः॥2॥

459. आ इन्द्र याहि उप नः,
परावतो न अयम् अच्छा,
विदथानीव सत्पतिः,
अस्ता राजेव सत्पतिः।
हवामहे त्वा प्रयस्वन्तः,
सुतेष्वा पुत्रासो न
पितरम् वाजसातये,
मंहिष्ठम् वाजसातये॥3॥

460. तम् इन्द्रम् जोहवीमि मघवानम् उग्रम्,
सत्रा दधानम् प्रतिष्कुतम् श्रवांसि भूरि।
मंहिष्ठो गीर्भिः आ च यज्ञियो ववर्त,
राये नो विश्वा सुपथा कृणोतु वज्री॥4॥

461. अस्तु श्रौषट् पुरो अग्निम्,
धिया दध आ नु,
त्यत् शर्धो दिव्यम् वृणीमह,
इन्द्रवायू वृणीमहे।
यत् ह क्राणा विवस्वते,
नाभा सन्दाय नव्यसे।
अध प्र नूनम् उप यन्ति धीतयो,
देवान् अच्छ न धीतयः॥5॥

462. प्र वो महे मतयो यन्तु विष्णवे,
मरुत्वते गिरिजा एवयामरुत्।
प्र शर्धाय प्र यज्यवे सुखादये तवसे,
भन्ददिष्टये धुनिव्रताय शवसे॥6॥

463. अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषांसि,
तरति सयुग्वभिः सूरो न सयुग्वभिः।
धारा पृष्ठस्य रोचते पुनानो अरुषो हरिः।
विश्वा यत् रूपा परियासि ऋक्वभिः,
सप्ताः येभिः ऋक्वभिः॥7॥

464. अभि त्यम् देवम् सवितारम् ओण्योः कविक्रतुम्,
अर्चामि सत्यसवम् रत्नधाम् अभि प्रियम् मतिम्।
ऊर्ध्वा यस्य अमतिः भा अदिद्युतत् सवीमनि,
हिरण्यपाणिः अमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः ॥8॥

465. अग्नि होतारम् मन्ये,
दास्वन्तम् वसोः सूनुम्,
सहसो जातवेदसम्,
विप्रम् न जातवेदसम्।
य ऊर्ध्वया स्वध्वरो,
देवो देवाच्या कृपा।
घृतस्य विभ्राष्टिम् अनु शुक्रशोचिष,
आजुह्वाानस्य सर्पिषः ॥9॥

466. तव त्यत् नर्यम् नृतो अप इन्द्र
प्रथमम् पूर्व्यम् दिवि प्रवाच्यम् कृतम्।
यो देवस्य शवसा प्रारिणा असु रिणन् अपः।
भुवो विश्वम् अभि अदेवम्
ओजसा विदेत् ऊर्जम्,
शतक्रतुः विदेत् इषम् ॥10॥

इति चतुर्थ अध्यायः

ॐ

अथ पञ्चमो अध्यायः

पावमानम् पर्वम् काण्डम् वा

(49) सूक्त 1

467. उच्चा ते जातम् अन्धसो,
दिवि सत् भूमिः आ ददे।
उग्रम् शर्म महि श्रवः ॥1॥

468. स्वादिष्ठया मदिष्ठया,
पवस्व सोम धारया।
इन्द्राय पातवे सुतः ॥2॥

469. वृषा पवस्व धारया,
मरुत्वते च मत्सरः।
विश्वा दधान ओजसा ॥3॥

470. यः ते मदो वरेण्यः,
तेना पवस्व अन्धसा।
देवावीः अघशंसहा ॥4॥

471. तिस्रो वाच उदीरते,
गावो मिमन्ति धेनवः।
हरिः एति कनिक्रदत् ॥5॥

472. इन्द्राय इन्दो मरुत्वते,
पवस्व मधुमत्तमः।
अर्कस्य योनिम् आसदम्॥6॥

473. असावि अंशुः मदाय,
अप्सु दक्षो गिरिष्ठाः।
श्येनो न योनिम् आसदत्॥7॥

474. पवस्व दक्षसाधनो,
देवेभ्यः पीतये हरे।
मरुद्भ्यो वायवे मदः॥8॥

475. परि स्वानो गिरिष्ठाः,
पवित्रे सोमो अक्षरत्।
मदेषु सर्वधा असि॥9॥

476. परि प्रिया दिवः कविः,
वयांसि नप्त्योः हितः।
स्वानैः याति कविक्रतुः॥10॥

(50) सूक्त 2

477. प्र सोमासो मदच्युतः,
श्रवसे नो मघोनाम्।
सुता विदथे अक्रमुः॥1॥

478. प्र सोमासो विपश्चितो,
अपो नयन्त ऊर्मयः।
वनानि महिषा इव॥2॥

479. पवस्व इन्दो वृषा सुतः,
कृधी नो यशसो जने।
विश्वा अप द्विषो जहि॥3॥

480. वृषा हि असि भानुना,
द्युमन्तम् त्वा हवामहे।
पवमान स्वर्दृशम्॥4॥

481. इन्दुः पविष्ट चेतनः,
प्रियः कवीनाम् मतिः।
सृजत् अश्वम् रथीः इव॥5॥

482. असृक्षत प्र वाजिनो,
गव्या सोमासो अश्वया।
शुक्रासो वीरया आशवः॥6॥

483. पवस्व देव आयुषक्,
इन्द्रम् गच्छतु ते मदः।
वायुम् आ रोह धर्मणा॥7॥

484. पवमानो अजीजनत्,
दिवः चित्रम् न तन्यतुम्।
ज्योतिः वैश्वानरम् बृहत्॥8॥

485. परि स्वानास इन्दवो,
मदाय बर्हणा गिरा।
मधो अर्षन्ति धारया॥9॥

486. परि प्रासिष्यदत् कविः,
सिन्धोः ऊर्मौ अधि श्रितः।
कारुम् बिभ्रत् पुरुस्पृहम्॥10॥

(51) सूक्त 3

487. उप उ षु जातम् अप्तुरम्,
गोभिः भङ्गम् परिष्कृतम्।
इन्दुम् देवा अयासिषुः॥1॥

488. पुनानो अक्रमीत् अभि,
विश्वा मृधो विचर्षणिः।
शुम्भन्ति विप्रम् धीतिभिः॥2॥

489. आविशन् कलशम् सुतो,
विश्वा अर्षन् अभि श्रियः।
इन्दुः इन्द्राय धीयते॥3॥

490. असर्जि रथ्यो यथा,
पवित्रे चम्वोः सुतः।
कार्ष्मन् वाजी न्यक्रमीत्॥4॥

491. प्र यत् गावो न भूर्णयः,
त्वेषा अयासो अक्रमुः।
घ्नन्तः कृष्णाम् अप त्वचम्॥5॥

492. अप घ्नन् पवसे मृधः,
क्रतुवित् सोम मत्सरः।
नुदस्व अदेवयुम् जनम्॥6॥

493. अया पवस्व धारया,
यया सूर्यम् अरोचयः।
हिन्वानो मानुषीः अपः॥7॥

494. स पवस्व य आविथ,
इन्द्रम् वृत्राय हन्तवे।
वव्रिवांसम् महीः अपः॥8॥

495. अया वीती परि स्रव,
यः त इन्दो मदेषु आ।
अवाहन् नवतीः नव॥9॥

496. परि द्युक्षम् सनद्रयिम्,
भरत् वाजम् नो अन्धसा।
स्वानो अर्ष पवित्र आ॥10॥

(52) सूक्त 4

497. अचिक्रदत् वृषा हरिः,
महान् मित्रो न दर्शतः।
सम् सूर्येण दिद्युते॥1॥

498. आ ते दक्षम् मयोभुवम्,
वह्निम् अद्य आ वृणीमहे।
पान्तम् आ पुरुस्पृहम्॥2॥

499. अध्वर्यो अद्रिभिः सुतम्,
सोमम् पवित्र आ नय।
पुनाहि इन्द्राय पातवे॥3॥

500. तरत् स मन्दी धावति,
धारा सुतस्य अन्धसः।
तरत् स मन्दी धावति॥4॥

501. आ पवस्व सहस्रिणम्,
रयिम् सोम सुवीर्यम्।
अस्मे श्रवांसि धारय॥5॥

502. अनु प्रत्नास आयवः,
पदम् नवीयो अक्रमुः।
रुचे जनन्त सूर्यम्॥6॥

503. अर्षा सोम द्युमत्तमो,
अभि द्रोणानि रोरुवत्।
सीदन् योनौ वनेषु आ॥7॥

504. वृषा सोम द्युमान् असि,
वृषा देव वृषव्रतः।
वृषा धर्माणि दध्रिषे॥8॥

505. इषे पवस्व धारया,
मृज्यमानो मनीषिभिः।
इन्दो रुचा अभि गा इहि॥9॥

506. मन्द्रया सोम धारया,
वृषा पवस्व देवयुः।
अव्या वारेभिः अस्मयुः॥10॥

507. अया सोम सुकृत्यया,
महान् सन् अभ्यवर्धथाः।
मन्दान इत् वृषायसे॥11॥

508. अयम् विचर्षणिः हितः,
पवमानः स चेतति।
हिन्वान आप्यम् बृहत्॥12॥

509. प्र न इन्दो महे तु,
न ऊर्मि न बिभ्रत् अर्षसि।
अभि देवान् अयास्यः॥13॥

510. अपघ्नन् पवते मृधो,
अप सोमो अराव्णः।
गच्छन् इन्द्रस्य निष्कृतम्॥14॥

(53) सूक्त 5

511. पुनानः सोम धारया,
अपो वसानो अर्षसि।
आ रत्नधा योनिम् ऋतस्य,
सीदसि उत्सो देवो हिरण्ययः॥1॥

512. परि इतो षिञ्चता सुतम्,
सोमो य उत्तमम् हविः।
दधन्वान् यो नर्यो अप्सु,
अन्तः आ सुषाव सोमम् अद्रिभिः॥2॥

513. आ सोम स्वानो अद्रिभिः,
तिरो वाराणि अव्यया।
जनो न पुरि चम्वो विंशत्,
हरिः सदो वनेषु दध्रिषे॥3॥

514. प्र सोम देववीतये,
सिन्धुः न पिप्ये अर्णसा।
अंशोः पयसा मदिरो न,
जागृविः अच्छा कोशम् मधुश्चुतम्॥4॥

515. सोम उ ष्वाणः सोतृभिः,
अधि ष्णुभिः अवीनाम्।
अश्वया इव हरिता याति धारया,
मन्द्रया याति धारया॥5॥

516. तव अहम् सोम रारण,
सख्य इन्दो दिवेदिवे।
पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति माम् अव,
परिधीन् रति तान् इहि॥6॥

517. मृज्यमानः सुहस्त्या,
समुद्रे वाचम् इन्वसि।
रयिम् पिशङ्गम् बहुलम् पुरुस्पृहम्,
पवमान अभि अर्षसि॥7॥

518. अभि सोमास आयवः,
पवन्ते मद्यम् मदम्।
समुद्रस्य अधि विष्टपे,
मनीषिणो मत्सरासो मदच्युतः ॥8॥

519. पुनानः सोम जागृविः,
अव्या वारैः परि प्रियः।
त्वम् विप्रो अभवो अङ्गिरस्तम,
मध्वा यज्ञम् मिमिक्ष णः ॥9॥

520. इन्द्राय पवते मदः,
सोमो मरुत्वते सुतः।
सहस्त्रधारो अति अव्यम्,
अर्षति तम् ईम् मृजन्ति आयवः ॥10॥

521. पवस्व वाजसातमो,
अभि विश्वानि वार्या।
त्वम् समुद्रः प्रथमे विधर्मन्,
देवेभ्यः सोम मत्सरः ॥11॥

522. पवमाना असृक्षत,
पवित्रम् अति धारया।
मरुत्वन्तो मत्सरा इन्द्रिया हया,
मेधाम् अभि प्रयांसि च ॥12॥

(54) सूक्त 6

523. प्र तु द्रव परि कोशम् नि षीद,
नृभिः पुनानो अभि वाजम् अर्ष।
अश्वम् न त्वा वाजिनम् मर्जयन्तो,
अच्छा बर्ही रशनाभिः नयन्ति ॥1॥

524. प्र काव्यम् उशनेव ब्रुवाणो,
देवो देवानाम् जनिम् आ विवक्ति।
महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः,
पदा वराहो अभ्येति रेभन् ॥2॥

525. तिस्त्रो वाच ईरयति प्र वह्निः,
ऋतस्य धीतिम् ब्रह्मणो मनीषाम्।
गावो यन्ति गोपतिम् पृच्छमानाः,
सोमम् यन्ति मतयो वावशानाः ॥3॥

526. अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो,
देवो देवेभिः समपृक्त रसम्॥
सुतः पवित्रम् पर्येति रेभन्,
मितेव सद्म पशुमन्ति होता ॥4॥

527. सोमः पवते जनिता मतीनाम्,
जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः।
जनिता अग्नेः जनिता सूर्यस्य,
जनित इन्द्रस्य जनितोत विष्णोः ॥5॥

528. अभि त्रिपृष्ठम् वृषणम् वयोधाम्,
अङ्गोषिणम् अवावशन्त वाणीः।
वना वसानो वरुणो न सिन्धुः,
वि रत्नधा दयते वार्यणि॥6॥

529. अक्रान् समुद्रः प्रथमे विधर्मन्,
जनयन् प्रजा भुवनस्य गोपाः।
वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये,
बृहत् सोमो वावृधे स्वानो अद्रिः॥7॥

530. कनिक्रन्ति हरिः आ सृज्यमानः,
सीदन् वनस्य जठरे पुनानः।
नृभिः यतः कृणुते निर्णिजम् गाम्,
अतो मतिम् जनयत स्वधाभिः॥8॥

531. एष स्य ते मधुमान् इन्द्र सोमो,
वृषा वृष्णः परि पवित्रे अक्षाः।
सहस्त्रदाः शतदा भूरिदावा,
शश्वत्तमम् बर्हि आ वाजी अस्थात्॥9॥

532. पवस्व सोम मधुमान् ऋतावा अपो,
वसानो अधि सानो अव्ये।
अव द्रोणानि घृतवन्ति रोह,
मदिन्तमो मत्सर इन्द्रपानः॥10॥

(55) सूक्त 7

533. प्र सेनानीः शूरो अग्ने रथानाम्,
गव्यन् एति हर्षते अस्य सेना।
भद्रान् कृण्वन् इन्द्रहवान सखिभ्य,
आ सोमो वस्त्रा रभसानि दत्ते॥1॥

534. प्र ते धारा मधुमतीः असृग्रन्,
वारम् यत् पूतो अत्येषि अव्यम्।
पवमान पवसे धाम गोनाम्,
जनयन् सूर्यम् अपिन्वो अर्कैः॥2॥

535. प्र गायता अभ्यर्चाम देवान्,
सोमम् हिनोत महते धनाय।
स्वादुः पवताम् अति वारम्,
अव्यम आ सीदत् कलशम् देव इन्दुः॥3॥

536. प्र हिन्वानो जनिता रोदस्यो,
रथो न वाजम् सनिषन् अयासीत्।
इन्द्रम् गच्छन् आयुधा संशिशानो,
विश्वा वसु हस्तयोः आदधानः॥4॥

537. तक्षत् यदी मनसो वेनतो वाग्,
ज्येष्ठस्य धर्मन् द्युक्षोः अनीके।
आत् ईम् आयन् वरम आ वावशाना,
जुष्टम् पतिम् कलशे गाव इन्दुम्॥5॥

538. साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारो,
दश धीरस्य धीतयो धनुत्रीः ॥
हरिः पर्यद्रवत् जाः सूर्यस्य,
द्रोणम् ननक्षे अत्यो न वाजी ॥6॥

539. अधि यत् अस्मिन् वाजिनीव शुभः,
स्पर्धन्ते धियः सूरे न विशः।
अपो वृणानः पवते कवीयान्,
व्रजम् न पशुवर्धनाय मन्म ॥7॥

540. इन्दुः वाजी पवते गोन्योघा,
इन्द्रे सोमः सह इन्वन् मदाय।
हन्ति रक्षो बाधते परि अरातिम्,
वरिवः कृण्वन् वृजनस्य राजा ॥8॥

541. अया पवा पवस्व एना वसूनि,
माँश्चत्व इन्दो सरसि प्र धन्व।
ब्रध्नः चिद्यस्य वातो न जूतिम्,
पुरुमेधाः चित् तकवे नर धात् ॥9॥

542. महत् तत् सोमो महिषः चकार अपाम्,
यत् गर्भो अवृणीत देवान् ।
अदधात् इन्द्रे पवमान ओजो
अजनयत् सूर्ये ज्योतिः इन्दुः ॥10॥

543. असर्जि वक्वा रथ्ये यथा आजौ,
धिया मनोता प्रथमा मनीषा ।
दश स्वसारो अधि सानो अव्ये,
मृजन्ति वन्हिम् सदनेषु अच्छ ॥11॥

544. अपाम् इव ईत् ऊर्मयः तर्तुराणाः,
प्र मनीषा ईरते सोममच्छ।
नमस्यन्तीः उप च यन्ति सम्,
चाच विशन्ति उशतीः उशन्तम् ॥12॥

(56) सूक्त 8

545. पुरोजिती वो अन्धसः,
सुताय मादयित्नवे।
अप श्वानम् श्नथिष्टन,
सखायो दीर्घजिह्व्यम् ॥1॥

546. अयम् पूषा रयिः भगः,
सोमः पुनानो अर्षति।
पतिः विश्वस्य भूमनो,
व्यख्यत् रोदसी उभे ॥2॥

547. सुतासो मधुमत्तमाः,
सोमा इन्द्राय मन्दिनः।
पवित्र वन्तो अक्षरन्,
देवान् गच्छन्तु वो मदाः ॥3॥

548. सोमाः पवन्त इन्दवो,
अस्मभ्यम् गातुवित्तमाः।
मित्राः स्वाना अरेपसः,
स्वाध्यः स्वर्विदः ॥4॥

549. अभी नो वाज सातमम्,
रयिम् अर्ष शतस्पृहम्।
इन्दो सहस्त्र भर्णसम्,
तुविद्युम्नम् विभासहम् ॥5॥

550. अभी नवन्ते अद्रुहः,
प्रियम् इन्द्रस्य काम्यम्।
वत्सम् न पूर्व आयुनि,
जातम् रिहन्ति मातरः ॥6॥

551. आ हर्यताय धृष्णवे,
धनुः तन्वन्ति पौंस्यम्।
शुक्रा वि यन्ति असुराय,
निर्णिजे विपाम् अग्रे महीयुवः ॥7॥

552. परि त्यम् हर्यतम् हरि,
बभ्रुम् पुनन्ति वारेण।
यो देवान् विश्वान् इत् परि,
मदेन सह गच्छति ॥8॥

553. प्र सुन्वानाय अन्धसो,
मर्त्तो न वष्ट तद्वचः।
अप श्वानम् अराधसम्,
हता मखम् न भृगवः ॥9॥

(57) सूक्त 9

554. अभि प्रियाणि पवते चनोहितो,
नामानि यह्वो अधि येषु वर्धते।
आ सूर्यस्य बृहतो बृहन् अधि,
रथम् विश्वञ्चम् अरुहद् विचक्षणः ॥1॥

555. अचोदसो नो धन्वन्तु इन्दवः,
प्र स्वानासो बृहद् देवेषु हरयः।
वि चित् अश्नाना इषयो अरातयो,
अर्यो नः सन्तु सनिषन्तु नो धियः ॥2॥

556. एष प्र कोशे मधुमान् अचिक्रदत्,
इन्द्रस्य वज्रो वपुषो वपुष्टमः।
अभि ऋतस्य सुदुघा घृश्चुतो,
वाश्रा अर्षन्ति पयसा च धनेवः ॥3॥

557. प्रो अयासीत् इन्दु इन्द्रस्य निष्कृतम्,
सखा सख्युः न प्र मिनाति संगिरम्।
मर्यइव युवतिभिः समर्षति,
सोमः कलशे शतयामना पथा ॥4॥

558. धर्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसो,
दक्षो देवानाम् अनुमाद्यो नृभिः।
हरि सृजानो अत्यो न सत्वभिः,
वृथा पाजांसि कृणुषे नदीष्वा ॥5॥

559. वृषा मतीनाम् पवते विचक्षणः,
सोमो अन्हाम् प्रतरीता उषसाम् दिवः।
प्राणा सिन्धूनाम् कलशाम् अचिकदत्,
इन्द्रस्य हार्दि अविशन् मनीषिभिः ॥6॥

560. त्रिः अस्मै सप्त धेनवो दुदुह्रिरे,
सत्याम् अशिरम् परमे व्योमनि।
चत्वारि अन्या भुवनानि निर्णिजे,
चारूणि चक्रे यद् ऋतैः अवर्धत ॥7॥

561. इन्द्राय सोम सुषुतः परि स्रव,
अप अमीवा भवतु रक्षसा सह।
मा ते रसस्य मत्सत द्वयाविनो,
द्रविणस्वन्त इह सन्तु इन्दवः ॥8॥

562. असावि सोमो अरुषो वृषा हरी,
राज इव दस्मो अभि गा अचिक्रदत्।
पुनानो वारम् अत्येषि अयव्यम्,
श्येनो न योनिम् घृतवन्तम् आसदत् ॥9॥

563. प्र देवम् अच्छा मधुमन्त इन्दवो,
असिष्यदन्त गाव आ न धेनवः।
बर्हिषदो वचनावन्त ऊधभिः,
परिस्त्रुतम् उस्त्रिया निर्णिजम् धिरे ॥10॥

564. अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते,
क्रतुम् रिहन्ति मध्वा अभ्यञ्जते।
सिन्धोः उच्छ्वासे पतयन्तम् उक्षणम्,
हिरण्यपावाः पशुम् अप्सु गृभ्णते ॥11॥

565. पवित्रम् ते विततम् ब्रह्मणस्पते,
प्रभुः गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूः न तदामो अश्नुते,
शृतास इद् वहन्तः सम् तद् आशत ॥12॥

(58) सूक्त 10

566. इन्द्रम् अच्छ सुता इमे,
वृषणम् यन्तु हरयः।
श्रुष्टे जातास इन्दवः स्वर्विदः ॥1॥

567. प्र धन्वा सोम जागृवि,
इन्द्राय इन्द्रो परि स्रव ।
द्युमन्तम् शुष्मम् आभर स्वर्विदम् ॥2॥

568. सखाय आ नि षीदत,
पुनानाय प्र गायत।
शिशुम् न यज्ञैः परि भूषत श्रिये ॥3॥

569. तम् वः सखायो मदाय,
पुनानम् अभि गायत।
शिशुम् न हव्यैः स्वदयन्त गूर्तिभिः ॥4॥

570. प्राणा शिशुः महीनाम्,
हिन्वन् ऋतस्य दीधितिम्।
विश्व परि प्रिया भुवत् अध द्विता ॥5॥

571. पवस्व देववीतय,
इन्दो धाराभिः ओजसा।
आ कलशम् मधुमान् सोम नः सदः ॥6॥

572. सोमः पुनान ऊर्मिणा,
अव्यम् वारम् वि धावति।
अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत् ॥7॥

573. प्र पुनानाय वेधसे,
सोमाय वच उच्यते ।
भृतिम् न भरा मतिभिः जुजोषते ॥8॥

574. गोमत् न इन्द्रो अश्ववत्,
सुतः सुदक्ष धनिव।
शुचिम् च वर्णम् अधि गोषु धारय ॥9॥

575. अस्मभ्यम् त्वा वसुविदम्,
अभि वाणीः अनूषत।
गोभिः वर्णम् अभि वासयामसि ॥10॥

576. पवते हर्यतो हरिः,
अति ह्वरांसि रंह्या।
अभ्यर्ष स्तोतृभ्यो वीरवत् यशः ॥11॥

577. परि कोशम् मधुश्चुतम्,
सोमः पुनानो अर्षति।
अभि वाणीः ऋषीणाम् सप्ता अनूषत ॥12॥

(59) सूक्त 11

578. पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय,
सोम क्रतुवित्तमो मदः।
महि द्युक्षतमो मदः ॥1॥

579. अभि द्युम्नम् बृहत् यश,
इषस्पते दिदीहि देव देवयुम्।
वि कोशम् मध्यमम् युव ॥2॥

580. आ सोता परि षिञ्चत अश्वम्,
न स्तोमम अप्तुरम् रजस्तुरम्।
वनप्रक्षम् उदप्रुतम्॥3॥

581. एतम् उ त्यम् मदच्युतम्,
सहस्रधारम् वृषभम् दिवो दुहम्।
विश्वा वसूनि बिभ्रतम्॥4॥

582. स सुन्वे यो वसूनाम् यो,
रायाम् आनेता य इडानाम्।
सोमो यः सुक्षितीनाम्॥5॥

583. त्वम् ह्य अङ्ग दैव्यम्,
पवमान जनिमानि द्युमत्तमः।
अमृतत्वाय घोषयन्॥6॥

584. एष स्य धारया सुतो अव्या,
वारेभिः पवते मदिन्तमः।
क्रीडन् ऊर्मि अपाम् इव 7॥

585. य उस्रिया अपि या अन्तः,
अश्मनि निर्गा अकृन्तत् ओजसा।
अभि व्रजम् तत्निषे गव्यम्,
अश्व्यम् वर्मीव धृष्णव आरुज।
ओ3म् वर्मीव धृष्णव आरुज॥8॥

इति पञ्चमो अध्यायः

ॐ

अथ षष्ठो अध्यायः

आरण्यम् पर्वम् काण्डम् वा

(60) सूक्त 1

586. इन्द्र ज्येष्ठम् न आ भर,
ओजिष्ठम् पु पुरि श्रवः।
यत् दिधृक्षेम वज्रहस्त,
रोदसी उभे सुशिप्र पप्राः ॥1॥

587. इन्द्रो राजा जगतः चर्षणीनाम्,
अधि क्षमा विश्व रूपम् यत् अस्य।
ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोदत्,
राध उपस्तुतम् चित् अर्वाक् ॥ 2 ॥

588. यस्य इदम् आ रजोयुजः,
तुजे जने वनम् स्वः।
इन्द्रस्य रन्त्यम् बृहत् ॥3॥

589. उत उत्तमम् वरुण पाशम् अस्मत्,
अवा अधमम् वि मध्यमम् श्रथाय।
अथ आदित्य व्रते वयम्,
तव अनागसो अदितये स्याम ॥4॥

590. त्वया वयम् पवमानेन सोम,
भरे कृतम् वि चिनुयाम शश्वत्।
तत् नो मित्रो वरुणो मामहन्ताम्,
अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥5॥

591. इमम् वृषणम् कृणुत,
एकम् इत् माम् ॥6॥

592. स न इन्द्राय यज्यवे,
वरुणाय मरुद्भ्य।
वरिवोवित् परिस्रव ॥7॥

593. एना विश्वानि अर्य आ,
द्युम्नानि मानुषाणाम्।
सिषासन्तो वनामहे ॥8॥

594. अहम् अस्मि प्रथमजा ऋतस्य,
पूर्व देवेभ्यो अमृतस्य नाम।
यो मा ददाति स इत् एवम् आवत्,
अहम् अन्नम् अन्नम् अदन्तम् अद्मि ॥9॥

(61) सूक्त 2

595. त्वम् एतत् अधारयः,
कृष्णासु रोहिणीषु च।
परुष्णीषु रुशत् पयः ॥1॥

596. अरूरुचत् उषसः पृश्निः अग्रिय,
उक्षा मिमेति भुवनेषु वाजयुः।
मायाविनो ममिरे अस्य मायया,
नृचक्षसः पितरो गर्भम् आदधुः॥2॥

597. इन्द्र इत् हर्योः,
सचा सम्मिश्ल आ वचोयुजा।
इन्द्रो वज्री हिरण्ययः॥3॥

598. इन्द्र वाजेषु नो,
अव सहस्त्रप्रधनेषु च।
उग्र उग्राभिः ऊतिभिः॥4॥

599. प्रथः च यस्य सप्रथः च नाम,
आनुष्टुभस्य हविषो हविः यत्।
धातुः द्युतानात् सवितुः च विष्णो,
रथन्तरम् आ जभारा वसिष्ठः॥5॥

600. नियुत्वान् वायो आगहि,
अयम् शुक्रो अयामि ते।
गन्तासि सुन्वतो गृहम्॥6॥

601. यत् जायथा अपूर्व्य,
मघवन् वृत्रहत्याय।
तत् पृथिवीम् अप्रथयः,
तत् अस्तभ्ना उतो दिवम्॥7॥

(62) सूक्त 3

602. मयि वर्चो अथो यशो,
अथो यज्ञस्य यत् पयः।
परमेष्ठी प्रजापतिः,
दिवि द्यामिव दृहंतु॥1॥

603. सम् ते पयांसि सम उ यन्तु वाजाः,
सम् वृष्ण्यानि अभिमातिषाहः।
आप्यायमानो अमृताय सोम,
दिवि श्रवांसि उत्तमानि धिष्व॥2॥

604. त्वम् इमा ओषधीः सोम विश्वा,
त्वम् अपो अजनयः त्वम् गाः।
त्वम् आतनो उरुर्वा अन्तरिक्षम्,
त्वम् ज्योतिषा वि तमो ववर्थ॥3॥

605. अग्निम् ईडे पुरोहितम्,
यज्ञस्य देवम् ऋत्विजम्।
होतारम् रत्नधातमम्॥4॥

606. ते मन्वत प्रथमम् नाम गोनाम्,
त्रिः सप्त परमम् नाम जानन्।
ता जानतीः अभ्यनूषत क्षा,
आविर्भुवन् अरुणीः यशसा गावः ॥5॥

607. सम् अन्या यन्ति उपयन्ति अन्याः,
समानम् ऊर्वम् नद्यः पृणन्ति।
तम् उ शुचिम् शुचयो दीदिवांसम्,
अपान्नपातम उप यन्ति आपः ॥6॥

608. आ प्रागाद् भद्रा युवतिः,
अह्नः केतून् समीर्त्सति।
अभूद् भद्रा निवेशनी,
विश्वस्य जगतो रात्री ॥7॥

609. प्रक्षस्य वृष्णो अरुषस्य नू महः,
प्र नो वचो विदथा जातवेदसे।
वैश्वानराय मतिः नव्यसे शुचिः,
सोम इव पवते चारुः अग्नये ॥8॥

610. विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यज्ञम्,
उभे रोदसी अपाम् नपाच्च मन्म।
मा वो वचांसि परिचक्ष्याणि वोचम्,
सुम्नेषु इत् वो अन्तमा मदेम ॥9॥

611. यशो मा द्यावा-पृथिवी,
यशो मा इन्द्र-बृहस्पती।
यशो भगस्य विन्दतु,
यशो मा प्रतिमुच्यताम्।
यशस्वी अस्याः संसदो,
अहम् प्रवदिता स्याम् ॥10॥

612. इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्रवोचम्,
यानि चकार प्रथमानि वज्री।
अहन् अहिम् अनु अपः ततर्द,
प्र वक्षणा अभिनत् पर्वतानाम् ॥11॥

613. अग्निः अस्मि जन्मना जातवेदा,
घृतम् मे चक्षुः अमृतम् म आसन्।
त्रिधातुः अर्को रजसो विमानो
अजस्त्रम् ज्योतिः हविः अस्मि सर्वम् ॥12॥

614. पाति अग्नि विपो अग्रम् पदम् वेः
पाति यह्वः चरणम् सूर्यस्य।
पाति नाभा सप्तशीर्षाणम् अग्निः,
पाति देवानाम् उपमादम् ऋष्वः ॥13॥

(63) सूक्त 4

615. भ्राजन्ती अग्ने समिधान दीदिवो,
जिव्हा चरति अन्तः आसनि।
स त्वम् नो अग्ने पयसा,
वसुवित रयिम् वर्चो दृशे दाः ॥1॥

616. वसन्त इत् नु रन्त्यो,
ग्रीष्म इत् नु रन्त्यः।
वर्षाणि अनु शरदो हेमन्तः,
शिशिर इत् नु रन्त्यः ॥2॥

617. सहस्त्रशीर्षाः पुरुषः,
सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिम् सर्वतो वृत्वा,
अत्यतिष्ठत् दशाङ्गुलम् ॥3॥

618. त्रिपात् उर्ध्व उदैत् पुरुषः,
पादो अस्य इह अभवत् पुनः।
तथा विष्वङ् व्यक्रामत्,
अशनानशने अभि ॥4॥

619. पुरुष एव इदम् सर्वम्,
यत् भूतम् यत् भाव्यम्।
पादो अस्य सर्वा भूतानि,
त्रिपात् अस्य अमृतम् दिवि ॥5॥

620. तावान् अस्य महिमा,
ततो ज्यायान् च पूरुषः।
उत अमृतत्वस्य ईशानो,
यत् अन्ने अतिरोहति ॥6॥

621. ततो विराट् अजायत,
विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत,
पश्चात् भूमिम् अथो पुरः ॥7॥

622. मन्ये वाम् द्यावापृथिवी सुभोजसौ,
ये अप्रथेथाम् अमितम् अभि योजनम्।
द्यावापृथिवी भवतम् स्योने,
ते नो मुञ्चतम् अंहसः ॥8॥

623. हरी त इन्द्र श्मश्रूणि,
उतो ते हरितौ हरी।
तम् त्वा स्तुवन्ति कवयः,
पुरुषासो वनर्गवः ॥9॥

624. यत् वर्चो हिरण्यस्य,
यत् वा वर्चो गवाम् उत।
सत्यस्य ब्रह्मणो वर्चः,
तेन मा सम् सृजामसि ॥10॥

625. सहः तत् न इन्द्र दद्धि ओज ईशे,
हि अस्य महतो विरप्शिन्।
क्रतुम् न नृम्णम् स्थविरम् च वाजम्,
वत्रेषु शत्रून् सहना कृधि नः ॥11॥

626. सहर्षभाः सहवत्सा उदेत,
विश्वा रूपाणि बिभ्रतीः द्व्यूध्नीः।
उरुः पृथुः अयम् वो अस्तु लोक,
इमा आपः सुप्रपाणा इह स्त ॥12॥

(64) सूक्त 5

627. अग्न आयूँषि पवस आ,
सुव ऊर्जम् इषम् च नः।
आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥1॥

628. विभ्राड् बृहत् पिबतु सोम्यम्,
मधु आयुः दधत् यज्ञपतौ अविह्रुतम्।
वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना,
प्रजाः पिपर्ति बहुधा वि राजति ॥2॥

629. चित्रम् देवानाम् उदगात् अनीकम्,
चक्षुः मित्रस्य वरुणस्य अग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षम्,
सूर्य आत्मा जगतः तस्थुषः च ॥3॥

630. आ अयम् गौः पृश्निः अक्रमीत्,
असदत् मातरम् पुरः।
पितरम् च प्रयन् स्वः ॥4॥

631. अन्तः चरति रोचना,
अस्य प्राणात् अपानती।
व्यख्यत् महिषो दिवम् ॥5॥

632. त्रिंशद्धाम वि राजति,
वाक् पतङ्गाय धीयते।
प्रति वस्तोः अह द्युभिः ॥6॥

633. अप त्ये तायवो यथा,
नक्षत्रा यन्ति अक्तुभिः।
सूराय विश्वचक्षसे ॥7॥

634. अदृश्रन् अस्य केतवो,
वि रश्मयो जनान् अनु।
भ्राजन्तो अग्नयो यथा ॥8॥

635. तरणिः विश्वदर्शतो,
ज्योतिष्कृत् असि सूर्य।
विश्वम् आभासि रोचनम् ॥9॥

636. प्रत्यङ् देवानाम् विशः,
प्रत्यङ् उदेषि मानुषान्।
प्रत्यङ् विश्वम् स्वः दृशे ॥10॥

637. येना पावक चक्षसा,
भुरण्यन्तम् जनान् अनु।
त्वम् वरुण पश्यसि ॥11॥

638. उत् द्याम एषि रजः,
पृथु अहा मिमानो अक्तुभिः।
पश्यन् जन्मानि सूर्य ॥12॥

639. अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः,
सूरो रथस्य नप्त्र्यः।
ताभिः याति स्वयुक्तिभिः ॥13॥

640. सप्त त्वा हरितो रथे,
वहन्ति देव सूर्य।
शोचिष्केशं विचक्षण ॥14॥

पूर्वार्चिकः समाप्तः

(65) सूक्त 6

महानाम्न्यार्चिकः

641. विदा मघवन् विदा,
गातुम् अनुशंसिषो दिशः।
शिक्षा शचीनाम् पते,
पूर्वीणाम् पूरूवसो ॥1॥

642. आभि त्वम् अभिष्टिभिः,
स्वाः न अंशुः।
प्रचेतन प्रचेतय इन्द्र,
द्युम्नाय न इषे ॥2॥

643. एवा हि शक्रो राये,
वाजाय वज्रिवः।
शविष्ठ वज्रिन्न ऋञ्जसे,
मंहिष्ठ वज्रिन्न ऋञ्जसे,
आ याहि पिब मत्स्व ॥3॥

644. विदा राये सुवीर्यम् भुवो,
वाजानाम् पतिः वशान् अनु,
महिष्ठ वज्रिन्न ऋञ्जसे,
यः शाविष्ठः शूराणाम् ॥4॥

645. यो मंहिष्ठो मघोनाम्,
अंशुः न शोचिः।
चिकित्वो अभि नो नय इन्द्रो,
विदे तम् उ स्तहि॥5॥

646. ईशे हि शक्रः तम् ऊतये,
हवामहे जेतारम् अपराजितम्।
स नः स्वर्षत् अति द्विषः,
क्रतुः छन्द ऋतम् बृहत्॥6॥

647. इन्द्रम् धनस्य सातये,
हवामहे जेतारम् अपराजितम्।
स नः स्वर्षत् द्विषः,
स नः स्वर्षत् अति द्विषः॥7॥

648. पूर्वस्य यत्ते अद्रिवों अशुः मदाय।
सुम्न आ धेहि नो वसो।
पूर्तिः शविष्ठ शस्यते।
वशी हि शक्रो नूनं,
तत् नव्यम् संन्यसे॥8॥

649. प्रभो जनस्य वृत्रहन्,
सम अर्येषु ब्रवावहै।
शूरो यो गोषु गच्छति,
सखा सुशेवो अद्वयुः॥9॥

650. एव आ हि एव।
एवाम् हि अग्ने।
एव आ हि इन्द्र।
एव आ हि पूषन्।
एव आ हि देवाः॥10॥

इति षष्ठो अध्यायः

ॐ

उत्तरार्चिकः

सप्तमो अध्यायः

(66) सूक्त 1

651. उप अस्मै गायता,
नरः पवमानाय इन्दवे।
अभि देवा इयक्षते॥1॥

652. अभि ते मधुना पयो,
अथर्वाणो अशिश्रयुः।
देवम् देवाय देवयुः॥2॥

653. स नः पवस्व शम् गवे,
शम् जनाय शम् अर्वते।
शम् राजान् ओषधीभ्यः॥3॥

(67) सूक्त 2

654. दविद्युतत्या रुचा,
परिष्टोभन्त्या कृपा।
सोमाः शुक्रा गवाशिरः ॥1॥

655. हिन्वानो हेतृभिः हित,
आ वाजम् वाजी अक्रमीत् ।
सीदन्तो वनुषो यथा॥2॥

656. ऋधक् सोम स्वस्तये,
संजग्मानो दिवा कवे।
पवस्य सूर्यो दृशे॥3॥

(68) सूक्त 3

657. पवमानस्य ते कवे,
वाजिन् सर्गा असृक्षत।
अर्वन्तो न श्रवस्यवः॥1॥

658. अच्छा कोशम् मधुश्चुतम्,
असृग्रम् वारे अव्यये।
अवावशन्त धीतयः॥2॥

659. अच्छा समुद्रम् इन्दवो,
अस्तम् गावो न धेनवः।
आ अग्मन् न ऋतस्य योनिमा॥3॥

(69) सूक्त 4

660. अग्न आ याहि वीतये,
गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि॥1॥

661. तम् त्वा समिद्भिः अङ्गिरो,
घृतेन वर्धयामसि।
ब्रहत् शोच यविष्ठ्य॥2॥

662. स नः पृथु श्रवाय्यम्,
अच्छा देव विवाससि।
बृहत् अग्ने सुवीर्यम् ॥3॥

(70) सूक्त 5

663. आ नो मित्रावरुणा,
धृतैः गव्यूतिम् उक्षतम्।
मध्वा रजांसि सुक्रतू ॥1॥

664. उरुशंसा नमोवृधा,
मह्ना दक्षस्य राजथः।
द्राघिष्ठाभिः शुचिव्रता ॥2॥

665. गृणाना जमदग्निना,
योनौ ऋतस्य सीदतम्।
पातम् सोमम् ऋतावृधा ॥3॥

(71) सूक्त 6

666. आ याहि सुषुमा हि त,
इन्द्र सोमम् पिबा इमम्।
एदम् बर्हिः सदो मम ॥11॥

667. आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी,
वहताम् इन्द्र केशिना।
उप ब्रह्माणि नः शृणु ॥2॥

668. ब्रह्माणः त्वा युजा वयम्,
सोमपाम् इन्द्र सोमिनः।
सुतावन्तो हवामहे ॥3॥

(72) सूक्त 7

669. इन्द्राग्नी आ गतम् सुतम्,
गीर्भिः नभो वरेण्यम्।
अस्य पातम् धिया इषिता ॥1॥

670. इन्द्राग्नी जरितुः सचा,
यज्ञो जिगाति चेतनः।
अया पातम् इमम् सुतम् ॥2॥

671. इन्द्रम् अग्निम् कविच्छदा,
यज्ञस्य जूत्या वृणे।
ता सोमस्य इह तृम्पताम् ॥3॥

(73) सूक्त 8

672. उच्चा ते जातम् अन्धसो,
दिवि सद्भूम्या ददे।
उग्रम् शर्म महि श्रवः ॥1॥

673. स न इन्द्राय यज्यवे,
वरुणाय मरुद्भ्य।
वरिवोवित् परिस्रव ॥2॥

674. एना विश्वानि अर्य आ,
द्युम्नानि मानुषाणाम्।
सिषासन्तो वनामहे॥3॥

(74) सूक्त 9

675. पुनानः सोम धारया,
अपो वसानो अर्षसि।
आ रत्नधा योनिम् ऋतस्य,
सीदसि उत्सो देवो हिरण्ययः॥1॥

676. दुहान ऊधः दिव्यम् मधु,
प्रियम् प्रत्नम् सधस्थम् आसदत्।
आपृच्छ्यम् धरुणम् वाजी,
अर्षसि नृभिः धौतो विचक्षणः॥2॥

(75) सूक्त 10

677. प्र तु द्रव परि कोशम् नि षीद,
नृभिः पुनानो अभि वाजम् अर्ष।
अश्वम् न त्वा वाजिनम् मर्जयन्तो,
अच्छा बर्ही रशनाभिः नयन्ति॥1॥

678. स्वायुधः पवते देव इन्दुः,
अशस्तिहा वृजना रक्षमाणः।
पिता देवानाम् जनिता सुदक्षो,
विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्याः॥2॥

679. ऋषिः विप्रः पुर एता जनानाम्,
ऋभुः धीर उशना काव्येन।
स चित् विवेद निहितम् यत् आसाम्,
अपीच्यम् गुह्यम् नाम गोनाम्॥3॥

(76) सूक्त 11

680. अभि त्वा शूर नोनुमो,
अदुग्धा इव धेनवः।
ईशानम् अस्य जगतः,
स्वर्दृशम् ईशानम् इन्द्र तस्थुषः॥1॥

681. न त्वावान् अन्यो दिव्यो,
न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते।
अश्वायन्तो मघवन् इन्द्र वाजिनो,
गव्यन्तः त्वा हवामहे॥2॥

(77) सूक्त 12

682. कया नः चित्र आ भुवत्,
उती सदावृधः सखा।
कया शचिष्ठया वृता॥1॥

683. कस्त्वा सत्यो मदानाम्,
मंहिष्ठो मत्सत् अन्धसः।
दृढा चित् आरुजे वसु॥2॥

684. अभी षु णः सखीनाम्,
अविता जरितृणाम्।
शतम् भवासि ऊतये ॥3॥

(78) सूक्त 13

685. तम् वो दस्मम् ऋतीषहम्,
वसोः मन्दानम् अन्धसः।
अभि वत्सम् न स्वसरेषु धेनव,
इन्द्रम् गीर्भिः नवामहे ॥1॥

686. द्युक्षम् सुदानुम् तविषीभिः,
आवृतम् गिरिम् न पुरुभोजसम्।
क्षुमन्तम् वाजम् शतिनम् सहस्त्रिणम्,
मक्षू गोमन्तम् ईमहे ॥2॥

(79) सूक्त 14

687. तरोभिः वो विदद्वसुम्,
इन्द्रम् सबाध ऊतये।
बृहद् गायन्तः सुतसोमे,
अध्वरे हुवे भरम् न कारिणम्।1॥

688. न यम् दुध्रा वरन्ते न,
स्थिरा मुरो मदेषु शिप्रम् अन्धसः।
य आदृत्या शशमानाय,
सुन्वते दाता जरित्र उक्थ्यम्॥2॥

(80) सूक्त 15

689. स्वादिष्ठया मदिष्ठया,
पवस्व सोम धारया।
इन्द्राय पातवे सुतः ॥1॥

690. रक्षोहा विश्वचर्षणिः,
अभि योनिम् अयोहते।
द्रोणे सधस्थम् असदत्॥2॥

691. वरिवोधातमो भुवो,
मंहष्ठो वृत्रहन्तमः।
पर्षि राधो मघोनाम्॥3॥

(81) सूक्त 16

692. पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय,
सोम क्रतुवित्तमो मदः।
महि द्युक्षतमो मदः ॥1॥

693. यस्य ते पीत्वा वृषभो,
वृषायते अस्य पीत्वा स्वर्विदः।
स सुप्रकेतो अभ्यक्रमीत्,
इषो अच्छा वाजम् नैतशः ॥2॥

(82) सूक्त 17

694. इन्द्रम् अच्छ सुता,
इमे वृषणम् यन्तु हरयः।
श्रुष्टे जातास इन्दवः स्वर्विदः ॥1॥

695. अयम् भराय सानसिः,
इन्द्राय पवते सुतः।
सोमो जैत्रस्य चेतति यथा विदे ॥2॥

696. अस्य इन्द्रो मदेषु आ,
ग्राभम् गृभ्णाति सानसिम्।
वज्रम् च वृषणम् भरत् सम अप्सुजित् ॥3॥

(83) सूक्त 18

697. पुरोजिती वो अन्धसः,
सुताय मादयित्नवे।
अप श्वानम् श्नथिष्टन,
सखायो दीर्घजिह्व्यम् ॥1॥

698. यो धारया पावकया,
परि प्रस्यन्दते सुतः।
इन्दुः अश्वो न कृत्व्यः ॥2॥

699. तम् दुरोषम् अभी नरः,
सोमम् विश्वाच्या धिया ।
यज्ञाय सन्तु अद्रयः ॥3॥

(84) सूक्त 19

700. अभि प्रियाणि पवते चनोहितो,
नामानि यह्वो अधि येषु वर्धते।
आ सूर्यस्य बृहतो बृहन् अधि,
रथम् विष्वञ्चम् अरुहद् विचक्षणः ॥1॥

701. ऋतस्य जिह्वा पवते मधु प्रियम्,
वक्ता पतिः धियो अस्या अदाभ्यः।
दधाति पुत्रः पित्रोः अपीच्याम्,
नाम तृतीयम् अधि रोचनम् दिवः ॥2॥

702. अव द्युतानः कलशान् अचिक्रदत्,
नृभिः येमाणः कोश आ हिरण्यये।
अभी ऋतस्य दोहना अनूषताधि,
त्रिपृष्ठ उषसो वि राजसि ॥3॥

(85) सूक्त 20

703. यज्ञा यज्ञा वो अग्नये,
गिरा गिरा च दक्षसे।
प्र प्रवयम् अमृतम् जातवेदसम्,
प्रियम् मित्रम् न शंसिषम् ॥1॥

704. ऊर्जो नपातम् स हिनायम,
अस्मयुः दाशेम हव्यदातये।
भुवत् वाजेषु अविता भुवद्,
वृध उत त्राता तनूनाम् ॥2॥

(86) सूक्त 21

705. एहि ऊ षु ब्रवाणि,
ते अग्न इत्थेतरा गिरः।
एभिः वर्धासि इन्दुभिः ॥1॥

706. यत्र क्व च ते मनो,
दक्षम् दधस उत्तरम्।
तत्र योनिम् कृणवसे ॥2॥

707. न हि ते पूर्तम् अक्षिपद्,
भुवत् नेमानाम् पते।
अथा दुवो वनवसे ॥3॥

(87) सूक्त 22

708. वयम् उ त्वाम् अपूर्व्य स्थूरम्,
न कच्चित् भरन्तो वस्यवः।
वज्रिन् चित्रम् हवामहे ॥1॥

709. उप त्वा कर्मन् न ऊतये,
स नो युवो उग्रः चक्राम यो धृषत्।
त्वाम् इतहि अवितारम् ववृमहे,
सखाय इन्द्र सानसिम् ॥2॥

(88) सूक्त 23

710. अधा हि इन्द्र गिर्वण,
उप त्वा काम ईमहे ससृग्महे।
उदेव ग्मन्त उदभिः ॥1॥

711. वार्ण त्वा यव्याभिः,
वर्धन्ति शूर ब्रह्माणि।
वावृध्वांसम् चित् अद्रिवो दिवे दिवे ॥2॥

712. युञ्जन्ति हरी इषिरस्य गाथया,
ऊरौ रथ उरु युगे वचोयुजा॥
इन्द्रवाहा स्वर्विदा ॥3॥

इति सप्तमो अध्यायः

ॐ

अथ अष्टमो अध्यायः

(89) सूक्त 1

713. पान्तमा वो अन्धस,
इन्द्रम् अभि प्र गायत।
विश्वासाहम् शतक्रतुम्,
मंहिष्ठम् चर्षणीनाम्।1॥

714. पुरुहूतम् पुरुष्टुतम्,
गाथान्याम् सनश्रुतम्।
इन्द्र इति ब्रवीतन॥2॥

715. इन्द्र इत् नो महोनाम्,
दाता वाजानाम् नृतुः।
महान् अभिज्ञु आ यमत्॥3॥

(90) सूक्त 2

716. प्र व इन्द्राय मादनम्,
हर्यश्वाय गायत।
सखायः सोमपाव्ने॥1॥

717. शंस इत् उक्थम् सुदानव,
उत द्युक्षम् यथा नरः।
चकृमा सत्यराधसे॥2॥

718. त्वम् न इन्द्र वाजयुः,
त्वम् गव्युः शतक्रतो।
त्वम् हिरण्ययुः वसो॥3॥

(91) सूक्त 3

719. वयम् उ त्वा तदिदर्था,
इन्द्र त्वायन्तः सखायः।
कण्वा उक्थेभिः जरन्ते॥1॥

720. न घ ईम् अन्यत् आपपन,
वज्रिन् अपसो नविष्टौ।
तव इत् उ स्तोमैः चिकेत॥2॥

721. इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तम्,
न स्वप्नाय स्पृहयन्ति।
यन्ति प्रमादम् अतन्द्राः॥3॥

(92) सूक्त 4

722. इन्द्राय मद्वने सुतम्,
परि ष्टोभन्तु नो गिरः।
अर्कम् अर्चन्तु कारवः॥1॥

723. यस्मिन् विश्वा अधि श्रियो,
रणन्ति सप्त संसदः।
इन्द्रम् सुते हवामहे॥2॥

724. त्रिकद्रु केषु चेतनम्,
देवासो यज्ञम् अत्नत।
तम् इत् वर्धन्तु नो गिरः ॥3॥

(93) सूक्त 5

725. अयम् त इन्द्र सोमो,
निपूतो अधि बर्हिषि।
एही ईम् अस्य द्रवा पिब ॥1॥

726. शाचिगो शाचिपूजन,
अयम् रणाय ते सुतः।
आखण्डल प्र हूयसे ॥2॥

727. यस्ते श्रृङ्गवृषो णपात्,
प्रणपात् कुण्डपाय्यः।
नि अस्मिन् दध्र आ मनः ॥3॥

(94) सूक्त 6

728. आ तू न इन्द्र क्षुमन्तम्,
चित्रम् ग्राभम् सम् गृभाय।
महाहस्ती दक्षिणेन ॥1॥

729. विद्मा हि त्वा तुविकूर्मिम्,
तुविदष्णम् तुवीमघम्।
तुविमात्रम् अवोभिः ॥2॥

730. न हि त्वा शूर देवा,
न मर्तासो दित्सन्तम्।
भीमम् न गाम् वारयन्ते ॥3॥

(95) सूक्त 7

731. अभि त्वा वृषभा सुते,
सुतम् सृजामि पीतये।
तृम्पा व्यश्नुही मदम् ॥1॥

732. मा त्वा मूरा अविष्यवो,
मा उपहस्वान आ दभन्।
मा कीम् ब्रह्मद्विषम् वनः ॥2॥

733. इह त्वा गोपरीणसम्,
महे मन्दन्तु राधसे।
सरो गौरो यथा पिब ॥3॥

(96) सूक्त 8

734. इदम् वसो सुतम् अन्धः,
पिबा सुपूर्णम् उदरम्।
अनाभयिन् ररिमा ते ॥1॥

735. नृभिः धौतः सुतो अश्नैः,
अव्या वारैः परिपूतः।
अश्वो न निक्तो नदीषु ॥2॥

736. तम् ते यवम् यथा गोभिः,
स्वादुम् अकर्म श्रीणन्तः।
इन्द्र त्वा अस्मिन् सधमादे ॥3॥

(97) सूक्त 9

737. इदम् हि अनु ओजसा,
सुतम् राधानाम् पते।
पिबा त्वा अस्य गिर्वणः॥1॥

738. यः ते अनु स्वधाम् असत्,
सुते नि यच्छ तन्वम्।
स त्वा ममत्तु सोम्य॥2॥

739. प्र ते अश्नोतु कुक्ष्योः,
प्रेन्द्र ब्रह्यणा शिरः।
प्र बाहू शूर राधसा॥3॥

(98) सूक्त 10

740. आ तु इत आ नि षीदत्,
इन्द्र मभि प्र गायत।
सखाय स्तोमवाहसः॥1॥

741. पुरूतमम् पुरूणाम,
ईशानम् वार्याणाम्।
इन्द्रम् सोम सचा सुते॥2॥

742. स घा नो योग आ भुवत्,
स राये स पुरन्ध्या।
गमद् वाजेभिः आ स नः॥3॥

(99) सूक्त 11

743. योगे योगे तवस्तरम्,
वाजे वाजे हवामहे।
सखाय इन्द्रम् ऊतये॥1॥

744. अनु प्रत्नस्य औकसो,
हुवे तुविप्रतिम् नरम्।
यम् ते पूर्वम् पिता हुवे॥2॥

745. आ घा गमत् यदि श्रवत्,
सहस्त्रिणीभिः ऊतिभिः।
वाजेभिः उप नो हवम्॥3॥

(100) सूक्त 12

746. इन्द्र सुतेषु सोमेषु,
क्रतम् पुनीष उक्थ्यम्।
विदे वृधस्य दक्षस्य महान् हि षः॥1॥

747. स प्रथमे व्योमनि,
देवानाम् सदने वृधः।
सुपारः सुश्रवस्तमः समप्सुजित्॥2॥

748. तम उ हुवे वाजसातय,
इन्द्रम् भराय शुष्मिणम्।
भवा नः सुम्ने अन्तमः सखा वृधे ।।3।।

(101) सूक्त 13

749. एना वो अग्निम् नमसा,
ऊर्जो नपातम् आ हुवे।
प्रियम् चेतिष्ठम् अरतिम् स्वध्वरम्,
विश्वस्य दूतम् अमृतम् ।।1।।

750. स योजते अरुषा विश्वभोजसा,
स दुद्रवत् स्वाहुतः।
सुब्रह्मा यज्ञः सुशमी वसूनाम्,
देवम् राधो जनानाम् ।।2।।

(102) सूक्त 14

751. प्रति अदर्शि आयती,
ऊच्छन्ती दुहिता दिवः।
अहो मही वृणुते चक्षुषा,
तमो ज्योतिः कृणोति सूनरी।।1।।

752. उदुस्त्रिया सृजते सूर्यः सचा,
उद्यन् नक्षत्रम् अचिवत्।
तव इत् उषो व्युषि सूर्यस्य,
च सम् भक्तेन गमेमहि ।।2।।

(103) सूक्त 15

753. इमा उ वाम् दिविष्टय,
उस्त्रा हवन्ते अश्विना।
अयम् वाम् अह्वे अवसे,
शचीवसू विशंविशम् हि गच्छथः ।।1।।

754. युवम् चित्रम् ददथुः भोजनम्,
नरा चोदेथाम् सूनृतावते।
अर्वाक् रथम् समनसा,
नि यच्छतम् पिबतम् सोम्यम् मधु ।।2।।

(104) सूक्त 16

755. अस्य प्रत्नाम् अनु द्युतम्,
शक्रम् दुदुह्रे अह्रयः।
पयः सहस्त्रसाम् ऋषिम् ।।1।।

756. अयम् सूर्य इव उपदृक्,
अयम् सरांसि धावति।
सप्त प्रवत आ दिवम् ।।2।।

757. अयम् विश्वानि तिष्ठति,
पुनानो भुवना उपरि ।
सोमो देवो न सूर्यः ।।3।।

(105) सूक्त 17

758. एष प्रत्नेन जन्मना,
देवो देवेभ्यः सुतः।
हरिः पवित्रे अर्षति ॥1॥

759. एष प्रत्नेन मन्मना,
देवो देवेभ्यः परि।
कविः विप्रेण वावृधे ॥2॥

760 दुहानः प्रत्नमित् पयः,
पवित्रे परि षिच्यसे।
क्रन्दम् देवान् अजीजनः ॥3॥

(106) सूक्त 18

761. उप शिक्षा अपतस्थुषो,
भियसम् आ धेहि शत्रवे।
पवमान विदा रयिम् ॥1॥

762. उपो षु जातम् अप्तुरम्,
गोभिः भङ्ंग परिष्कृतम्।
इन्दुम् देवा अयासिषुः ॥2॥

763. उप अस्मै गायता नरः,
पवमानाय इन्दवे।
अभि देवान् इयक्षते ॥3॥

(107) सूक्त 19

764. प्र सोमासो विपश्चितो,
अपो नयन्त ऊर्मयः।
वनानि महिषा इव ॥1॥

765. अभि द्रोणानि बभ्रवः,
शुक्रा ऋतस्य धारया।
वाजम् गोमन्तम् अक्षरन् ॥2॥

766. सुता इन्द्राय वायवे,
वरुणाय मरुद्भ्यः।
सोमो अर्षन्तु विष्णवे ॥3॥

(108) सूक्त 20

767. प्र सोम देववीतये,
सिन्धुः न पिप्ये अर्णसा।
अंशोः पयसा मदिरो न जागृविः,
अच्छा कोशम् मधुश्चुतम् ॥1।

768. आ हर्यतो अर्जुनो अत्के,
अव्यत प्रियः सूनुः न मर्ज्यः।
तम् ईम् हिन्वन्ति अपसो यथा,
रथम् नदीष्वा गभस्त्योः ॥2॥

(109) सूक्त 21

769\. प्र सोमासो मदच्युतः,
श्रवसे नो मघोनाम्।
सुता विदथे अक्रमूः ॥1॥

770\. आत् ईम् हंसो यथा गणम्,
विश्वस्य अवीवशत् मतिम्।
अत्यो न गोभिः अज्यते ॥2॥

771\. आत् ईम् त्रितस्य योषणो,
हरिम् हिन्वति अद्रिभिः।
इन्दुम् इन्द्राय पीतये ॥3 ॥

(110) सूक्त 22

772\. अया पवस्व देवयू रेभन्,
पवित्रम् पर्येषि विश्वतः।
मधोः धारा असृक्षत ॥1॥

773\. पवते हर्यतो हरिः,
अति ह्वरांसि रह्या।
अभ्यर्ष स्तोतृभ्यो वीरवत् यशः ॥2 ॥

774\. प्र सुन्वानाय अन्धसो,
मर्तो न वष्ट तद्वचः।
अप श्वानम् अराधसम्,
हता मखम् न भृगवः ॥3॥

इति अष्टमो अध्यायः

ॐ

अथ नवमो अध्यायः

(111) सूक्त 1

775. पवस्व वाचो अग्रियः,
सोम चित्राभिः ऊतिभिः।
अभि विश्वानि काव्या ॥1॥

776. त्वम् समुद्रिया अपो,
अग्रियो वाच ईरयन्।
पवस्व विश्वचर्षणे ॥2॥

777. तुभ्य इमा भुवना कवे,
महिम्ने सोम तस्थिरे।
तुभ्यम् धावन्ति धेनवः ॥3॥

(112) सूक्त 2

778. पवस्व इन्दो वृषा सुतः,
कृधि नो यशसो जने।
विश्वा अप द्विषो जहि ॥1॥

779. यस्य ते सख्ये वयम्,
सासह्याम पृतन्यतः।
तव इन्दो द्युम्न उत्तमे ॥2॥

780. या ते भीमानि आयुधा,
तिग्मानि सन्ति धूर्वणे।
रक्षा समस्य नो निदः ॥3॥

(113) सूक्त 3

781. वृषा सोम द्युमान् असि,
वृषा देव वृषव्रतः।
वृषा धर्माणि दध्रिषे ॥1॥

782. वृष्णः ते वृष्ण्यम् शवो,
वृषा वनम् वृषा सुतः।
स त्वम् वृषन् वृषेत् असि ॥2॥

783. अश्वो न चक्रदो वृषा,
सम् गा इन्दो सम् अर्वतः।
वि नो राये दुरो वृधि ॥3॥

(114) सूक्त 4

784. वृषा हि असि भानुना,
द्युमन्तम् त्वा हवामहे।
पवमान स्वर्दृशम् ॥1॥

785. यद् अद्भिः परिषिच्यसे,
मर्मृज्यमान आयुभिः।
द्रोणे सधस्थम् अश्नुषे ॥2॥

786. आ पवस्व सुवीर्यम्,
मन्दमानः स्वायुध।
इह उ सु इन्दो आ गहि॥3॥

(115) सूक्त 5

787. पवमानस्य ते वयम्,
पवित्रम् अभ्युन्दतः।
सखित्वम आ वृणीमहे॥1॥

788. ये ते पवित्रम् उर्मयो,
अभिक्षरन्ति धारया।
तेभिः नः सोम मृडय॥2॥

789. स नः पुनान आ भर,
रयिम् वीरवतीम् इषम्।
ईशानः सोम विश्वतः॥3॥

(116) सूक्त 6

790. अग्निम् दूतम् वृणीमहे,
होतारम् विश्ववेदसम्।
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्॥1॥

791. अग्निम् अग्निम् हवीमभिः,
सदा हवन्त विश्पतिम्।
हव्यवाहम् पुरुप्रियम्॥2॥

792. अग्ने देवान् इहा वह,
जज्ञानो वृक्तबर्हिषे।
असि होता न ईड्यः॥3॥

(117) सूक्त 7

793. मित्रम् वयम् हवामहे,
वरुणम् सोमपीतये।
या जाता पूतदक्षसा॥1॥

794. ऋतेन यौ ऋतावृधौ,
ऋतस्य ज्योतिषः पती।
ता मित्रावरुणा हुवे॥2॥

795. वरुणः प्राविता भुवन्,
मित्रो विश्वाभिः ऊतिभिः।
करताम् नः सुराधसः॥3॥

(118) सूक्त 8

796. इन्द्रम् इत् गाथिनो बृहत्,
इन्द्रम् अर्केभिः अर्किणः।
इन्द्रम् वाणीः अनूषत॥1॥

797. इन्द्र इत् हर्योः सचा,
सम्मिश्ल आ वचोयुजा।
इन्द्रो वज्री हिरण्ययः॥2॥

798. इन्द्र वाजेषु नो अव,
सहस्त्रप्रधनेषु च।
उग्र उग्राभिः ऊतिभिः ॥3॥

799. इन्द्रो दीर्घाय चक्षस,
आ सूर्यम् रोहयत् दिवि।
वि गोभिः अद्रिम्ः ऐरयत् ॥4॥

(119) सूक्त 9

800. इन्द्रे अग्ना नमो बृहत्,
सुवृक्तिम् आ ईरयामहे।
धिया धेना अवस्यवः ॥1॥

801. ता हि शश्वन्त ईडत,
इत्था विप्रास ऊतये।
सबाधो वाजसातये ॥2॥

802. ता वाम् गीर्भिः विपन्युवः,
प्रयस्वन्तो हवामहे।
मेधसाता सनिष्यवः ॥3॥

(120) सूक्त 10

803. वृषा पवस्व धारया,
मरुत्वते च मत्सरः।
विश्वा दधान ओजसा ॥1॥

804. तम् त्वा धर्त्तारम् ओण्योः,
पवमान स्वर्दृशम्।
हिन्वे वाजेषु वाजिनम् ॥2॥

805. अया चित्तो विपान अया,
हरिः पवस्व धारया।
युजम् वाजेषु चोदय ॥3॥

(121) सूक्त 11

806. वृषा शोणो अभि कनिक्रदत्,
गा नदयन् एषि पृथिवीम् उत द्याम्।
इन्द्रस्य इव वग्नुः आ शृण्व आजौ,
प्रचोदयन् अर्षसि वाचम् इमाम् ॥1॥

807. रसाय्यः पयसा पिन्वमान,
ईरयन् एषि मधुमन्तम् अंशुम्।
पवमानः सन्तनिम् एषि कृण्वन्,
इन्द्राय सोम परिषिच्यमानः ॥2॥

808. एवा पवस्व मदिरो मदाय,
उदग्राभस्य नमयन् वधस्नुम् ॥
परि वर्णम् भरमाणो रुशन्तम्,
गव्युः नो अर्ष परि सोम सिक्तः ॥3॥

(122) सूक्त 12

809. त्वाम् इत् हि हवामहे,
सातौ वाजस्य कारवः।
त्वाम् वृत्रेषु इन्द्र सत्पतिम्,
नरः त्वाम् काष्ठासु अर्वतः॥1॥

810. स त्वम् नः चित्र वज्रहस्त,
धृष्णुया मह स्तवानो अद्रिवः।
गामः वम् रथ्यम् इन्द्र सम्,
किर सत्रा वाजम् न जिग्युषे॥2।

(123) सूक्त 13

811. अभि प्र वः सुराधसम्,
इन्द्रम् अर्च यथा विदे।
यो जरितृभ्यो मघवा पुरूवसुः,
सहस्त्रेणेव शिक्षति॥1॥

812. शतानीकेव प्र जिगाति धृष्णुया,
हन्ति वृत्राणि दाशुषे।
गिरेः इव प्र रसा अस्य,
पिन्विरे दत्राणि पुरुभोजसः॥2॥

(124) सूक्त 14

813. त्वाम् इदा ह्यो नरो,
अपीप्यन् वज्रिन् भूर्णयः।
स इन्द्र स्तोमवाहस,
इह श्रुधि उपा स्वसरम् आ गहि॥1॥

814. मत्स्वा सुशिप्रिन् हरिवः तम्,
ईमहे त्वया भूषन्ति वेधसः।
तव श्रवांसि युपमान्य उक्थ्य,
सुतेषु इन्द्र गिर्वणः॥2॥

(125) सूक्त 15

815. यः ते मदो वरेण्यः,
तेन आ पवस्व अन्धसा।
देवावीः अघशंसहा॥1॥

816. जघ्निः वृत्रम् अमित्रियम्,
सस्निः वाजम् दिवे दिवे।
गोषातिः अश्वसा असि॥2॥

817. सम्मिश्लो अरुषो भुवः,
सूपस्थाभिः न धेनुभिः।
सीदम् श्येनो न योनिमा॥3॥

(126) सूक्त 16

818. अयम् पूषा रयिः भगः,
सोमः पुनानो अर्षति।
पतिः विश्वस्य भूमनो,
व्यख्यत् रोदसी उभे॥1॥

819. सम् उ प्रिया अनूषत,
गावो मदाय घृष्वयः।
सोमासः कृण्वते पथः,
पवमानासः इन्दवः॥2॥

820. य ओजिष्ठः तम आ भर,
पवमान श्रवाय्यम्।
यः पञ्च चर्षणीः अभि,
रयिम् येन वानमहे॥3॥

(127) सूक्त 17

821. वृषा मतीनाम् पवते विचक्षणः,
सोमो अह्नाम् प्रतरीता उषसाम् दिवः।
प्राणा सिन्धूनाम् कलशान् अचिक्रत्,
इन्द्रस्य हार्दि आविशन् मनीषिभिः॥1॥

822. मनीषिभिः पवते पूर्व्यः कविः,
नृभिः यतः परि कोशान् असिष्यदत्।
त्रितस्य नाम जनयन् मधु क्षरन् इन्द्रस्य,
वायुम् सख्याय वर्धयन्॥2॥

823. अयम् पुनान उषसो अरोचयत् अयम्,
सिन्धुभ्यो अभवत् उन लोककृत।
अयम् त्रिः सप्त दुदुहान आशिरम्,
सोमो हृदे पवते चारु मत्सरः॥3॥

(128) सूक्त 18

824. एवा हि असि वीरयुः,
एवा शूर उत स्थिरः।
एवा ते राध्यम् मनः॥1॥

825. एवा रातिः तुवीमघ,
विश्वेभिः धायि धातृभिः।
अधा चित् इन्द्र नः सचा॥2॥

826. मा उ षु ब्रह्मव तन्द्रयुः,
भुवो वाजानाम् पते।
मत्स्वा सुतस्य गोमतः॥3॥

(129) सूक्त 19

827. इन्द्रम् विश्व अवीवृधन्,
समुद्रव्यचसम् गिरः।
रथीतमम् रथीनाम्,
वाजानाम् सत्पतिम् पतिम्॥1॥

828. सख्ये त इन्द्र वाजिनो,
मा भेम शवसस्पते।
त्वाम् अभि प्र नोनुमो,
जेतारम् अपराजितम्॥2॥

829. पूर्वीः इन्द्रस्य रातयो,
न वि दस्यन्ति ऊतयः।
यदा वाजस्य गोमत,
स्तोतृभ्यो मंहते मघम्॥3॥

इति नवमो अध्यायः

ॐ

अथ दशमो अध्यायः

(130) सूक्त 1

830. एत असृग्रम् इन्दवः,
तिरः पवित्रम् आशवः।
विश्वा अभि सौभगा॥1॥

831. विघ्नन्तो दुरिता पुरु,
सुगा तोकाय वाजिनः।
त्मना कृण्वन्तो अर्वतः॥2॥

832. कृण्वन्तो वरिवो गवे,
अभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम्।
इडाम् अस्मभ्यम् संयतम्॥3॥

(131) सूक्त 2

833. राजा मेधाभिः ईयते,
पवमानो मनो अधि।
अन्तरिक्षेण यातवे॥1॥

834. आ नः सोम सहो जुवो,
रूपम् न वर्चसे भर।
सुष्वाणो देववीतये॥2॥

835. आ न इन्दो शतग्विनम्,
गवाम् पोषम् स्वश्व्यम्।
वहा भगत्तिम् ऊतये॥3॥

(132) सूक्त 3

836. तम् त्वा नृम्णानि बिभ्रतम्,
सधस्थेषु महो दिवः।
चारुम् सुकृत्यया ईमहे॥1॥

837. संवृक्तधृष्णुम् उक्थ्यम्,
महामहिव्रतम् मदम्।
शतम् पुरो रुरुक्षणिम्॥2॥

838. अतः त्वा रयिः अभ्ययत्,
राजानम् सुक्रातो दिवः।
सुपर्णो अव्यथी भरत्॥3॥

839. अधा हिन्वान इन्द्रियम्,
ज्यायो महित्वम् आनशे।
अभिष्टिकृत् विचर्षणिः॥4॥

840. विश्वस्मा इत् स्वर्दृशे,
साधारणम् रजस्तुरम्।
गोपाम् ऋतस्य विः भरत्॥5॥

(133) सूक्त 4

841. इषे पवस्व धारया,
मृज्यमानो मनीषिभिः।
इन्दो रुचाभि गा इहि॥1॥

842. पुनानो वरिवः कृधि,
ऊर्जम् जनाय गिर्वणः।
हरे सृजान आशिरम्॥2॥

843. पुनानो देववीतय,
इन्द्रस्य याहि निष्कृतम्।
द्युतानो वाजिभिः हितः॥3॥

(134) सूक्त 5

844. अग्निना अग्निः समिध्यते,
कविः गृहपतिः युवा।
हव्यवाड् जुह्वास्यः॥1॥

845. यः त्वाम् अग्ने हविष्पतिः,
दूतम् देव सपर्यति।
तस्य स्म प्राविता भव॥2॥

846. यो अग्निम् देववीतये,
हविष्मान् आविवासति।
तस्मै पावक मृडय॥3॥

(135) सूक्त 6

847. मित्रम् हुवे पूतदक्षम्,
वरुणम् च रिशादसम्।
धियम् घृताचीम् साधन्ता ॥1॥

848. ऋतेन मित्रावरुणौ,
ऋतावृधौ ऋतस्पृशा।
क्रतुम् बृहन्तम् आशाथे ॥2॥

849. कवी नो मित्रावरुणा,
तुविजाता उरुक्षया।
दक्षम् दधाते अपसम् ॥3॥

(136) सूक्त 7

850. इन्द्रेण सम् हि दृक्षसे,
संजग्मानो अबिभ्युषा।
मन्दू समानवर्चसा ॥1॥

851. आद अह् स्वधाम् अनु,
पुनः गर्भत्वम् एरिरे।
दधाना नाम यज्ञियम् ॥2॥

852. वीडु चित् आरुजत्नुभिः,
गुहा चित् इन्द्र वह्निभिः।
अविन्द उस्त्रिया अनु ॥3॥

(137) सूक्त 8

853. ता हुवे ययोः इदम्,
पप्ने विश्वम् पुरा कृतम्।
इन्द्राग्नी न मर्धतः ॥1॥

854. उग्रा विघनिना मृध,
इन्द्राग्नी हवामहे।
ता नो मृडात ईदृशे ॥2॥

855. हथो वृत्राणि आर्या,
हथो दासानि सत्पती।
हथो विश्वा अप द्विषः ॥3॥

(138) सूक्त 9

856. अभि सोमास आयवः,
पवन्ते मद्यम् मदम्।
समुद्रस्य अधि विष्टपे,
मनीषिणो मत्सरासो मदच्युतः ॥1॥

857. तरत् समुद्रम् पवमान,
ऊर्मिणा राजा देव ऋतम् बृहत्।
अर्षा मित्रस्य वरुणस्य धर्मणा,
प्र हिन्वान ऋतम् बृहत् ॥2॥

858. नृभिः येमाणो हर्यतो विचक्षणो।
राजा देवः समुद्रयः ॥3॥

(139) सूक्त 10

859. तिस्त्रो वाच ईरयति प्र वह्निः,
ऋतस्य धीतिम् ब्रह्मणो मनीषाम्।
गावो यन्ति गोपतिम् पृच्छमानाः,
सोमम् यन्ति मतयो वावशानाः ॥1॥

860. सोमम् गावो धेनवो वावशानाः,
सोमम् विप्रा मतिभिः पृच्छमानाः।
सोमः सुत ऋच्यते पूयमानः,
सोमे अर्काः त्रिष्टुभः सम् नवन्ते ॥2॥

861. एवा नः सोम परिषिच्यमान,
आ पवस्व पूयमानः स्वस्ति।
इन्द्रम् आ विश बृहता मदेन,
वर्धया वाचम् जनया पुरन्धिम ॥3॥

(140) सूक्त 11

862. यत् द्याव इन्द्र ते शतम्,
शतम् भूमीः उत स्युः
न त्वा वज्रिन् सहस्रम्,
सूर्या अनु न जातम् अष्ट रोदसी ॥1॥

863. आ पप्राथ महिना वृष्ण्या,
वृषन् विश्वा शविष्ट शवसा।
अस्मान् अव मघवन् गोमति,
व्रजे वज्रिन् चित्राभिः ऊतिभिः ॥2॥

(141) सूक्त 12

864. वयम् घ त्वा सुतावन्त,
आपो न वृक्तबर्हिषः।
पवित्रस्य प्रस्त्रवणेषु,
वृत्रहन् परि स्तोतार आसते ॥1॥

865. स्वरन्ति त्वा सुते नरो,
वसो निः एक उक्थिनः।
कदा सुतम् तृषाण ओक,
आगम इन्द्र स्वब्दीव वंसगः ॥2॥

866. कण्वेभिः धृष्णवा धृषत्,
वाजम् दर्षि सहस्त्रिणम्।
पिशङ्गरूपम् मघवन् विचर्षणे,
मक्षू गोमन्तम् ईमहे ॥3॥

(142) सूक्त 13

867. तरणिः इत् सिषासति,
वाजम् पुरन्ध्या युजा।
आ व इन्द्रम् पुरुहूतम्,
नमे गिरा नेमिम् तष्टेव सुद्रुवम् ॥1॥

868. न दुष्टुतिः द्रविणोदेषु शस्यते,
न स्रेधन्तम् रयिः नशत्।
सुशक्तिः इत् मघवन् तुभ्यम्,
मावते देष्णम् यत् पार्ये दिवि॥2॥

(143) सूक्त 14

869. तिस्रो वाच उदीरते,
गावो मिमन्ति धेनवः।
हरिः एति कनिक्रदत्॥1॥

870. अभि बह्मीः अनूषत,
यह्वीः ऋतस्य मातरः।
मर्जयन्तीः दिवः शिशुम्॥2॥

871. रायः समुद्रान् चतुरो,
अस्मभ्यम् सोम विश्वतः।
आ पवस्व सहस्रिणः॥3॥

(144) सूक्त 15

872. सुतासो मधुमत्तमाः,
सोमा इन्द्राय मन्दिनः।
पवित्रवन्तो अक्षरम्,
देवान् गच्छन्तु वो मदाः॥1॥

873. इन्दुः इन्द्राय पवत,
इति देवासो अब्रुवन्।
वाचः पतिः मखस्यते,
विश्वस्य ईशान ओजसः॥2।

874. सहस्रधारः पवते,
समुद्रो वाचमीङ्खयः।
सोमः पती रयीणाम्,
सखा इन्द्रस्य दिवे दिवे॥3॥

(145) सूक्त 16

875. पवित्रम् ते विततम् ब्रह्मणस्पते,
प्रभुः गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूः न तत् आमो अश्नुते,
शृतास इत् वहन्तः सम् तत् आशत॥1॥

876. तपोः पवित्रम् विततम् दिवस्पदे,
अर्चन्तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन्।
अवन्ति अस्य पवितारम् आशवो,
दिवः पृष्ठम् अधि रोहन्ति तेजसा॥2॥

877. अरूरुचत् उषसः पृश्निः अग्रिय,
उक्षा मिमेति भुवनेषु वाजयुः।
मायाविनो ममिरे अस्य मायया,
नृचक्षसः पितरो गर्भम् आ दधुः॥3॥

(146) सूक्त 17

878. प्र मंहिष्ठाय गायत,
ऋताव्ने बृहते शुक्र शोचिषे।
उपस्तुतासो अग्नये ॥1॥

879. आ वसंते मघवा वीरवत्,
यशः समिद्धो द्युम्नी आहुतः।
कुवित् नो अस्य सुमातिः,
भवीयसी अच्छा वाजेभिः अगमत् ॥2॥

(147) सूक्त 18

880. तम् ते मदम् गृणीमसि,
वृषणम् पृक्षु सासहिम्।
उ लोककृत्नुम् अद्रिवो हरिश्रियम् ॥1॥

881. येन ज्योतींषि आयवे,
मनवे च विवेदिथ।
मन्दानो अस्य बर्हिषो वि राजासि ॥2॥

882. तद् अद्या चित् त उक्थिनो,
अनुष्टुवन्ति पूर्वथा।
वृषपत्नीः अपो जया दिवे दिवे ॥3॥

(148) सूक्त 19

883. श्रुधी हवम् तिरश्च्या,
इन्द्र यः त्वा सपर्यति।
सुवीर्यस्य गोमतो रायः,
पूर्धि महान् असि ॥1॥

884. यः त इन्द्र नवीयसीम्,
गिरम् मन्द्राम् अजीजनत्।
चिकित्विन्मनसम् धियम्,
प्रत्नाम् ऋतस्य पिप्युषीम् ॥2॥

885. तम् उ ष्टवाम यम् गिर,
इन्द्रम् उक्थ्यानि वावृधुः।
पुरूण्यस्य पौंस्या,
सिषासन्तो वनामहे ॥3॥

इति दशमो अध्यायः

ॐ

अथ एकादशो अध्यायः

(149) सूक्त 1

886. प्र त आश्विनीः पवमान धेनवो,
दिव्या असृग्रन् पयसा धरीमणि।
प्रान्तरिक्षात् स्थाविरीस्ते असृक्षत,
ये त्वा मृजन्ति ऋषिषाण वेधसः ॥1॥

887. उभयतः पवमानस्य रश्मयो,
ध्रुवस्य सतः परि यन्ति केतवः।
यदी पवित्रे अधि मृज्यते हरिः,
सत्ता नि योनौ कलशेषु सीदति ॥2॥

888. विश्वा धामानि विश्वचक्ष ऋभ्वसः,
प्रभोः ते सतः परि यन्ति केतवः।
व्यानशी पवसे सोम धर्मणा,
पतिः विश्वस्य भुवनस्य राजसि ॥3॥

(150) सूक्त 2

889. पवमानो अजीजनत्,
दिवः चित्रम् न तन्यतुम्।
ज्योतिः वैश्वानरम् बृहत् ॥1॥

890. पवमान रसस्तव,
मदो राजन् अदुच्छुनः।
वि वारम् अव्यम् अर्षति ॥2॥

891. पवमानस्य ते रसो,
दक्षो वि राजति द्युमान्।
ज्योतिः विश्वम् स्वर्दृशे ॥3॥

(151) सूक्त 3

892. प्र यद्गावो न भूर्णयः,
त्वेषा आयासो अक्रमुः।
घ्नन्तः कृष्णाम् अप त्वचम् ॥1॥

893. सुवितस्य वनामहे,
अति सेतुम् दुराय्यम्।
साह्याम दस्युम् अव्रतम् ॥2।

894. शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः,
पवमानस्य शुष्मिणः।
चरन्ति विद्युतो दिवि ॥3॥

895. आ पवस्व महीमिषम्,
गोमत् इन्दो हिरण्यवत्।
अश्ववत् सोम वीरवत्।4॥

896. पवस्व विश्वचर्षण,
आ मही रोदसी पृण।
उषाः सूर्यो न रश्मिभिः ॥5॥

897. परि णः शर्मयन्त्या,
धारया सोम विश्वतः।
सरा रसेव विष्टपम् ॥6॥

(152) सूक्त 4

898. आशुः अर्ष बृहन्मते,
परि प्रियेण धाम्ना।
यत्रा देवा इति ब्रुवन् ॥1॥

899. परिष्कृण्वन् अनिष्कृतम्,
जनाय यातयन्निषः।
वृष्टिम् दिवः परि स्रव ॥2॥

900. अयम् स यो दिवः,
परि रघुयामा पवित्र आ।
सिन्धोः ऊर्मा व्यक्षरत् ॥3॥

901. सुत एति पवित्र आ,
त्विषिम् दधान ओजसा।
विचक्षाणो विरोचयन् ॥4॥

902. आविवासन् परावतो,
अथो अर्वावतः सुतः।
इन्द्राय सिच्यते मधु ॥5॥

903. समीचीना अनूषत,
हरिम् हिन्वन्ति अद्रिभिः।
इन्दुम् इन्द्राय पीतये ॥6॥

(153) सूक्त 5

904. हिन्वन्ति सूरम् उस्रयः,
स्वसारो जामयः पतिम्।
महाम् इन्दुम् महीयुवः ॥1॥

905. पवमान रुचा रुचा,
देव देवेभ्यः सुतः।
विश्वा वसूनि आ विश ॥2॥

906. आ पवमान सुष्टुतिम्,
वृष्टिम् देवेभ्यो दुवः।
इषे पवस्व संयतम् ॥3॥

(154) सूक्त 6

907. जनस्य गोपा अजनिष्ट जागृविः,
अग्निः सुदक्षः सुविताय नव्यसे।
घृतप्रतीको बृहता दिविस्पृशा,
द्युमत् विभाति भरतेभ्यः शुचिः ॥1॥

908. त्वाम् अग्ने अंगिरसो गुहा हितम्,
अन्वविन्दन् शिश्रियाणम् वनेवने।
स जायसे मथ्यमानः सहो,
महत् त्वाम् आहुः सहसः पुत्रम् अंगिरः ॥2॥

909. यज्ञस्य केतुम् प्रथमम् पुरोहितम्,
अग्निम् नरः त्रिषधस्थे समिन्धते।
इन्द्रेण देवैः सरथम् स बर्हिषि,
सीदन् नि होता यजथाय सुक्रतुः ॥3॥

(155) सूक्त 7

910. अयम् वाम् मित्रावरुणा,
सुतः सोम ऋतावृधा।
मम् इत् इह श्रुतम् हवम् ॥1॥

911. राजानौ अनभिद्रुहा,
ध्रुवे सदस्य उत्तमे।
सहस्त्रस्थूण आशाते ॥2॥

912. ता सम्राजा घृतासुती,
आदित्या दानुनः पती।
सचेते अनवह्वरम् ॥3॥

(156) सूक्त 8

913. इन्द्रो दधीचो अस्थभिः,
वृत्राणि अप्रतिष्कुतः।
जघान नवतीः नव ॥1॥

914. इच्छन् अश्वस्य यत् शिरः,
पर्वतेषु अपश्रितम्।
तत् विदत् शर्यणावति ॥2॥

915. अत्राह गोः अमन्वत,
नाम त्वष्टुः अपीच्यम्।
इत्था चन्द्रमसो गृहे ॥3॥

(157) सूक्त 9

916. इयम् वामस्य मन्मन,
इन्द्राग्नी पूर्व्यस्तुतिः।
अभ्रात् वृष्टि इव अजनि ॥1॥

917. शृणुतम् जरितुः हवम्,
इन्द्राग्नी वनतम् गिरः।
ईशाना पिप्यतम् धियः ॥2॥

918. मा पापत्वाय नो नरा,
इन्द्राग्नी मा अभिशस्तये।
मा नो रीरधतम् निदे ॥3॥

(158) सूक्त 10

919. पवस्व दक्षसाधनो,
देवेभ्यः पीतये हरे।
मरुद्भ्यो वायवे मदः ॥1॥

920. सम् देवैः शोभते वृषा,
कविः योनौ अधि प्रियः।
पवमानो अदाभ्यः ॥2॥

921. पवमान धिया हितो,
अभि योनिम् कनिक्रदत्।
धर्मणा वायुम् आरुहः ॥3॥

(159) सूक्त 11

922. तव अहम् सोम रारण,
सख्य इन्द्रो दिवे दिवे।
पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति माम्,
अव परिधीम् रति तान् इहि ॥1॥

923. तव अहम् नक्तम् उत सोम,
ते दिवा दुहानो बभ्र ऊधनि।
घृणा तपन्तम् अति सूर्यम्,
परः शकुना इव पप्तिम ॥2॥

(160) सूक्त 12

924. पुनानो अक्रमीत् अभि,
विश्वा मृधो विचर्षणिः।
शुम्भन्ति विप्रम् धीतिभिः ॥1॥

925. आ योनिम् अरुणो रुहत्,
गमत् इन्द्रो वृषा सुतम्।
ध्रुवे सदसि सीदतु ॥2॥

926. नू नो रयिम् महाम् इन्दो,
अस्मभ्यम् सोम विश्वतः।
आ पवस्व सहस्रिणम् ॥3॥

(161) सूक्त 13

927. पिबा सोमम् इन्द्र मन्दतु त्वा,
यम् ते सुषाव हर्यश्व आद्रिः।
सोतुः बाहुभ्याम् सुयतो नार्वा ॥1॥

928. यः ते मदो युज्यः चारुः अस्ति,
येन वृत्राणि हर्यश्व हंसि।
स त्वाम् इन्द्र प्रभूवसो ममत्तु ॥2॥

929. बोधा सु मे मघवन् वाचम् इमाम्,
याम् ते वसिष्ठो अर्चति प्रशस्तिम्।
इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्व ॥3॥

(162) सूक्त 14

930. विश्वाः पृतना अभिभूतरम् नरः,
सजूः ततक्षुः इन्द्रम् जजनुः च राजसे।
क्रत्वे वरे स्थेमनि आमुरीम् उत,
उग्रम् ओजिष्ठम् तरसम् तरस्विनम्॥1॥

931. नेमिम् नमन्ति चक्षसा,
मेषम् विप्रा अभिस्वरे।
सुदीतयो वो अद्रुहो अपि,
कर्णे तरस्विनः सम् ऋक्वभिः॥2॥

932. सम् उ रेभासो अस्वरन्,
इन्द्रम् सोमस्य पीतये।
स्वः पतिः यत् ई वृधे धृतव्रतो,
हि ओजसा सम् ऊतिभिः॥3॥

(163) सूक्त 15

933. यो राजा चर्षणीनाम्,
याता रथेभिः अध्रिगुः।
विश्वासाम् तरुता पृतनानाम्,
ज्येष्ठम् यो वृत्रहा गृणे॥1॥

934. इन्द्रम् तम् शुम्भ पुरुहन्मम्,
अवसे यस्य द्विता विधर्त्तरि।
हस्तेन वज्रः प्रतिधायि,
दर्शतो महान् देवो न सूर्यः॥2॥

(164) सूक्त 16

935. परि प्रिया दिवः कविः,
वयांसि नप्त्योः हितः।
स्वानैः याति कविक्रतुः॥1॥

936. स सूनुः मातरा शुचिः,
जातो जाते अरोचयत्।
महान् मही ऋतावृधा॥2॥

937. प्रप्र क्षयाय पन्यसे,
जनाय जुष्टो अद्रुहः।
वीति अर्ष पनिष्टये॥3॥

(165) सूक्त 17

938. त्वम् हि अङ्ग दैव्य पवमान,
जनिमानि द्युमत्तमः।
अमृतत्वाय घोषयन्॥1॥

940. येना नवग्वा दध्यङ् अपोर्णुते,
येन विप्रास आपिरे।
देवानाम् सुम्ने अमृतस्य,
चारुणो येन श्रवांसि आशत॥2॥

(166) सूक्त 18

940. सोमः पुनान ऊर्मिणा,
अव्यम् वारम् वि धावति।
अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत्॥1॥

941. धीभिः मृजन्ति वाजिनम्,
वने क्रीडन्तम् अत्यविम्।
अभि त्रिपृष्ठम् मतयः समस्वरन्॥2॥

942. असर्जि कलशान् अभि,
मीढ्वान् सप्तिः न वाजयुः।
पुनानो वाचम् जनयन् असिष्यदत्॥3॥

(167) सूक्त 19

943. सोमः पवते जनिता मतीनाम्,
जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः।
जनिता अग्नेः जनिता सूर्यस्य,
जनिता इन्द्रस्य जनिता उत विष्णोः॥1॥

944. ब्रह्मा देवानाम् पदवीः कवीनाम्,
ऋषिः विप्राणाम् महिषो मृगाणाम्।
श्येनो गृध्राणाम् स्वधितिः वनानाम्,
सोमः पवित्रम् अत्येति रेभन्॥2॥

945. प्रावीविपत् वाच ऊर्मिम् न सिन्धुः,
गिर स्तोमान् पवमानो मनीषाः।
अन्तः पश्यन् वृजनेम् आवराण्या,
तिष्ठति वृषभो गोषु जानन्॥3॥

(168) सूक्त 20

946. अग्निम् वो वृधन्तम्,
अध्वराणाम् पुरूतमम्।
अच्छा नप्त्रे सहस्वते॥1॥

947. अयम् यथा न आभुवत्,
त्वष्टा रूपा इव तक्ष्या।
अस्य क्रत्वा यशस्वतः॥2॥

948. अयम् विश्वा अभि श्रियो,
अग्निः देवेषु पत्यते।
आ वाजैः उप नो गमत्॥3॥

(169) सूक्त 21

949. इमम् इन्द्र सुतम् पिब,
ज्येष्ठम् अमर्त्यम् मदम्।
शुक्रस्य त्वा अभ्यक्षरन्,
धारा ऋतस्य सादने॥1॥

950. नकिष्टवत् रथीतरो,
हरी यत् इन्द्र यच्छसे।
न किष्ट्वानु मज्मना,
न किः स्वश्व आनशे ॥2॥

951. इन्द्राय नूनम् अर्चत,
उक्थानि च ब्रवीतन।
सुता अमत्सुः इन्दवो,
ज्येष्ठम् नमस्यता सहः ॥3॥

(170) सूक्त 22

952. इन्द्र जुषस्व प्र वहा,
याहि शूर हरिह।
पिबा सुतस्य मतिः न,
मधोः चकानः चारुः मदाय ॥1॥

953. इन्द्र जठरम् नव्यम् न,
पृणस्व मधोः दिवो न।
अस्य सुतस्य स्वार्न उप,
त्वा मदाः सुवाचो अस्थुः ॥2॥

954. इन्द्रः तुराषाट् मित्रो न,
जघान वृत्रम् यति न।
बिभेद बलम् भृगुः न,
ससाहे शत्रून् मदे सोमस्य ॥3॥

इति एकादशो अध्यायः

ॐ

अथ द्वादशो अध्यायः

(171) सूक्त 1

955. गो वित् पवस्व वसुवित् हिरण्यवित्,
रेतोधा इन्दो भुवनेषु अर्पितः।
त्वम् सुवीरो असि सोम विश्ववित् तम्,
त्वा नरः उप गिरेम आसते ॥1॥

956. त्वम् नृचक्षा असि सोम विश्वतः,
पवमान वृषभ ता वि धावसि।
स नः पवस्व वसुमत् हिरण्यवत्,
वयम् स्याम भुवनेषु जीवसे ॥2॥

957. ईशान इमा भुवनानि ईयसे,
युजान इन्दो हरितः सुपर्ण्यः।
ताः ते क्षरन्तु मधुमत् घृतम् पयः,
तव व्रते सोम तिष्ठन्तु कृष्टयः ॥3॥

(172) सूक्त 2

958. पवमानस्य विश्ववित्,
प्र ते सर्गा असृक्षत।
सूर्यस्येव न रश्मयः ॥1॥

959. केतुं कृण्वन् दिवस्परि,
विश्वा रूपा अभ्यर्षसि।
समुद्रः सोम पिन्वसे ॥2॥

960. जज्ञानो वाचम् इष्यसि,
पवमान विधर्मणि।
क्रन्दन् देवो न सूर्यः ॥3॥

(173) सूक्त 3

961. प्र सोमासो अधन्विषुः,
पवमानास इन्दवः।
श्रीणाना अप्सु वृञ्जते ॥1॥

962. अभि गावो अधन्विषुः,
आपो न प्रवता यतीः।
पुनाना इन्द्रम् आशत ॥2॥

963. प्र पवमान धन्वसि,
सोम इन्द्राय मादनः।
नृभिः यतो वि नीयते ॥3॥

964. इन्दो यत् अद्रिभिः सुतः,
पवित्रम् परि दीयसे।
अरम् इन्द्रस्य धाम्ने ॥4॥

965. त्वम् सोम नृमादनः,
पवस्व चर्षणीधृतिः।
सस्निः यो अनुमाद्यः ॥5॥

966. पवस्व वृत्रहन्तम,
उक्थेभिः अनुमाद्यः।
शुचिः पावको अद्भुतः ॥6॥

967. शुचिः पावकउच्यते,
सोमः सुतः सः मधुमान्।
देवावीः अघशंसहा ॥7॥

(174) सूक्त 4

968. प्र कविः देववीतये,
अव्या वारेभिः अव्यत।
साह्वान् विश्वा अभि स्पृधः ॥1॥

969. स हि ष्म आ जरितृभ्य,
आ वाजम् गोमन्तम् इन्वति।
पवमानः सहस्त्रिणम् ॥2॥

970. परि विश्वानि चेतसा,
मृज्यसे पवसे मती।
स नः सोम श्रवो विदः ॥3॥

971. अभ्यर्ष बृहत् यशो,
मघवद्भ्यो ध्रुवम् रयिम्।
इषम् स्तोतृभ्य आ भर॥4॥

972. त्वम् राजेव सुव्रतो,
गिरः सोम आ विवेशिथ।
पुनानो वह्ने अद्भुत॥5॥

973. स वह्निः अप्सु दुष्टरो,
मृज्यमानो गभस्त्योः।
सोमः चमूषु सीदति॥6॥

974. क्रीडुः मखो न मंहयुः,
पवित्रम् सोम गच्छसि।
दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम्॥7॥

(175) सूक्त 5

975. यवम् यवम् नो अन्धसा,
पुष्टम् पुष्टम् परि स्रव।
विश्वा च सोम सौभगा॥1॥

976. इन्दो यथा तव स्तवो,
यथा ते जातम् अन्धसः।
नि बर्हिषि प्रिये सदः॥2॥

977. उत नो गोवित् अश्ववित्,
पवस्व सोम अन्धसा।
मक्षूतमेभिः अहभिः॥3॥

978. यो जिनाति न जीयते,
हन्ति शत्रुम् अभीत्य।
स पवस्व सहस्रजित्॥4॥

(176) सूक्त 6

979. याः ते धारा मधुश्च्युतो,
असृग्रम् इन्द ऊतये।
ताभिः पवित्रम् आसदः॥1॥

980. सो अर्ष इन्द्राय पीतये,
तिरो वाराणि अव्यया।
सीदन् ऋतस्य योनिम् आ॥2॥

981. त्वम् सोम परि स्रव,
स्वादिष्ठो अङ्गिरोभ्यः।
वरिवोविद् घृतम् पयः।3॥

(177) सूक्त 7

982. तव श्रियो वर्ष्यस्य इव विद्युतो,
अग्ने चिकित्र उषसाम् इव एतयः।
यत् ओषधीः अभि सृष्टो वनानि च,
परि स्वयं चिनुषे अन्नम् आसनि॥1॥

983. वातोपजूत इषितो वशान् अनु,
तृषु यत् अन्ना वेविषत् वितिष्ठसे।
आ ते यतन्ते रथ्यो यथा पृथक्,
शर्धांसि अग्ने अजरस्य धक्षतः ॥2॥

984. मेधाकारम् विदथस्य प्रसाधनम्,
अग्निम् होतारम् परिभूतरम् मतिम्।
त्वाम् अर्भस्य हविषः समानम् इत्,
त्वाम् महो वृणते नान्यम् त्वत् ॥3॥

(178) सूक्त 8

985. पुरूरुणा चित् हि अस्ति,
अवो नूनम् वाम् वरुण।
मित्र वंसि वाम् सुमतिम् ॥1॥

986. ता वाम् सम्यक् अद्रुह्वाणा,
इषम् श्याम धाम च।
वयम् वाम् मित्रा स्याम ॥2॥

987. पातम् नो मित्रा पायुभिः,
उत त्रायेथाम् सुत्रात्रा।
साह्याम दस्यून् तनूभिः ॥3॥

(179) सूक्त 9

988. उत्तिष्ठन् ओजसा सह,
पीत्वा शिप्रे अवेपयः।
सोमम् इन्द्र चमू सुतम् ॥1॥

989. अनु त्वा रोदसी उभे,
स्पर्धमान मदेताम्।
इन्द्र यत् दस्युहा भवः ॥2॥

990. वाचम् अष्टापदीम् अहम्,
नवस्रक्तिम् ऋतावृधम्।
इन्द्रात् परि तन्वम् ममे ॥3॥

(180) सूक्त 10

991. इन्द्राग्नी युवाम् इमे,
अभि स्तोमा अनूषत।
पिबतम् शम्भुवा सुतम् ॥1॥

992. या वाम् सन्ति पुरुस्पृहो,
नियुतो दाशुषे नरा।
इन्द्राग्नी ताभिः आ गतम् ॥2॥

993. ताभिः आ गच्छतम् नरा,
उप इदम् सवनम् सुतम्।
इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥3॥

(181) सूक्त 11

994. अर्षा सोम द्युमत्तमो,
अभि द्रोणानि रोरुवत्।
सीदन् योनौ वनेषु आ ॥1॥

995. अप्सा इन्द्राय वायवे,
वरुणाय मरुद्भ्यः।
सोमा अर्षन्तु विष्णवे ॥2॥

996. इषम् तोकाय नो दधत्,
अस्मभ्यम् सोम विश्वतः।
आ पवस्व सहस्त्रिणम् ॥3॥

(182) सूक्त 12

997. सोम उ ष्वाणः सोतृभिः,
अधि ष्णुभिः अवीनाम्।
अश्वया इव हरिता याति धारया,
मन्द्रया याति धारया ॥1॥

998. अनूपे गोमान् गोभिः अक्षाः,
सोमो दुग्धाभिः अक्षाः।
समुद्रम् न संवरणानि अग्मन्,
मन्दी मदाय तोशते ॥2॥

(183) सूक्त 13

999. यत् सोम चित्रम् उक्थ्यम्,
दिव्यम् पार्थिवम् वसु।
तत् नः पुनान आ भर ॥1॥

1000. वृषा पुनान आयूंषि,
स्तनयन् अधि बर्हिषि।
हरिः सन् योनिम् आसदः ॥2॥

1001. युवम् हि स्थः स्वःपती,
इन्द्रः च सोम गोपती।
ईशाना पिप्यतम् धियः ॥3॥

(184) सूक्त 14

1002. इन्द्रो मदाय वावृधे,
शवसे वृत्रहा नृभिः।
तम् इत् महत्सु आजिषु,
ऊतिम् अर्भे हवामहे,
स वाजेषु प्र नो अविषत् ॥1॥

1003. असि हि वीर सेन्यो,
असि भूरि परादिदः।
असि दभ्रस्य चित् वृधो,
यजमानाय शिक्षसि,
सुन्वते भूरि ते वसु ॥2॥

1004. यत् उदीरत आजयः,
धृष्णवे धीयते धनम्।
युंक्ष्व आ मदच्युता हरी,
कम् हनः कम् वसौ दधो,
अस्मान् इन्द्र वसौ दधः ॥3॥

(185) सूक्त 15

1005. स्वादोः इत्था विषूवतो,
मधोः पिबन्ति गौर्यः।
या इन्द्रेण सयावरीः,
वृष्णा मदन्ति शोभथा,
वस्वीः अनु स्वराज्यम् ॥1॥

1006. ता अस्य पृशनायुवः,
सोमम् श्रीणान्ति पृश्नयः।
प्रिया इन्द्रस्य धेनवो,
वज्रम् हिन्वन्ति सायकम्,
वस्वीः अनु स्वराज्यम् ॥2॥

1007. ता अस्य नमसा सहः,
सपर्यन्ति प्रचेतसः।
व्रतानि अस्य सश्चिरे,
पुरूणि पूर्वचित्तये,
वस्वीः अनु स्वराज्यम् ॥3॥

(186) सूक्त 16

1008. असावि अंशुः मदाय,
अप्सु दक्षो गिरिष्ठाः।
श्येनो न योनिम् आसदत् ॥1॥

1009. शुभ्रम् अन्धो देववातम्,
अप्सु धौतम् नृभिः सुतम्।
स्वदन्ति गावः पयोभिः ॥2॥

1010. आत् ईम् अश्वम् न हेतारम्,
अशूशुभन् अमृताय।
मधो रसम् सधमादे ॥3॥

(187) सूक्त 17

1011. अभि द्युम्नम् बृहत् यश,
इषस्पते दिदीहि देव देवयुम्।
वि कोशम् मध्यमम् युव ॥1॥

1012. आ वच्यस्व सुदक्ष चम्वोः,
सुतो विशाम् वह्निः न विश्पतिः।
वृष्टिम् दिवः पवस्व रीतिम्,
अपो जिन्वन् गविष्टये धियः ॥2॥

(188) सूक्त 18

1013. प्राणा शिशुः महीनाम्,
हिन्वन् ऋतस्य दीधितिम्।
विश्वा परि प्रिया भुवत् अध द्विता ॥1॥

1014. उप त्रितस्य पाष्योः,
अभक्त यत् गुहा पदम्।
यज्ञस्य सप्त धामभिः अध प्रियम्॥2॥

1015. त्रीणि त्रितस्य धारया,
पृष्ठेषु ऐरयत् रयिम्।
मिमीते अस्य योजना वि सुक्रतः॥3॥

(189) सूक्त 19

1016. पवस्व वाजसातये,
पवित्रे धारया सुतः।
इन्द्राय सोम विष्णवे,
देवेभ्यो मधुमत्तरः॥1॥

1017. त्वाम् रिहन्ति धीतयो,
हरिम् पवित्रे अद्रुहः।
वत्सम् जातम् न मातरः,
पवमान विधर्मणि॥2॥

1018. त्वम् द्याम् च महिव्रत,
पृथिवीम् च अति जभ्रिषे।
प्रति द्रापिम् अमुञ्चथाः,
पवमान महित्वना॥3॥

(190) सूक्त 20

1019. इन्दुः वाजी पवते गोन्योघा,
इन्द्रे सोमः सह इन्वन् मदाय।
हन्ति रक्षो बाधते परि अरातिम्,
वरिवः कृण्वन् वृजनस्य राजा॥1॥

1020. अध धारया मध्वा पृचानः,
तिरो रोम पवते अद्रिदुग्धः।
इन्दुः इन्द्रस्य सख्यम् जुषाणो,
देवो देवस्य मत्सरो मदाय॥2॥

1021. अभि व्रतानि पवते पुनानो,
देवो देवान् स्वेन रसेन पृञ्चन्।
इन्दुः धर्माणि ऋतुथा वसानो,
दश क्षिपो अव्यत सानो अव्ये॥3॥

(191) सूक्त 21

1022. आ ते अग्न इधीमहि,
द्युमन्तम् देव अजरन्।
यत् ह स्या ते पनीयसी,
समिद् दीदयति द्यवि,
इषम् स्तोतृभ्य आभर॥1॥

1023. आ ते अग्न ऋचा हविः,
शुक्रस्य ज्योतिषस्पते।
सुश्चन्द्र दस्म विश्पते हव्यवाट्,
तुभ्यम् हूयत इषम् स्तोतृभ्य आ भर॥2॥

1024. आ उभे सुश्चन्द्र विश्पते,
दर्वी श्रीणोषे आसनि।
उतो न उत्पुपूर्या, उक्थेषु शवसः पते,
इषम् स्तोतृभ्यः आ भर॥3॥

(192) सूक्त 22

1025. इन्द्राय साम गायत,
विप्राय बृहते बृहत्।
ब्रह्मकृते विपश्चिते पनस्यवे॥1॥

1026. त्वम् इन्द्र अभिभूः असि,
त्वम् सूर्यम् अरोचयः।
विश्वकर्मा विश्वदेवो महान् असि॥2॥

1027. विभ्राजम् ज्योतिषा स्वः,
अगच्छो रोचनम् दिवः।
देवाः ते इन्द्र सख्याय येमिरे॥3॥

(193) सूक्त 23

1028. असावि सोम इन्द्र ते,
शविष्ठ धृष्णवा गहि।
आ त्वा पृणक्तु इन्द्रियम्,
रजः सूर्यो न रश्मिभिः॥1॥

1029. आ तिष्ठ वृत्रहन् रथम्,
युक्ता ते ब्रह्मणा हरी।
अर्वाचीनम् सु ते मनो,
ग्रावा कृणोतु वग्नुना॥2॥

1030. इन्द्रम् इत् हरी वहतो,
अप्रति-धृष्ट-शवसम्।
ऋषीणाम् सुष्टुतीः उप,
यज्ञम् च मानुषाणाम्॥3॥

इति द्वादशो अध्यायः

ॐ

अथ त्रयोदशो अध्यायः

(194) सूक्त 1

1031. ज्योतिः यज्ञस्य पवते मधु प्रियम्,
पिता देवानाम् जनिता विभूवसुः।
दधाति रत्नम् स्वधयोः अपीच्यम्,
मदिन्तमो मत्सर इन्द्रियो रसः ॥1 ॥

1032. अभिक्रन्दन् कलशम् वाजी अर्षति,
पतिः दिवः शतधारो विचक्षणः।
हरिः मित्रस्य सदनेषु सीदति,
मर्मृजानो अविभिः सिन्धुभिः वृषा ॥2 ॥

1033. अग्रे सिन्धूनाम् पवमानो अर्षसि,
अग्रे वाचो अग्रियो गोषु गच्छसि।
अग्रे वाजस्य भजसे महत् धनम्,
स्वायुधः सोतृभिः सोम सूयसे ॥3 ॥

(195) सूक्त 2

1034. असृक्षत प्र वाजिनो,
गव्या सोमासो अश्वया।
शुक्रासो वीरया आशवः ॥1 ॥

1035. शुम्भमाना ऋतायुभिः,
मृज्यमाना गभस्त्योः।
पवन्ते वारे अव्यये ॥2 ॥

1036. ते विश्वा दाशुषे वसु,
सोमा दिव्यानि पार्थिवा।
पवन्ताम् आन्तरिक्ष्या ॥3 ॥

(196) सूक्त 3

1037. पवस्व देववीः अति,
पवित्रम् सोम रंह्या।
इन्द्रम् इन्दो वृषा विश ॥1 ॥

1038. आ वच्यस्व महि प्सरो,
वृषा इन्दो द्युम्नवत्तमः।
आ योनिम् धर्णसिः सदः ॥2 ॥

1039. अधुक्षत प्रियम् मधु,
धारा सुतस्य वेधसः।
अपो वसिष्ट सुक्रतुः ॥3 ॥

1040. महान्तम् त्वा महीः अनु,
आपो अर्षन्ति सिन्धवः।
यत् गोभिः वासयिष्यसे ॥4 ॥

1041. समुद्रो अप्सु मामृजे,
विष्टम्भो धरुणो दिवः।
सोमः पवित्रे अस्मयुः ॥5॥

1042. अचिक्रदत् वृषा हरिः,
महान् मित्रो न दर्शतः।
सम् सूर्येण दिद्युते ॥6॥

1043. गिरः त इन्द ओजसा,
मर्मृज्यन्ते अपस्युवः।
याभिः मदाय शुम्भसे ॥7॥

1044. तम् त्वा मदाय घृष्वय,
उ लोक कृत्नुम् ईमहे।
तव प्रशस्तये महे ॥8॥

1045. गोषा इन्दो नृषा असि,
अश्वसा वाजसा उत।
आत्मा यज्ञस्य पूर्व्यः ॥9॥

1046. अस्मभ्यम् इन्दो इन्द्रियम्,
मधोः पवस्व धारया।
पर्जन्यो वृष्टिमान् इव ॥10॥

(197) सूक्त 4

1047. सन आ च सोम जेषि,
च पवमान महि श्रवः।
अथा नो वस्यसः कृधि ॥1॥

1048. सन आ ज्योतिः सना स्वः,
विश्वा च सोम सौभगा।
अथा नो वस्यसः कृधि ॥2॥

1049. सन आ दक्षम् उत क्रतुम्,
अप सोम मृधः जहि।
अथा नो वस्यसः कृधि ॥3॥

1050. पवीतारः पुनीतन,
सोमम् इन्द्राय पातवे।
अथा नो वस्यसः कृधि ॥4॥

1051. त्वम् सूर्ये न आ भज,
तव क्रत्वा तव ऊतिभिः।
अथा नो वस्यसः कृधि ॥5॥

1052. तव क्रत्वा तव ऊतिभिः,
ज्योक् पश्येम सूर्यम्।
अथा नो वस्यसः कृधि ॥6॥

1053. अभ्यर्ष स्वायुध,
सोम द्विबर्हसम् रयिम्।
अथा नो वस्यसः कृधि ॥7॥

1054. अभ्यर्ष अनपच्युतो,
वाजिन् समत्सु सासहिः।
अथा नो वस्यसः कृधि ॥8॥

1055. त्वाम् यज्ञैः अवीवृधन्,
पवमान विधर्मणि।
अथा नो वस्यसः कृधि ॥9॥

1056. रयिम् नः चित्रम् अश्विनम्,
इन्दो विश्वायुम् आ भर।
अथा नो वस्यसः कृधि ॥10॥

(198) सूक्त 5

1057. तरत् स मन्दी धावति,
धारा सुतस्य अन्धसः।
तरत् स मन्दी धावाति ॥1॥

1058. उस्रा वेद वसूनाम्,
मर्तस्य देवी अवसः।
तरत् स मन्दी धावति ॥2॥

1059. ध्वस्रयो पुरुषन्त्योः,
आ सहस्राणि दद्महे।
तरत् स मन्दी धावति ॥3॥

1060. आ ययोः त्रिंशतम् तना,
सहस्राणि च दद्महे।
तरत् स मन्दी धावति ॥4॥

(199) सूक्त 6

1061. एते सोमा असृक्षत,
गृणानाः शवसे महे।
मदिन्तमस्य धारया ॥1॥

1062. अभि गव्यानि वीतये,
नृम्णा पुनानो अर्षसि।
सनद्वाजः परि स्रव ॥2॥

1063. उत नो गोमतीः इषो,
विश्वा अर्ष परिष्टुभः।
गृणानो जमत् अग्निना ॥3॥

(200) सूक्त 7

1064. इमम् स्तोमम् अर्हते जातवेदसे,
रथमिव सम् महेमा मनीषया।
भद्रा हि नः प्रमतिः अस्य संसदि,
अग्ने सख्ये मा रिषामा वयम् तव ॥1॥

1065. भराम् इध्मम् कृणवामा हवींषि,
ते चितयन्तः पर्वणा पर्वणा वयम्।
जीवातवे प्रतराम् साधया धियो,
अग्ने सख्ये मा रिषामा वयम् तव॥2॥

1066. शकेम त्वा समिधम् साधया धियः
त्वे देवा हविः अदन्ति आहुतम्।
त्वम् आदित्यान् आ वह तान् हि उश्मसि,
अग्ने सख्ये मा रिषामा वयम् तव॥3॥

(201) सूक्त 8

1067. प्रति वाम् सूर उदिते,
मित्रम् गृणीषे वरुणम्।
अर्यमणम् रिशादसम्॥1॥

1068. राया हिरण्यया मतिः,
इयम् अवृकाय शवसे।
इयम् विप्रा मेधसातये॥2॥

1069. ते स्याम देव वरुण,
ते मित्र सूरिभिः सह।
इषम् स्वः च धीमहि॥3॥

(202) सूक्त 9

1070. भिन्धि विश्वा अप द्विषः,
परि बाधो जही मृधः।
वसु स्पार्हम् तत् आ भर॥1॥

1071. यस्य ते विश्वम् आनुष,
भूरेः दत्तस्य वेदति।
वसु स्पार्हम् तत् आ भर॥2॥

1072. यत् वीडौ इन्द्र यत् स्थिरे,
यत् पर्शाने पराभृतम्।
वसु स्पार्हम् तत् आ भर।3॥

(203) सूक्त 10

1073. यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा,
सस्नी वाजेषु कर्मसु।
इन्द्र अग्नी तस्य बोधतम्॥1॥

1074. तोशासा रथयावाना,
वृत्रहणा अपराजिता।
इन्द्र अग्नी तस्य बोधतम्॥2॥

1075. इदम् वाम् मदिरम् मधु,
अधुक्षन् अद्रिभिः नरः।
इन्द्र अग्नी तस्य बोधतम्॥3॥

(204) सूक्त 11

1076. इन्द्राय इन्दो मरुत्वते,
पवस्व मधुमत्तमः।
अर्कस्य योनिम् आसदम्॥1॥

1077. तम् त्वा विप्रा वचोविदः,
परिष्कृण्वन्ति धर्णसिम्।
सम् त्वा मृजन्ति आयवः ॥2॥

1078. रसम् ते मित्रो अर्यमा,
पिबन्तु वरुणः कवे।
पवमानस्य मरुतः ॥3॥

(205) सूक्त 12

1079. मृज्यमानः सुहस्त्या,
समुद्रे वाचम् इन्वसि।
रयिम् पिशङ्गम् बहुलम्,
पुरुस्पृहम् पवमान अभि अर्षसि ॥1॥

1080. पुनानो वारे पवमानो,
अव्यये वृषो अचिक्रदत् वने।
देवानाम् सोम पवमान,
निष्कृतम् गोभिः अञ्जानो अर्षसि ॥2॥

(206) सूक्त 13

1081. एतम् उ त्यम् दश क्षिपो,
मृजन्ति सिन्धुमातरम्।
सम् आदित्येभिः अख्यत ॥1॥

1082. सम् इन्द्रेण उत वायुना,
सुत एति पवित्र आ।
सम् सूर्यस्य रश्मिभिः ॥2॥

1083. स नो भगाय वायवे,
पूष्णे पवस्व मधुमान्।
चारुः मित्रे वरुणे च ॥3॥

(207) सूक्त 14

1084. रेवतीः नः सधमाद,
इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः।
क्षुमन्तो याभिः मदेम ॥1॥

1085. आ घ त्वावान् त्मना युक्तः,
स्तोतृभ्यो धृष्णवीयानः।
ऋणोः अक्षम् न चक्र्योः ॥2॥

1086. आ यत् दुवः शतक्रतवा,
कामम् जरितृणाम्।
ऋणोः अक्षम् न शचीभिः ॥3॥

(208) सूक्त 15

1087. सुरूप कृत्नुम् ऊतये,
सुदुघाम् इव गोदुहे।
जुहूमसि द्यवि द्यवि ॥1॥

1088. उप नः सवना गहि,
सोमस्य सोमपाः पिब।
गोदा इन्द्रेवतो मदः ॥2॥

1089. अथा ते अन्तमानाम्,
विद्याम सुमतीनाम्।
मा नो अति ख्य आ गहि॥3॥

(209) सूक्त 16

1090. उभे यत् इन्द्र रोदसी,
आ पप्राथ उषा इव।
महान्तम् त्वा महीनाम्,
सम्राजम् चर्षणीनाम्।
देवी जनित्री अजीजनत्,
भद्रा जनित्री अजीजनत्॥1॥

1091. दीर्घम् हि अङ्कुशम्,
यथा शक्तिम् बिभर्षि मन्तुमः।
पूर्वेण मघवन् पदा,
वयाम् अजो यथा यमः।
देवी जनित्री अजीजनत्,
भद्रा जनित्री अजीजनत्॥2॥

1092. अव स्म दुर्हणायतो,
मर्तस्य तनुहि स्थिरम्।
अधस्पदम् तम् ईम् कृधि,
यो अस्मान् अभिदासति।
देवी जनित्री अजीजनत्,
भद्रा जनित्री अजीजनत्॥3॥

(210) सूक्त 17

1093. परि स्वानो गिरिष्ठाः,
पवित्रे सोमो अक्षरत्।
मदेषु सर्वधा असि॥1॥

1094. त्वम् विप्रः त्वम् कविः,
मधु प्र जातम् अन्धसः।
मदेषु सर्वधा असि॥2॥

1095. त्वे विश्वे सजोषसो,
देवासः पीतिम् आशत।
मदेषु सर्वधा असि॥3॥

(211) सूक्त 18

1096. स सुन्वे यो वसूनाम् यो,
रायाम् आनेता य इडानाम्।
सोमो यः सुक्षितीनाम्॥1॥

1097. यस्य ते इन्द्रः पिबात् यस्य,
मरुतो यस्य वारि अर्यमणा भगः।
आ येन मित्रावरुणा करामह,
आ इन्द्रम् अवसे महे॥2॥

(212) सूक्त 19

1098. तम् वः सखायो मदाय,
पुनानम् अभि गायत।
शिशुम् न हव्यैः स्वदयन्त गूर्तिभिः ॥1॥

1099. सम् वत्स इव मातृभिः,
इन्दुः हिन्वानो अज्यते।
देवावीः मदो मतिभिः परिष्कृतः ॥2॥

1100. अयम् दक्षाय साधनो,
अयम् शर्धाय वीतये।
अयम् देवेभ्यो मधुमत्तरः सुतः ॥3॥

(213) सूक्त 20

1101. सोमाः पवन्त इन्दवो,
अस्मभ्यम् गातुवित्तमाः।
मित्राः स्वाना अरेपसः,
स्वाध्यः स्वः विदः ॥1॥

1102. ते पूतासो विपश्चितः,
सोमासो दधि आशिरः।
सूरासो न दर्शतासो,
जिगत्नवो ध्रुवा घृते ॥2॥

1103. सुष्वाणासो वि अद्रिभिः,
चिताना गोरधि त्वचि।
इषम् अस्मभ्यम् अभितः,
समस्वरन् वसुविदः ॥3॥

(214) सूक्त 21

1104. अया पवा पवस्व एना वसूनि,
मांश्चत्व इन्दो सरसि प्र धन्व।
ब्रध्नः चित् यस्य वातो न जूतिम्,
पुरुमेधाः चित् तकवे नरम् धात् ॥1॥

1105. उत न एना पवया पवस्व,
अधि श्रुते श्रवाय्यस्य तीर्थे।
षष्टिम् सहस्रा नैगुतो वसूनि
वृक्षम् न पक्वम् धूनवत् रणाय ॥2॥

1106. महीमे अस्य वृष नाम शूषे,
मांश्चत्वे वा पृशने वा वधत्रे।
अस्वापयन् निगुतः स्नेहयत्,
चापामित्रान् अपाचितो अचेतः ॥3॥

(215) सूक्त 22

1107. अग्ने त्वम् नो अन्तम उत
त्राता शिवो भुवो वरूथ्यः ॥1॥

1108. वसुः अग्निः वसुश्रवा अच्छा,
नक्षि द्युमत्तमो रयिम् दाः ॥2॥

1109. तम् त्वा शोचिष्ठ दीदिवः,
सुम्नाय नूनम् ईमहे सखिभ्यः ॥3॥

(216) सूक्त 23

1110. इमा नु कम् भुवना सीषधेम,
इन्द्रः च विश्वे च देवाः ॥1॥

1111. यज्ञम् च नः तन्वम् च प्रजाम् च,
आदित्यैः इन्द्रः सह सीषधातु ॥2॥

1112. आदित्यैः इन्द्रः सगणो,
मरुद्भिः अस्मभ्यम् भेषजा करत् ॥3॥

(217) सूक्त 24

1113. प्र व इन्द्राय वृत्रहन्तमाय,
विप्राय गाथम् गायत यम् जुजोषते ॥1॥

1114. अर्चन्ति अर्कम् मरुतः स्वर्का,
आ स्तोभति श्रुतो युवा स इन्द्रः ॥2॥

1115. उप प्रक्षे मधुमति क्षियन्तः,
पुष्येम रयिम् धीमहे त इन्द्र ॥3॥

इति त्रयोदशो अध्यायः

ॐ

अथ चतुर्दशो अध्यायः

(218) सूक्त 1

1116. प्र काव्यम् उशना इव ब्रुवाणो,
देवो देवानाम् जनिमा विवक्ति।
महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः,
पदा वराहो अभ्येति रेभन् ॥1।

1117. प्र हंसासः तृपला वग्नुम् अच्छ,
अमात् अस्तम् वृषगणा अयासुः।
अङ्गोषिणम् पवमानम् सखायो,
दुर्मर्षम् वाणम् प्र वदन्ति साकम् ॥2॥

1118. स योजत उरुगायस्य जूतिम्,
वृथा क्रीडन्तम् मिमते न गावः।
परीणसम् कृणुते तिग्मशृङ्गो दिवा,
हरिः ददृशे नक्तम् ऋज्रः ॥3॥

1119. प्र स्वानासो रथा इव,
अर्वन्तो न श्रवस्यवः।
सोमासो राये अक्रमुः ॥4 ॥

1120. हिन्वानासो रथा इव,
दधन्विरे गभस्त्योः ॥
भरासः कारिणाम् इव ॥5॥

1121. राजानो न प्रशस्तिभिः,
सोमासो गोभिः अञ्जते।
यज्ञो न सप्त धातृभिः ॥6॥

1122. परि स्वानास इन्दवो,
मदाय बर्हणा गिरा।
मधो अर्षन्ति धारया ॥7॥

1123. आ पानासो विवस्वतो,
जिन्वन्त उषसो भगम्।
सूरा अण्वम् वि तन्वते ॥8॥

1124. अप द्वारा मतीनाम्,
प्रत्ना ऋण्वन्ति कारवः।
वृष्णो हरस आयवः ॥9॥

1125. समीचीनास आशत,
होतारः सप्तजानयः।
पदम् एकस्य पिप्रतः ॥10॥

1126. नाभा नाभिम् न आ ददे,
चक्षुषा सूर्यम् दृशे।
कवेः अपत्यम् आ दुहे ॥11॥

1127. अभि प्रियम् दिवः पदम्,
अध्वर्युभिः गुहा हितम्।
सूरः पश्यति चक्षसा ॥12॥

(219) सूक्त 2

1128. असृग्रम् इन्दवः पथा,
धर्मन् ऋतस्य सुश्रियः।
विदाना अस्य योजना ॥1॥

1129. प्र धारा मधो अग्रियो,
महीरपो वि गाहते।
हविः हविःषु वन्द्यः ॥2॥

1130. प्र युजा वाचो अग्रियो,
वृषो अचिक्रदत् वने।
सद्म अभि सत्यो अध्वरः ॥3॥

1131. परि यत् काव्या कविः,
नृम्णा पुनानो अर्षति।
स्वः वाजी सिषासति ॥4॥

1132. पवमानो अभि स्पृधो,
विशो राजेव सीदति।
यत् ईम् ऋण्वन्ति वेधसः ॥5॥

1133. अव्या वारे परि प्रियो,
हरिः वनेषु सीदति।
रेभो वनुष्यते मती ॥6॥

1134. स वायुम् इन्द्रम् अश्विना,
साकम् मदेन गच्छति।
रणा यो अस्य धर्मणा ॥7

1135. आ मित्रे वरुणे भगे,
मधोः पवन्त ऊर्मयः।
विदाना अस्य शक्मभिः ॥8॥

1136. अस्मभ्यम् रोदसी रयिम्,
मध्वो वाजस्य सातये।
श्रवो वसूनि सञ्जितम् ॥9॥

1137. आ ते दक्षम् मयोभुवम्,
वह्निम् अद्या वृणीमहे।
पान्तम् आ पुरुस्पृहम् ॥10॥

1138. आ मन्द्रमा वरेण्यमा,
विप्रमा मनीषिणम्।
पान्तम् आ पुरुस्पृहम ॥11॥

1139. आ रयिमा सुचेतुनम्,
आ सुक्रतो तनूष्वा।
पान्तम् आ पुरुस्पृहम् ॥12॥

(220) सूक्त 3

1140. मूर्धानम् दिवो अरतिम् पृथिव्या,
वैश्वानरम् ऋत आ जातम् अग्निम्॥
कविम् सम्राजम् अतिथिम् जनानाम्,
आसन्नः पात्रम् जनयन्त देवाः ॥1॥

1141. त्वाम् विश्वे अमृत जायमानम्,
शिशुम् न देवा अभि सम् नवन्ते।
तव क्रतुभिः अमृतत्वम् आयन्,
वैश्वानर यत् पित्रोः अदीदेः ॥2॥

1142. नाभिम् यज्ञानाम् सदनम् रयीणाम्,
महाम् आहावम् अभि सम् नवन्त।
वैश्वानरम् रथ्यम् अध्वराणाम्,
यज्ञस्व केतुम् जनयन्त देवाः ॥3।

(221) सूक्त 4

1143. प्र वो मित्राय गायत,
वरुणाय विपा गिरा।
महिक्षत्रौ ऋतम् बृहत्॥1॥

1144. सम्राजा या घृतयोनी,
मित्रश्च उभा वरुणश्च।
देवा देवेषु प्रशस्ता॥2॥

1145. ता नः शक्तम् पार्थिवस्य,
महो रायो दिव्यस्य।
महि वाम् क्षत्रम् देवेषु॥3॥

(222) सूक्त 5

1146. इन्द्रा याहि चित्रभानो,
सुता इमे त्वायवः।
अण्वीभिः तना पूतासः॥1॥

1147. इन्द्रा याहि धिया इषितो,
विप्रजूतः सुतावतः।
उप ब्रह्माणि वाघतः॥2॥

1148. इन्द्रा याहि तूतुजान,
उप ब्रह्माणि हरिवः।
सुते दधिष्व नः चनः॥3॥

(223) सूक्त 6

1149. तम् ईडिष्व यो अर्चिषा,
वना विश्वा परिष्वजत्।
कृष्णा कृणोति जिह्वया॥1॥

1150. य इद्ध आविवासति,
सुम्नम् इन्द्रस्य मर्त्यः।
द्युम्नाय सुतरा अपः॥2॥

1151. ता नो वाजवतीः इष,
आशून् पिपृतम् अर्वतः।
इन्द्रम् अग्निम् च वोढवे॥3॥

(224) सूक्त 7

1152. प्रो अयासीत् इन्दु इन्द्रस्य निष्कृतम्,
सखा सख्युः न प्र मिनाति सङ्गिरम्।
मर्य इव युवतिभिः समर्षति,
सोमः कलशे शतयामना पथा॥1॥

1153. प्र वो धियो मन्द्रयुवो विपन्युवः,
पनस्युवः संवरणेषु अक्रमुः।
हरिम् क्रीडन्तम् अभ्यनूषत स्तुभो,
अभि धेनवः पयसा इत् अशिश्रयुः॥2॥

1154. आ नः सोम संयतम् पिप्युषीम्,
इषम् इन्दो पवस्व पवमान ऊर्मिणा।
या नो दोहते त्रिरहन्न असश्चुषी,
क्षुमत् वाजवन् मधुमत् सुवीर्यम्॥3॥

(225) सूक्त 8

1155. न किष्टम् कर्मणा नशत्,
यः चकार सदावृधम्।
इन्द्रम् न यज्ञैः विंश्वगूर्तम्,
ऋभ्वसम् अधृष्टं धृष्णुम् ओजसा॥1॥

1156. अषाढम् उग्रम् पृतनासु,
सासहिम् यस्मिन् महीः उरुज्रयः।
सम् धेनवो जायमाने अनोनवुः,
द्यावः क्षामीः अनोनवुः॥2॥

(226) सूक्त 9

1157. सखाय आ नि षीदत,
पुनानाय प्रगायत।
शिशुम् न यज्ञैः परि भूषत श्रिये॥1॥

1158. सम् ई वत्सम् न मातृभिः,
सृजता गयसाधनम्।
देवाव्याम् मदम् अभि द्विशवसम्॥2॥

1159. पुनाता दक्षसाधनम्,
यथा शर्धाय वीतये।
यथा मित्राय वरुणाय शन्तमम्॥3॥

(227) सूक्त 10

1160. प्र वाजी अक्षाः सहस्रधारः,
तिरः पवित्रम् वि वारम् अव्यम्॥1॥

1161. स वाजी अक्षाः सहस्ररेता,
अद्भिः मृजानो गोभिः श्रीणानः॥2॥

1162. प्र सोम याहि इन्द्रस्य कुक्षा,
नृभिः येमानो अद्रिभिः सुतः॥3॥

(228) सूक्त 11

1163. ये सोमासः परावति,
ये अर्वावति सुन्विरे।
ये वा अदः शर्यणावति॥1॥

1164. य आर्जीकेषु कृत्वसु,
ये मध्ये परस्त्यानाम्।
ये वा जनेषु पञ्चसु॥2॥

1165. ते नो वृष्टिम् दिवः परि,
पवन्ताम् आ सुवीर्यम्।
स्वाना देवास इन्दवः॥3॥

(229) सूक्त 12

1166. आ ते वत्सो मनो यमत्,
परमाच्चित् सधस्थात्।
अग्ने त्वाम् कामये गिरा॥1॥

1167. पुरुत्रा हि सदृङ् असि,
दिशो विश्वा अनु प्रभुः।
समत्सु त्वा हवामहे॥2॥

1168. समत्सु अग्निम् अवसे,
वाजयन्तो हवामहे।
वाजेषु चित्रराधसम्॥3॥

(230) सूक्त 13

1169. त्वम् न इन्द्र आ भर ओजो,
नृम्णम् शतक्रतो विचर्षणे।
आ वीरम् पृतनासहम्॥1॥

1170. त्वम् हि नः पिता वसो,
त्वम् माता शतक्रतो बभूविथ।
अथा ते सुम्न् ईमहे॥2॥

1171. त्वाम् शुष्मिन् पुरुहूत वाजयन्तम्,
उप ब्रुवे सहस्कृत।
स नो रास्व सुवीर्यम्॥3॥

(231) सूक्त 14

1172. यत् इन्द्र चित्र म इह,
न अस्ति त्वादातम् अद्रिवः।
राधः तत् नो विदद्वस,
उभया हस्त्या भर॥1॥

1173. यत् मन्यसे वरेण्यम्,
इन्द्र द्युक्षम् तत् आ भर।
विद्याम तस्य ते वयम्,
अकूपारस्य दावनः॥2॥

1174. यत् ते दिक्षु प्रराध्यम्,
मनो अस्ति श्रुतम् बृहत्।
तेन दृढा चित् अद्रिव,
आ वाजम् दर्षि सातये॥3॥

इति चतुर्दशो अध्यायः

ॐ

अथ पञ्चदशो अध्याय:

(232) सूक्त 1

1175. शिशुम् जज्ञानम् हर्यतम् मृजन्ति,
शुम्भन्ति विप्रम् मरुतो गणेन।
कवि: गीर्भि: काव्येन आ कवि:,
सन्त्सोम: पवित्रम् अत्येति रेभन्॥1॥

1176. ऋषिमना य: ऋषिकृत् स्वर्षा:,
सहस्त्रनीथ: पदवी: कवीनाम्।
तृतीयम् धाम महिष: सिषासन्,
सोमो विराजम् अनु राजति ष्टुप्॥2॥

1177. चमूषत् श्येन: शकुनो विभृत्वा,
गोविन्दु: द्रप्स आयुधानि बिभ्रत्।
अपाम् उर्मिम् सचमान: समुद्रम्,
तुरीयम् धाम महिषो विवक्ति॥3॥

(233) सूक्त 2

1178. एते सोमा अभि प्रियम्,
इन्द्रस्य कामम् अक्षरन्।
वर्धन्तो अस्य वीर्यम्॥1।

1179. पुनानास: चमूषदो,
गच्छन्तो वायुम् अश्विना।
ते नो धत्त सुवीर्यम्॥2॥

1180. इन्द्रस्य सोम राधसे,
पुनानो हार्दि चोदय।
देवानाम् योनिम् आसदम्॥3॥

1181. मृजन्ति त्वा दश क्षिपो,
हिन्वन्ति सप्त धीतय:।
अनु विप्रा अमादिषु:॥4॥

1182. देवेभ्य: त्वा मदाय कम्,
सृजानम् अति मेष्य:।
सम् गोभि: वासयामसि॥5॥

1183. पुनान: कलशेषु आ,
वस्त्राणि अरुषो हरि:।
परि गव्यानि अव्यत॥6॥

1184. मघोन आ पवस्य नो,
जहि विश्वा अप द्विष:।
इन्दो सखायम् विश॥7॥

1185. नृचक्षसम् त्वा वयम्,
इन्द्रपीतम् स्वर्विदम्।
भक्षीमहि प्रजाम् इषम्॥8॥

1186. वृष्टिम् दिवः परिस्रव,
द्युम्नम् पृथिव्या अधि।
सहो नः सोम पृत्सु धाः॥9॥

(234) सूक्त 3

1187. सोमः पुनानो अर्षति,
सहस्रधारो अत्यविः।
वायोः इन्द्रस्य निष्कृतम्॥1॥

1188. पवमानम् अवस्यवो,
विप्रम् अभि प्र गायत।
सुष्वाणम् देववीतये॥2॥

1189. पवन्ते वाजसातये,
सोमाः सहस्रपाजसः।
गृणाना देववीतये॥3॥

1190. उत नो वाजसातये,
पवस्व बृहतीः इषः ।
द्युमत् इन्दो सुवीर्यम्॥4॥

1191. अत्या हियाना न हेतृभिः,
असृगम् वाजसातये।
वि वारम् अव्यम् आशवः॥5॥

1192. ते नः सहस्रिणम् रयिम्,
पवन्ताम् आ सुवीर्यम्।
स्वाना देवास इन्दवः॥6॥

1193. वाश्रा अर्षन्ति इन्दवो,
अभि वत्सम् न मातरः।
दधन्विरे गभस्त्योः॥7॥

1194. जुष्ट इन्द्राय मत्सरः,
पवमानः कनिक्रदत्।
विश्वा अप द्विषो जहि॥8॥

1195. अपघ्नन्तो अराव्णः,
पवमानाः स्वदृर्शः।
योनौ ऋतस्य सीदत॥9॥

(235) सूक्त 4

1196. सोमा असृग्रम् इन्दवः,
सुता ऋतस्य धारया।
इन्द्राय मधुमत्तमाः॥1॥

1197. अभि विप्रा अनूषत,
गावो वत्सम् न धेनवः।
इन्द्रम् सोमस्य पीतये॥2॥

1198. मदच्युत् क्षेति सादने,
सिन्धोः ऊर्मा विपश्चित्।
सोमो गौरी अधि श्रितः॥3॥

1199. दिवो नाभा विचक्षणो,
अव्या वारे महीयते।
सोमो यः सुक्रतुः कविः॥4॥

1200. यः सोमः कलशेष्वा,
अन्तः पवित्र आहितः।
तम् इन्दुः परि षस्वजे॥5॥

1201. प्र वाचम् इन्दुः इष्यिति,
समुद्रस्य अधि विष्टपि।
जिन्वन् कोशम् मधुश्चुतम्॥6॥

1202. नित्यस्तोत्रो वनस्पतिः,
धेनाम् अन्तः सबर्दुघाम्।
हिन्वानो मानुषा युजा॥7॥

1203. आ पवमान धारया,
रयिम् सहस्रवर्चसम्।
अस्मे इन्दो स्वाभुवम् ॥8॥

1204. अभि प्रिया दिवः कविः,
विप्रः स धारया सुतः।
सोमो हिन्वे परावति॥9॥

(236) सूक्त 5

1205. उत् ते शुष्मास ईरते,
सिन्धोः ऊर्मेः इव स्वनः।
वाणस्य चोदया पविम्॥1॥

1206. प्रसवे त उदीरते,
तिस्रो वाचो मखस्युवः।
यद् अव्य एषि सानवि॥2॥

1207. अव्या वारैः परिप्रियम्,
हरिम् हिन्वन्ति अद्रिभिः।
पवमानम् मधुश्चुतम्॥3॥

1208. आ पवस्व मदिन्तम,
पवित्रम् धारया कवे।
अर्कस्य योनिम् आसदम्॥4॥

1209. स पवस्व मदिन्तम,
गोभिः अञ्जानो अक्तुभिः।
एन्द्रस्य जठरम् विश॥5॥

(237) सूक्त 6

1210. अया वीती परि स्रव,
यः त इन्दो मदेषु आ।
अवाहन् नवतीः नव॥1॥

1211. पुरः सद्य इत्थाधिये,
दिवोदासाय शम्बरम्।
अध त्यम् तुर्वशम् यदुम्॥2॥

1212. परि णो अश्वम् अश्ववित्,
गोमत् इन्दो हिरण्यवत्।
क्षरा सहस्त्रिणीः इषः॥3॥

(238) सूक्त 7

1213. अपघ्नन् पवते मृधो,
अप सोमो अराव्णः ।
गच्छन् इन्द्रस्य निष्कृतम्॥1॥

1214. महो नो राय आ भर,
पवमान जही मृधः।
रास्व इन्दो वीर वत् यशः॥2॥

1215. न त्वा शतम् च ह्रुतो,
राधो दित्सन्तम् आमिनन्।
यत् पुनानो मखस्यसे॥3॥

(239) सूक्त 8

1216. अया पवस्व धारया,
यया सूर्यमरोचयः।
हिन्वानो मानुषीरपः॥1॥

1217. अयुक्त सूर एतशम्,
पवमानो मनौ अधि।
अन्तिरिक्षेण यातवे॥2॥

1218. उत त्या हरितो रथे,
सूरो अयुक्त यातवे।
इन्दु इन्द्र इति ब्रुवन्॥9॥

(240) सूक्त 9

1219. अग्निम् वो देवम् अग्निभिः सजोषा,
यजिष्ठम् दूतम् अध्वरे कृणुध्वम्।
यो मर्त्येषु निध्रुविः ऋतावा,
तपुः मूर्धा घृतान्नः पावका॥1॥

1220. प्रोथत् अश्वो न यवसे अविष्यन्,
यदा महः संवरणात् व्यस्थात्।
आत् अस्य वातो अनु वाति शोचिः,
अध स्म ते व्रजनम् कृष्णम् अस्ति॥2॥

1221. उत् अस्य ते नवजातस्य वृष्णो
अग्ने चरन्ति अजरा इधानाः।
अच्छा द्याम् अरुषो धूम एषि सम्,
दूतो अग्न ईयसे हि देवान्॥3॥

(241) सूक्त 10

1222. तम् इन्द्रम् वाजयामसि,
महे वृत्राय हन्तवे।
स वृषा वृषभो भुवत्॥1॥

1223. इन्द्रः स दामने कृत,
ओजिष्ठः स बले हितः।
द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः॥2॥

1224. गिरा वज्रो न सम्भृतः,
सबलो अनपच्युतः।
ववक्ष उग्रो अस्तृतः॥6॥

(242) सूक्त 11

1225. अध्वर्यो अद्रिभिः सुतम्,
सोम पवित्र आ नय।
पुनाहि इन्द्राय पातवे॥1॥

1226. तव त्य इन्दो अन्धसो,
देवा मधोः व्याशत।
पवमानस्य मरुतः॥2॥

1227. दिवः पीयूषम् उत्तमम्,
सोमम् इन्द्राय वज्रिणे।
सुनोता मधुमत्तमम्॥3॥

(243) सूक्त 12

1228. धर्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसो,
दक्षो देवानामनुमाद्यो नृभिः।
हरिः सृजानो अत्यो न सत्वभिः,
वृथा पजांसि कृणुषे नदीषु आ॥1॥

1229. शूरो न धत्त आयुधा गभस्त्योः,
स्वाः सिषासन् रथिरो गविष्टिषु।
इन्द्रस्य शुष्मम् ईरयन् अपस्युभिः,
इन्दुः हिन्वानो अज्यते मनीषिभिः॥2॥

1230. इन्द्रस्य सोम पवमान ऊर्मिणा,
तविष्यमाणो जठरेषु आ विश।
प्र नः पिन्व विद्युत् अभ्रेव रोदसी,
धिया नो वाजान् उप माहि शश्वतः॥3॥

(244) सूक्त 13

1231. यत् इन्द्र प्राक् अपाक्,
उदक् न्यक् वा हूयसे नृभिः।
सिमा पुरू नृषूतो असि,
आनवे असि प्रशर्ध तुर्वशे॥1॥

1232. यद्वा रुमे रुशमे श्यावके,
कृप इन्द्र मादयसे सचा।
कण्वासः त्वा स्तोमेभिः ब्रह्मवाहस,
इन्द्र आयच्छन्ति आ गहि॥2॥

(245) सूक्त 14

1233. उभयम् शृणवत् च न,
इन्द्रो अर्वाक् इदम् वचः।
सत्राच्या मघवान् सोमपीतये,
धिया शविष्ठ आ गमत्॥1॥

1234. तम् हि स्वराजम् वृषभम्,
तम् ओजसा धिषणे निष्टतक्षतुः।
उत् उपमानाम् प्रथमो नि षीदसि,
सोमकामम् हि ते मनः॥2।

(246) सूक्त 15

1235. पवस्व देव आयुषक्,
इन्द्रम् गच्छतु ते मदः।
वायुम् आ रोह धर्मणा॥1॥

1236. पवमान नि तोशसे,
रयिम् सोम श्रवाय्यम्।
इन्दो समुद्रम् आविश॥2॥

1237. अपघ्नन् पवसे मृधः,
क्रतुवित् सोम मत्सरः।
नुदस्व अदेवयुम् जनम्॥3॥

(247) सूक्त 16

1238. अभी नो वाजसातमम्,
रयिम् अर्ष शतस्पृहम्।
इन्दो सहस्र भर्णसणम्,
तुविद्युम्नम् विभासहम्॥1॥

1239. वयम् ते अस्य राधसो,
वसोः वसो पुरुस्पृहः।
नि नेदिष्ठतमा इषः,
स्याम सुम्ने ते अध्रिगो॥2॥

1240. परि स्य स्वानो अक्षरत्,
इन्दुः अव्ये मदच्युतः।
धारा य ऊर्ध्वो अध्वरे,
भ्राजा न याति गव्ययुः॥3॥

(248) सूक्त 17

1241. पवस्व सोम महान् समुद्रः,
पिता देवानाम् विश्वा अभि धाम॥1।

1242. शुक्रः पवस्व देवेभ्यः सोम,
दिवे पृथिव्यै शम् च प्रजाभ्यः॥2॥

1243. दिवो धर्त्ता असि शुक्रः पीयूषः,
सत्ये विधर्मन् वाजी पवस्व ॥3॥

(249) सूक्त 18

1244. प्रेष्ठम् वो अतिथिम्,
स्तुषे मित्रमिव प्रियम्।
अग्ने रथम् न वेद्यम् ॥1॥

1245. कविमिव प्रशंस्यम्,
यम् देवास इति द्विता।
नि मर्त्येषु आदधुः ॥2॥

1246. त्वम् यविष्ठ दाशुषो,
नॄ न् पाहि शृणुही गिरः।
रक्षा तोकम् उत त्मना ॥3॥

(250) सूक्त 19

1247. आ इन्द्र नो गधि प्रिय,
सत्राजित् अगोह्य।
गिरिः न विश्वतः पृथु पतिः दिवः ॥1॥

1248. अभि हि सत्य सोमपा,
उभे बभूथ रोदसी।
इन्द्र असि सुन्वतो वृधः पतिः दिवः ॥2॥

1249. त्वम् हि शश्वतीनाम्,
इन्द्र धर्त्ता पुराम् असि।
हन्ता दस्योः मनोः वृधः पतिः दिवः ॥3॥

(251) सूक्त 20

1250. पुराम् भिन्दुः युवा कविः,
अमितौजा अजायत।
इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो,
धर्त्ता वज्री पुरुष्टुतः ॥1॥

1251. त्वम् बलस्य गोमतो,
अपावः अद्रिवो बिलम्।
त्वाम् देवा अबिभ्युषः,
तुज्यमानास आविषुः ॥2॥

1252. इन्द्रम् ईशानम् ओजसा,
अभि स्तोमैः अनूषत।
सहस्रम् यस्य रातय,
उत वा सन्ति भुयसीः ॥3॥

इति पञ्चदशो अध्यायः

ॐ

अथ षोडशो अध्याय:

(252) सूक्त 1

1253. अक्रान् समुद्रः प्रथमे विधर्मन्,
जनयन् प्रजा भुवनस्य गोपाः।
वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये,
बृहत् सोमो वावृधे स्वानो अद्रिः ॥1॥

1254. मत्सि वायुम् इष्टये राधसे नो,
मत्सि मित्रावरुणा पूयमानः।
मत्सि शर्धो मारुतम् मत्सि देवान्,
मत्सि द्यावापृथिवी देव सोम॥2॥

1255. महत् तत् सोमो महिषः चकार,
अपाम् यत् गर्भो अवृणीत देवान्।
अदधात् इन्द्रे पवमान ओजो,
अजनयत् सूर्ये ज्योतिः इन्दुः॥3॥

(253) सूक्त 2

1256. एष देवो अमर्त्यः,
पर्णवीरिव दीयते।
अभि द्रोणानि आसदम्॥1॥

1257. एष विप्रैः अभिष्टुतो,
अपो देवो वि गाहते।
दधत् रत्नानि दाशुषे॥2॥

1258. एष विश्वानि वार्या,
शूरो यन् इव सत्वभिः।
पवमानः सिषासति॥3॥

1259. एष देवो रथर्यति,
पवमानो दिशस्यति।
आविष्कृणोति वग्वनुम्॥4॥

1260. एष देवो विपन्युभिः,
पवमान ऋतायुभिः।
हरिः वाजाय मृज्यते॥5॥

1261. एष देवो विपा कृतो,
अति ह्वरांसि धावति।
पवमानो अदाभ्यः॥6॥

1262. एष दिवम् वि धावति,
तिरो रजांसि धारया।
पवमानः कनिक्रदत्॥7॥

1263. एष दिवम् व्यासरत्,
तिरो रजांसि अस्तृतः।
पवमानः स्वध्वरः ॥8॥

1264. एष प्रत्नेन जन्मना,
देवो देवेभ्यः सुतः।
हरिः पवित्रे अर्षति॥9॥

1265. एष उ स्य पुरुव्रतो,
जज्ञानो जनयन् इषः।
धारया पवते सुतः॥10॥

(254) सूक्त 3

1266. एष धिया याति अण्व्या,
शूरो रथेभिः आशुभिः।
गच्छन् इन्द्रस्य निष्कृतम्॥1॥

1267. एष पुरु धियायते,
बृहते देवतातये।
यत्र अमृतास आशत॥2॥

1268. एतम् मृजन्ति मर्ज्यम्,
उप द्रोणेषु आयवः
प्रचक्राणम् महीः इषः॥3॥

1269. एष हितो वि नीयते,
अन्तः शुन्ध्यावता पथा।
यदी तुञ्जन्ति भूर्णयः॥4॥

1270. एष रुक्मिभिः ईयते,
वाजी शुभ्रेभिः अंशुभिः।
पतिः सिन्धूनाम् भवन्॥5॥

1271. एष शृङ्गाणि दोधुवत्,
शिशीते यूथ्यो वृषा।
नृम्णा दधान ओजसा॥6॥

1272. एष वसूनि पिब्दनः,
परुषा ययिवान् अति।
अव शादेषु गच्छति॥7॥

1273. एतम् उ त्यम् दश क्षिपो,
हरिम् हिन्वन्ति यातवे।
स्वायुधम् मदिन्तमम्॥8॥

(255) सूक्त 4

1274. एष उ स्य वृषा रथो,
अव्या वारेभिः अव्यत।
गच्छन् वाजम् सहस्रिणम्॥1।

1275. एतम् त्रितस्य योषणो,
हरिम् हिन्वन्ति अद्रिभिः।
इन्दुम् इन्द्राय पीतये॥2॥

1276. एष स्य मानुषीषु आ,
श्येनो न विक्षु सीदति।
गच्छन् जारो न योषितम्॥3॥

1277. एष स्य मद्यो रसो,
अव चष्टे दिवः शिशुः।
य इन्दु वारम् आविशत्॥4॥

1278. एष स्य पीतये सुतो,
हरिः अर्षति धर्णसिः।
क्रन्दन् योनिम् अभि प्रियम्॥5॥

1279. एतम् त्यम् हरितो दश,
मर्मृज्यन्ते अपस्युवः।
याभिः मदाय शुम्भते॥6॥

(256) सूक्त 5

1280. एष वाजी हितो नृभिः,
विश्ववित् मनसः पतिः।
अव्यम् वारम् वि धावति॥1॥

1281. एष पवित्रे अक्षरत्,
सोमो देवेभ्यः सुतः।
विश्वा धामानि आविशन्॥2॥

1282. एष देवः शुभायते,
अधि योनौ मर्त्यः।
वृत्रहा देववीतमः॥3॥

1283. एष वृषा कनिक्रदत्,
दशभिः जामिभिः यतः।
अभि द्रोणानि धावति॥4॥

1284. एष सूर्यम् अरोचयत्,
पवमानो अधि द्यवि।
पवित्रे मत्सरो मदः॥5॥

1285. एष सूर्येण हासते,
संवसानो विवस्वता।
पतिः वाचो अदाभ्यः॥6॥

(257) सूक्त 6

1286. एष कविः अभिष्टुतः,
पवित्रे अधि तोशते।
पुनानो ध्नन अप द्विषः॥1॥

1287. एष इन्द्राय वायवे,
स्वर्जित् परि षिच्यते।
पवित्रे दक्षसाधनः ॥2॥

1288. एष नृभिः वि नीयते,
दिवो मूर्धा वृषा सुतः।
सोमो वनेषु विश्ववित् ॥3॥

1289. एष गव्युः अचिक्रदत्,
पवमानो हिरण्ययुः।
इन्दुः सत्राजित् अस्तृतः ॥4॥

1290. एष शुष्मी सिष्यदत्,
अन्तरिक्षे वृषा हरिः।
पुनान इन्दुः इन्द्रम् आ ॥5॥

1291. एष शुष्मी अदाभ्यः,
सोमः पुनानो अर्षति।
देवावीः अघशंसहा ॥6॥

(258) सूक्त 7

1292. स सुतः पीतये वृषा,
सोमः पवित्रे अर्षति।
विघ्नन् रक्षांसि देवयुः ॥1॥

1293. स पवित्रे विचक्षणो,
हरिः अर्षति धर्णसिः।
अभि योनिम् कनिक्रदत् ॥2॥

1294. स वाजी रोजनम् दिवः,
पवमानो वि धावति।
रक्षोहा वारम् अव्ययम् ॥3॥

1295. स त्रितस्य अधि सानवि,
पवमानो अरोचयत्।
जामिभिः सूर्यम् सह ॥4॥

1296. स वृत्रहा वृषा सुतो,
वरिवोवित् अदाभ्यः।
सोमो वाजमिव असरत् ॥5॥

1297. सः देवः कविना इषितो,
अभि द्रोणानि धावति।
इन्दुः इन्द्राय मंहयन् ॥6॥

(259) सूक्त 8

1298. यः पावमानीः अध्येति,
ऋषिभिः संभृतम् रसम्।
सर्वम् स पूतम् अश्नाति,
स्वदितम् मातरिश्वना ॥1।

1299. पावमानीः यो अध्येति,
ऋषिभिः सम्भृतम् रसम्।
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरम्,
सर्पिः मधु उदकम्॥2॥

1300. पावमानीः स्वस्त्ययनीः,
सुदुघा हि घृतश्च्युतः।
ऋषिभिः सम्भृतो रसो,
ब्राह्मणेषु अमृतम् हितम्॥3॥

1301. पावमानीः दधन्तु न,
इमम् लोकम् इथो अमुम्।
कामान् समर्धयन्तु नो,
देवीः देवैः समाहृता॥4॥

1302. येन देवाः पवित्रेण,
आत्मानम् पुनते सदा।
तेन सहस्रधारेण,
पावमानीः पुनन्तु नः॥5॥

1303. पावमानीः स्वस्त्ययनीः,
ताभिः गच्छति नान्दनम्।
पुण्यान् च भक्षान् भक्षयति,
अमृतत्वम् च गच्छति॥6।

(260) सूक्त 9

1304. अगन्म महा नमसा यविष्ठम्,
यो दीदाय समिद्धः स्वे दुरोणे।
चित्रभानुम् रोदसी अन्तः उर्वी,
स्वाहुतम् विश्वतः प्रत्यञ्चम्॥1॥

1305. सः मह्ना विश्वा दुरितानि साह्वन्,
अग्नि ष्टवे दम आ जातवेदाः।
स नो रक्षिषद् दुरितात् अवद्यात्,
अस्मान् गृणत उत नो मघोनः॥2॥

1306. त्वम् वरुण उत मित्रो अग्ने,
त्वाम् वर्धन्ति मतिभिः वसिष्ठाः।
त्वे वसु सुषणनानि सन्तु यूयम्,
पात स्वस्तिभिः सदा नः॥3॥

(261) सूक्त 10

1307. महान् इन्द्रो य ओजसा,
पर्जन्यो वृष्टिमान् इव।
स्तोमैः वत्सस्य वावृधे॥1॥

1308. कण्वा इन्द्रम् यत् अक्रत,
स्तोमैः यज्ञस्य साधनम्।
जामि ब्रुवत आयुधा॥2॥

1309. प्रजाम् ऋतस्य पिप्रतः,
प्र यद् भरन्त वह्नयः।
विप्रा ऋतस्य वाहसा ॥3॥

(262) सूक्त 11

1310. पवमान् अस्य जिघ्नतो,
हरेः चन्द्रा असृक्षत।
जीरा अजिरशोचिषः ॥1॥

1311. पवमानो रथीतमः,
शुभ्रेभिः शुभ्रशस्तमः।
हरिश्चन्द्रो मरुद्गणः ॥2॥

1312. पवमान व्यश्नुहि,
रश्मिभिः वाजसातमः।
दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥3॥

(263) सूक्त 12

1313. परि इतो षिञ्चता सुतम्,
सोमो य उत्तम् हविः।
दधन्वान् यो नर्यो अप्सु अन्तः,
आ सुषाव सोमम् अद्रिभिः ॥1॥

1314. नूनम् पुनानो अविभिः परि,
स्त्रव अदब्धः सुरभिन्तरः।
सुते चित्वा अप्सु मदामो अन्धसा,
श्रीणन्तो गोभिः उत्तरम् ॥2॥

1315. परि स्वानः चक्षसे देवामादनः,
क्रतुः इन्दु विचक्षणः ॥3॥

(264) सूक्त 13

1316. असावि सोमो अरुषो वृषा हरी,
राजा इव दस्मो अभि गा अचिक्रदत्।
पुनानो वारम् अत्येषिं अव्ययम्,
श्येनो न योनि घृतवन्तम् आसदत् ॥1॥

1317. पर्जन्यः पिता महिषस्य पर्णिनो,
नाभा पृथिव्या गिरिषु क्षयम् दधे।
स्वसार आपो अभि गाः उदासरन्,
सम् ग्रावभिः वसते वीते अध्वरे ॥2॥

1318. कविः वेधस्या पर्येषि माहिनम्,
अत्यो न मृष्टो अभि वाजम् अर्षसि।
अप सेधन् दुरिता सोम नो मृड,
धृता वसानः परि यासि निर्णिजम् ॥3॥

(265) सूक्त 14

1319. श्रायन्त इव सूर्यम् विश्वा,
इत् इन्द्रस्य भक्षत।
वसूनि जातो जनिमानि ओजसा,
प्रति भागम् न दीधिमः ॥1॥

1320. अलर्षिरातिम् वसुदाम् उप,
स्तुहि भद्रा इन्द्रास्य रातयः।
यो अस्य कामम् विधतो न रोषति,
मनो दानाय चोदयन् ॥2॥।

(266) सूक्त 15

1321. यत इन्द्र भयामहे,
ततो नो अभयम् कृधि।
मघवन् शग्धि तव तत् न ऊतये,
वि द्विषो वि मृधो जहि ॥1॥

1322. त्वम् हि राधसस्पते राधसो,
महः क्षयस्य असि विधर्ता।
तम् त्वा वयम् मघवन् इन्द्र गिर्वणः,
सुतावन्तो हवामहे ॥2॥

(267) सूक्त 16

1323. त्वम् सोम असि धारयुः,
मन्द्र ओजिष्ठो अध्वरे।
पवस्व मंहयद्रयिः ॥1॥

1324. त्वम् सुतो मदिन्तमो,
दधन्वान् मत्सरिन्तमः।
इन्दुः सत्राजित् अस्तृतः ॥2॥

1325. त्वम् सुष्वाणो अद्रिभिः,
अभ्यर्ष कनिक्रदत्।
द्युमन्तम् शुष्ममा भर ॥3॥

(268) सूक्त 17

1326. पवस्य देववीतय,
इन्दो धाराभिः ओजसा।
आ कलशम् मधुमान् सोम नः सदः ॥1॥

1327. तव द्रप्सा उदप्रुत,
इन्द्रम् मदाय वावृधुः।
त्वाम् देवासो अमृताय कम् पपुः ॥2॥

1328. आ नः सुतास इन्दवः,
पुनाना धावता रयिम्।
वृष्टिद्यावो रीत्यापः स्वर्विदः ॥3॥

(269) सूक्त 18

1329. परि त्यम् हर्यतम् हरिम्,
बभ्रुम् पुनन्ति वारेण।
यो देवान् विश्वान् इत्,
परि मदेन सह गच्छति ॥1॥

1330. द्विः यम् पञ्च स्वयशसम्,
सखायो अद्रिसंहतम्।
प्रियम् इन्द्रस्य काम्यम्,
प्रस्नापयन्त ऊर्मयः ॥2॥

1331. इन्द्राय सोम पातवे,
वृत्रध्ने परि षिच्यसे।
नरे च दक्षिणावते,
वीराय सदनासदे ॥3॥

(270) सूक्त 19

1332. पवस्व सोम महे दक्षाय,
अश्वो न निक्तो वाजी धनाय ॥1॥

1333. प्र ते सोतारो रसम् मदाय,
पुनन्ति सोमम् महे द्युम्नाय ॥2॥

1334. शिशुम् जज्ञानम् हरिम् मृजन्ति,
पवित्रे सोमम् देवेभ्य इन्दुम् ॥3॥

(271) सूक्त 20

1335. उपो षु जातम् अप्तुरम्,
गोभिः भङ्गम् परिष्कृतम्।
इन्दुम् देवा अयासिषुः ॥1॥

1336. तम् इत् वर्धन्तु नो गिरो,
वत्सम् सम् शिश्वरीरिव।
य इन्द्रस्य हृदम् सनिः ॥2॥

1337. अर्षा नः सोम शम् गवे,
धुक्षस्व पिप्युषीम् इषम्।
वर्धा समुद्रम् उक्थ्य ॥3॥

(272) सूक्त 21

1338. आ घा ये अग्निम् इन्धते,
स्तृणन्ति बर्हिः आनुषक्।
येषाम् इन्द्रो युवा सखा ॥1॥

1339. बहन् इत् इध्म एषाम्,
भूरि शस्त्रम् पृथुः स्वरुः।
येषाम् इन्द्रो युवा सखा ॥2॥

1340. अयुद्ध इत् युधा,
वृतम् शूर आजति सत्वभिः।
येषाम् इन्द्रो युवा सखा ॥3॥

(273) सूक्त 22

1341. य एक इत् विदयते,
वसु मर्ताय दाशुषे।
ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग ॥1॥

1342. यः चित् हि त्वा बहुभ्य,
आ सुतावान् आविवासति।
उग्रम् तत् पत्यते शव इन्द्रो अङ्ग ॥2॥

1343. कदा मर्तम् अराधसम्,
पदा क्षुम्पमिव स्फुरत्।
कदा नः शुश्रवद् गिर इन्द्रो अङ्ग ॥3॥

(274) सूक्त 23

1344. गायन्ति त्वा गायत्रिणो,
अर्चन्ति अर्कम् अर्किणः।
ब्रह्माणः त्वा शतक्रत,
उद् वंशमिव येमिरे ॥1॥

1345. यत् सानोः सानु आरुहो,
भूरि स्पष्ट कर्त्वम्।
तत् इन्द्रो अर्थम् चेतति,
यूथेन वृष्णिः एजति ॥2॥

1346. युंक्ष्वा हि केशिना,
हरी वृषणा कक्ष्यप्रा।
अथा न इन्द्र सोमपा,
गिराम् उपश्रुतिम् चर ॥3॥

इति षोडशो अध्यायः

ॐ

अथ सप्तदशो अध्यायः

(275) सूक्त 1

1347. सुषमिद्धो न आ वह,
देवान् अग्ने हविष्मते।
होतः पावक यक्षि च ॥1॥

1348. मधुमन्तम् तनूनपात्,
यज्ञम् देवेषु नः कवे।
अद्या कृणुहि ऊतये ॥2।

1349. नराशंसम् इह प्रियम्,
अस्मिन् यज्ञ उप ह्वये।
मधुजिह्वम् हविष्कृतम् ॥3॥

1350. अग्ने सुखतमे रथे,
देवान् ईडित आ वह।
असि होता मनुः हितः ॥4॥

(276) सूक्त 2

1351. यत् अद्य सूर उदिते,
अनागा मित्रो अर्यमा।
सुवाति सविता भगः ॥1॥

1352. सुप्रावीः अस्तु स क्षयः,
प्र नु यामन् सुदानवः।
ये नो अंहो अतिपिप्रति ॥2॥

1353. उत स्वराजो अदिति,
अदब्धस्य व्रतस्य ये।
महो राजान ईशते ॥3॥

(277) सूक्त 3

1354. उ त्वा मदन्तु सोमाः,
कृणुष्व राधो अद्रिवः।
अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥1॥

1355. पदा पणीन् अराधसो,
नि बाधस्व महान् असि।
न हि त्वा कश्च न प्रति ॥2॥

1356. त्वम् ईशिषे सुतानाम्,
इन्द्र त्वम् असुतानाम्।
त्वम् राजा जनानाम् ॥3॥

(278) सूक्त 4

1357. आ जागृविः विप्र ऋतम् मतीनाम्,
सोमः पुनानो असदत् चमूषु।
सपन्ति यम् मिथुनासो निकामा,
अध्वर्यवो रथिरासः सुहस्ताः ॥1॥

1358. स पुनान उप सूरे दधान,
आ उभे अप्रा रोदसी वी ष आवः।
प्रिया चित् यस्य प्रियसास ऊती,
सतो धनम् कारिणे न प्र यंसत् ॥2॥

1359. स वर्धिता वर्धनः पूयमानः,
सोमो मीढ्वान् अभि नो ज्योतिषा आवित्।
यत्र नः पूर्वे पितरः पदज्ञाः,
स्वर्विदो अभि गा अद्रिम् इष्णन् ॥3॥

(279) सूक्त 5

1360. मा चित् अन्यत् वि शंसत,
सखायो मा रिषण्यत।
इन्द्रम् इत् स्तोता वृषणम् सचा सुते,
मुहुः उक्था च शंसत ॥1॥

1361. अवक्रक्षिणम् वृषभम् यथा,
जुवम् गाम् न चर्षणीसहम्।
विद्वेषणम् संवननम उभयङ्करम्,
मंहिष्ठम् उभयाविनम् ॥2॥

(280) सूक्त 6

1362. उत् उ त्ये मधुमत्तमा,
गिरः स्तोमास ईरते।
सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो,
वाजयन्तो रथा इव ॥1॥

1363. कण्वा इव भृगवः सूर्या,
इव विश्वम् इत् धीतम् आशत।
इन्द्रम् स्तोमेभिः महयन्त आयवः,
प्रियमेधासो अस्वरन् ॥2॥

(281) सूक्त 7

1364. परि उ षु प्र धन्व वाजसातये,
परि वृत्राणि सक्षणिः।
द्विषः तरध्या ऋणया न ईरसे ॥1॥

1365. अजीजनो हि पवमान,
सूर्यम् विधारे शक्मना पयः।
गोजीरया रंहमाणः पुरन्ध्या ॥2॥

1366. अनु हि त्वा सुतम् सोम,
मदामसि महे समर्यराज्ये।
वाजान् अभि पवमान प्र गाहसे ॥3॥

(282) सूक्त 8

1367. परि प्र धन्व एन्द्राय सोम,
स्वादुः मित्राय पूष्णे भगाय ॥1॥

1368. एव अमृताय महे क्षयाय,
स शुक्रो अर्ष दिव्यः पीयूषः ॥2॥

1369. इन्द्रः ते सोम सुतस्य,
पेयात् क्रत्वे दक्षाय विश्वे च देवाः ॥3॥

(283) सूक्त 9

1370. सूर्यस्येव रश्मयो द्रावयित्नवो,
मत्सरासः प्रसुतः साकम् ईरते।
तन्तुम् ततम् परि सर्गास आशवो,
न इन्द्रात् ऋते पवते धाम किञ्चन ॥1॥

1371. उपो मतिः पृच्यते सिच्यते मधु,
मन्द्राजनी चोदते अन्तः आसनि।
पवमानः सन्तनिः सुन्वताम् इव,
मधुमान् द्रप्सः परि वारम् अर्षति ॥2॥

1372. उक्षा मिमेति प्रति यन्ति धेनवो,
देवस्य देवीः उप यन्ति निष्कृतम्।
अत्यक्रमीत् अर्जुनम् वारम् अव्ययम्
अत्कम न निक्तम् परि सोमो अव्यत ॥3॥

(284) सूक्त 10

1373. अग्निम् नरो दीधितिभिः अरण्योः,
हस्तच्युतम् जनयत प्रशस्तम्।
दूरे दृशम् गृहपतिम् अथव्युम् ॥1॥

1374. तम् अग्निम् अस्ते वसवो न्यृण्वन,
सुप्रतिचक्षम् अवसे कुतश्चित्।
दक्षाय्यो यो दम आस नित्यः ॥2॥

1375. प्रेद्धो अग्ने दीदिहि पुरो,
नो अजस्त्रया सूर्म्या यविष्ठ।
त्वाम् शश्वन्त उप यन्ति वाजाः ॥3॥

(285) सूक्त 11

1376. आ अयम् गौः पृश्निः अक्रमीत्,
असदन् मातरम् पुरः।
पितरम् च प्रयन् स्वः ॥1॥

1377. अन्तः चरति रोचना,
अस्य प्राणात् अपानती।
व्यख्यत् महिषो दिवम् ॥2॥

1378. त्रिंशद्धाम वि राजति,
वाक् पतङ्गाय धीयते।
प्रति वस्तोः अह द्युभिः ॥3॥

इति सप्तदशो अध्यायः

ॐ

अथ अष्टादशो अध्यायः

(286) सूक्त 1

1379. उपप्रयन्तो अध्वरम्,
मन्त्रम् वोचेम अग्नये।
आरे अस्मे च शृण्वते ॥1॥

1380. यः स्नीहितीषु पूर्व्यः,
सञ्जग्मानासु कृष्टिषु।
अरक्षत् दाशुषे गयम् ॥2॥

1381. स नो वेदो अमात्यम्,
अग्नी रक्षतु शन्तमः।
उत अस्मान् पातु अंहसः ॥3॥

1382. उत ब्रुवन्तु जन्तव,
उत् अग्निः वृत्रहा अजनि।
धनञ्जयो रणे रणे ॥4॥

(287) सूक्त 2

1383. अग्ने युङ्क्ष्वा हि ये तव,
अश्वासो देव साधवः।
अरम् वहन्ति आशवः ॥1॥

1384. अच्छा नो याहि आ वह,
अभि प्रयांसि वीतये।
आ देवान् सोम पीतये॥2॥

1385. उत अग्ने भारत द्युमत्,
अजस्रेण दविद्युतत्।
शोचा वि भाहि अजर॥3॥

(288) सूक्त 3

1386. प्र सुन्वानाय अन्धसो,
मर्तो न वष्ट तत् वचः।
अप श्वानम् अराधसम्,
हता मखम् न भृगवः॥1॥

1387. आ जामिः अत्के अव्यत,
भुजे न पुत्र ओण्योः।
सरत् जारो न योषणाम्,
वरो न योनिम् आसदम्॥2॥

1388. स वीरो दक्षसाधनो,
वि यः तस्तम्भ रोदसी।
हरिः पवित्रे अव्यत,
वेधा न योनिम् आसदम्॥3॥

(289) सूक्त 4

1389. अभ्रातृव्यो अना त्वम् अनापिः,
इन्द्र जनुषा सनात् असि।
युधा इत् आपित्वम् इच्छसे॥1॥

1390. न की रेवन्तम् सख्याय,
विन्दसे पीयन्ति ते सुराश्वः।
यदा कृणोषि नदनुम् समूहसि,
आत् इत् पितेव हूयसे॥2॥

(290) सूक्त 5

1391. आ त्वा सहस्रम् आ शतम्,
युक्ता रथे हिरण्यये।
ब्रह्मयुजो हरय इन्द्र केशिनो,
वहन्तु सोमपीतये॥1॥

1392. आ त्वा रथे हिरण्यये,
हरी मयूरशेप्या।
शितिपृष्ठा वहताम् मध्वो,
अन्धसो विवक्षणस्य पीतये॥2॥

1393. पिबा त्वा अस्य गिर्वणः,
सुतस्य पूर्वपा इव।
परिष्कृतस्य रसिन इयम्,
आसुतिः चारुः मदाय पत्यते॥3॥

(291) सूक्त 6

1394. आ सोता परि षिञ्चित अश्वम्,
न स्तोमम् अप्तुरम् रजस्तुरम्।
वनप्रक्षम् उदप्रुतम्॥1॥

1395. सहस्त्रधारम् वृषभम्,
पयोदुहम् प्रियम् देवाय जन्मने।
ऋतेन य ऋतजातो विवावृधे,
राजा देव ऋतम् बृहत्॥2॥

(292) सूक्त 7

1396. अग्निः वृत्राणि जङ्घनत्,
द्रविणस्युः विपन्यया।
समिद्धः शुक्र आहुतः॥1॥

1397. गर्भे मातुः पितुः पिता,
विदिद्युतानो अक्षरे।
सीदन् ऋतस्य योनिम् आ॥2॥

1398. ब्रह्म प्रजावत् आ,
भर जातवेदो विचर्षणे।
अग्ने यत् दीदयत् दिवि॥3॥

(293) सूक्त 8

1399. अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो,
देवो देवेभिः समपृक्त रसम्।
सुतः पवित्रम् पर्येति रेभन्,
मितेव सद्म पशुमन्ति होता॥1॥

1400. भद्रा वस्त्रा समन्या वसानो,
महान् कविः निवचनानि शंसन्।
आ वच्यस्व चम्वोः पूयमानो,
विचक्षणो जागृविः देववीतौ॥2॥

1401. सम् उ प्रियो मृज्यते सानो अव्ये,
यशस्तरो यशसाम् क्षैतो अस्मे।
अभि स्वर धन्वा पूयमानो,
यूयम् पात स्वस्तिभिः सदा नः॥3॥

(294) सूक्त 9

1402. एत उ नु इन्द्रम् स्तवाम,
शुद्धम् शुद्धेन साम्ना।
शुद्धैः उक्थैः वावृध्वांसम्,
शुद्धैः आशीर्वान् ममत्तु॥1॥

1403. इन्द्र शुद्धो न आ गहि,
शुद्धः शुद्धाभिः ऊतिभिः।
शुद्धो रयिम् नि धारय,
शुद्धो ममद्धि सोम्य॥2॥

1404. इन्द्र शुद्धो हि नो रयिम्,
शुद्धो रत्नानि दाशुषे।
शुद्धो वृत्राणि जिघ्नसे,
शुद्धो वाजम् सिषाससि॥3॥

(295) सूक्त 10

1405. अग्ने स्तोमम् मनामहे,
सिध्रम् अद्य दिविस्पृशः।
देवस्य द्रविणस्यवः॥1॥

1406. अग्निः जुषत नो गिरो,
होता यो मानुषेषु आ।
स यक्षत् दैव्यम् जनम्॥2॥

1407. त्वम् अग्ने सप्रथा असि,
जुष्टो होता वरेण्यः।
त्वया यज्ञम् वि तन्वते॥3॥

(296) सूक्त 11

1408. अभि त्रिपृष्ठम् वृषणम् वयोधाम्,
अङ्गोषिणम् अवावशन्त वाणीः।
वना वसानो वरुणो न सिन्धुः,
वि रत्नधा दयते वार्याणि॥1॥

409. शूरग्रामः सर्ववीरः सहावान्,
जेता पवस्व सनिता धनानि।
तिग्मायुधः क्षिप्रधन्वा समत्सु,
अषाढः साह्वान् पृतनासु शत्रून्॥2॥

1410. उरुगव्यूतिः अभयानि कृण्वन्,
समीचीने आ पवस्वा पुरन्धी।
अपः सिषासन् उषसः स्वः गाः,
सम् चिक्रदो महो अस्मभ्यम् वाजान्॥3॥

(297) सूक्त 12

1411. त्वम् इन्द्र यशा अस्य,
ऋजीषी शवसस्पतिः।
त्वम् वृत्राणि हंसि प्रतीन एक,
इत् पुरु अनुत्तः चर्षणीधृतिः॥1॥

1412. तम् उ त्वा नूनम् असुर,
प्रचेतसम् राधो भागमिव ईमहे।
मही इव कृत्तिः शरणा त इन्द्र,
प्र ते सुम्ना नो अश्नुवन्॥2॥

(298) सूक्त 13

1413. यजिष्ठम् त्वा ववृमहे देवम्,
देवत्रा होतारम् अमर्त्यम्।
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्॥1॥

1414. अपाम् नपातम् सुभगम्,
सुदीदितिम् अग्निम् उ श्रेष्ठशोचिषम्।
स नो मित्रस्य वरुणस्य सो,
अपाम् आ सुम्नम् यक्षते दिवि ॥2॥

(299) सूक्त 14

1415. यम् अग्ने पृत्सु मर्त्यम्,
अवा वाजेषु यम् जुनाः।
स यन्ता शश्वतीः इषः ॥1॥

1416. न किः अस्य सहन्त्य,
पर्येता कयस्य चित्।
वाजो अस्ति श्रवाय्यः ॥2॥

1417. स वाजम् विश्वचर्षणिः,
अर्वद्भिः अस्तु तरुता।
विप्रेभिः अस्तु सनिता ॥3॥

(300) सूक्त 15

1418. साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारो,
दश धीरस्य धीतयो धनुत्रीः।।
हरिः पर्यद्रवत् जाः सूर्यस्य द्रोणम्,
ननक्षे अत्यो न वाजी ॥1॥

1419. सम् मातृभिः न शिशुः वावशानो,
वृषा दधन्वे पुरुवारो अद्भिः।
मर्यो न योषाम् अभि निष्कृतम्,
यन्त्सम् गच्छते कलश उस्रियाभिः ॥2॥

1420. उत प्र पिप्य ऊधः अघ्न्याया,
इन्दुः धाराभिः सचते सुमेधाः।
मूर्धानम् गावः पयसा चमूषु अभि,
श्रीणन्ति वसुभिः न निक्तैः ॥3॥

(301) सूक्त 16

1421. पिबा सुतस्य रसिनो,
मत्स्व आ न इन्द्र गोमतः।
आपिः नो बोधि सधमाद्ये वृधे,
अस्मान् अवन्तु ते धियः ॥1॥

1422. भूयाम ते सुमतौ वाजिनो,
वयम् मा स्तः भिमातये।
अस्माम् चित्राभिः अवतात् अभिष्टिभिः,
आ नः सुम्नेषु यामय ॥2॥

(302) सूक्त 17

1423. त्रिः अस्मै सप्त धेनवो दुदुह्रिरे,
सत्याम् आशिरम् परमे व्योमनि।
चत्वारि अन्या भुवनानि निर्णिजे,
चारूणि चक्रे यत् ऋतैः अवर्धत ॥1॥

1424. स भक्षमाणो अमृतस्य चारुण,
उभे द्यावा काव्येना वि शश्रथे।
तेजिष्ठा अपो मंहना परि व्यत,
यदी देवस्य श्रवसा सदो विदुः ॥2॥

1425. ते अस्य सन्तु केतवो अमृत्यवो,
अदाभ्यासो जनुषी उभे अनु।
येभिः नृम्णा च देव्या च पुनत,
आत् इत् राजानम् मनना अगृभ्णत॥3॥

(303) सूक्त 18

1426. अभि वायुम् वीति अर्षा गृणानो,
अभि मित्रावरुणा पूयमानः॥
अभी नरम् धीजवनम् रथेष्ठाम्,
अभि इन्द्रम् वृषणम् वज्रबाहुम्॥1।

1427. अभि वस्त्रा सुवसनानि अर्ष,
अभि धेनूः सुदुघाः पूयमानः।
अभि चन्द्रा भर्तवे नो हिरण्या,
अभि अश्वान् रथिनो देव सोम॥2॥

1428. अभी नो अर्ष दिव्या वसूनि,
अभि विश्वा पार्थिवा पूयमानः।
अभि येन द्रविणम् अश्नवाम,
अभि आर्षेयम् जमदग्निवत् नः॥3॥

(304) सूक्त 19

1429. यत् जायथा अपूर्व्य,
मघवन् वृत्रहत्याय।
तत् पृथिवीम् अप्रथयः,
तत् अस्तभ्ना उतो दिवम्॥1॥

1430. तत् ते यज्ञो अजायत,
तत् अर्क उत हस्कृतिः।
तत् विश्वम् अभिभूः असि,
यत् जातम् यत् च जन्त्वम्॥2॥

1431. आमासु पक्वम् ऐरय,
आ सूर्यम् रोहयो दिवि।
घर्मम् न सामम् तपत आ,
सुवृक्तिभिः जुष्टम् गिर्वणसे बृहत्॥3॥

(305) सूक्त 20

1432. मत्सि अपायि ते महः,
पात्रस्येव हरिवो मत्सरो मदः।
वृषा ते वृष्ण इन्दुः,
वाजी सहस्रसातमः॥1॥

1433. आ नः ते गन्तु मत्सरो,
वृषा मदो वरेण्यः।
सहावान् इन्द्र सानसिः,
पृतनाषाड् अमर्त्यः॥2॥

1434. त्वम् हि शूरः सनिता,
चोदयो मनुषो रथम्।
सहावान् दस्युम् अव्रतम्,
ओषः पात्रम् न शोचिषा॥3॥

इति अष्टादशो अध्यायः

ॐ

अथ एकोनविंशो अध्यायः

(306) सूक्त 1

1435. पवस्व वृष्टिम् आ सु नो,
अपाम् ऊर्मिम् दिवः परि।
अयक्ष्मा बृहतीः इषः॥1॥

1436. तया पवस्व धारया,
यया गाव इह आगमन्।
जन्यास उप नो गृहम्॥2॥

1437. घृतम् पवस्व धारय,
यज्ञेषु देववीतमः।
अस्मभ्यम् वृष्टिम् आ पव॥3॥

1438. सः नः ऊर्जे वि अव्ययम्,
पवित्रम् धाव धारय।
देवासः शृणवन् हि कम्॥4॥

1439. पवमानो असिष्यदत्,
रक्षांसि अपजङ्घनत्।
प्रत्नवत् रोचयन् रुचः॥5॥

(307) सूक्त 2

1440. प्रति अस्मै पिपीषते,
विश्वानि विदुषे भर।
अरङ्गमाय जग्मये,
अपश्चादध्वने नरः ॥1॥

1441. आ ईम् एनम् प्रति एतन,
सोमेभिः सोमपातमम्।
अमत्रेभिः ऋजीषिणम्,
इन्द्रम् सुतेभिः इन्दुभिः ॥2॥

1442. यदी सुतेभिः इन्दुभिः,
सोमेभिः प्रतिभूषथ।
वेदा विश्वस्य मेधिरो,
धृषत् तम् तम् इत् एषते ॥3॥

1443. अस्मा अस्मा इत् अन्धसो,
अध्वर्यो प्र भरा सुतम्।
कुवित् समस्य जेन्यस्य,
शर्धतो अभिशस्तेः अवस्वरत् ॥4॥

(308) सूक्त 3

1444. बभ्रवे नु स्वतवसे,
अरुणाय दिविस्पृशे।
सोमाय गाथम् अर्चत ॥1॥

1445. हस्तच्युतेभिः अद्रिभिः,
सुतम् सोमम् पुनीतन।
मधौ आ धावता मधु ॥2॥

1446. नमसा इत् उप सीदत,
दध्ना इत् अभि श्रीणीतन।
इन्दुम् इन्द्रे दधातन ॥3॥

1447. अमित्रहा विचर्षणिः,
पवस्व सोम शम् गवे।
देवेभ्यो अनुकामकृत् ॥4॥

1448. इन्द्राय सोम पातवे,
मदाय परि षिच्यसे।
मनश्चित् मनसः पतिः ॥5॥

1449. पवमान सुवीर्यम्,
रयिम् सोम रिरीहि णः।
इन्दो इन्द्रेण नो युजा ।6॥

(309) सूक्त 4

1450. उत् ध इत् अभि श्रुतामघम्,
वृषभम् नर्यापसम्।
अस्तारम् एषि सूर्य ॥1॥

1451. नव यो नवतिम् पुरो,
बिभेद बाह्वोजसा।
अहिम् च वृत्रहा अवधीत्॥2॥

1452. स न इन्द्रः शिवः सखा,
अश्वावत् गोमत् यवमत्।
उरुधारा इव दोहते॥3॥

(310) सूक्त 5

1453. विभ्राट् बृहत् पिबतु सोम्यम् मधु,
आयुः दधत् यज्ञपतौ अविह्रुतम्।
वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः,
पिपर्ति बहुधा वि राजति॥1॥

1454. विभ्राट् बृहत् सुभृतम् वाजसातमम्,
धर्मम् दिवो धरुणे सत्यम् अर्पितम्।
अमित्रहा वृत्रहा दस्युहन्तमम्,
ज्योतिः जज्ञे असुरहा सपत्नहा॥2॥

1455. इदम् श्रेष्ठम् ज्योतिषाम् ज्योतिः उत्तमम्,
विश्वजित् धनजित् उच्यते बृहत्।
विश्वभ्राड् भ्राजो महि सूर्यो दृश,
उरु पप्रथे सह ओजो अच्युतम्॥3॥

(311) सूक्त 6

1456. इन्द्र क्रतुम् न आ भर,
पिता पुत्रेभ्यो यथा।
शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत,
यामनि जीवा ज्योतिः अशीमहि॥1॥

1457. मा नो अज्ञाता वृजना,
दुराध्यो मा अशिवासो अवक्रमुः।
त्वया वयम् प्रवतः शश्वतीः,
अपो अति शूर तरामसि॥2॥

(312) सूक्त 7

1458. अद्य अद्य आ श्वः श्व,
इन्द्र त्रास्व परे च नः।
विश्वा च नो जरितॄन् सत्पते,
अहा दिवा नक्तम् च रक्षिषः॥1॥

1459. प्रभङ्गी शूरो मघवा,
तुवीमघः संमिश्लो वीर्याय कम्।
उभा ते बाहू वृषणा शतक्रतो,
नि या वज्रम् मिमिक्षतुः॥2॥

(313) सूक्त 8

1460. जनीयन्तो नु अग्रवः,
पुत्रीयन्तः सुदानवः।
सरस्वन्तम् हवामहे॥1॥

(314) सूक्त 9

1461. उत नः प्रिया प्रियासु,
सप्त स्वसा सुजुष्टा।
सरस्वती स्तोम्या भूत्॥1॥

(315) सूक्त 10

1462. तत् सवितुः वरेण्यम्,
भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्॥1॥

(316) सूक्त 11

1463. सोमानाम् स्वरणम्,
कृणुहि ब्रह्मणस्पते।
कक्षीवन्तम् य औशिजः॥1॥

(317) सूक्त 12

1464. अग्न आयूंषि पवस,
आ सुव ऊर्जम् इषम् च नः।
आरे बाधस्य दुच्छुनाम्॥1॥

(318) सूक्त 13

1465. ता नः शक्तम् पार्थिवस्य,
महो रायो दिव्यस्य।
महि वाम् क्षत्रम् देवेषु॥1॥

1466. ऋतम् ऋतेन सपन्ता,
इषिरम् दक्षम् आशाते।
अद्रुहा देवौ वर्धेते॥2॥

1467. वृष्टिद्यावा रीत्यापा,
इषः पती दानुमत्याः।
बृहन्तम् गर्तम् आशाते॥3॥

(319) सूक्त 14

1468. युञ्जन्ति ब्रध्नम् अरुषम्,
चरन्तम् परि तस्थुषः।
रोचन्ते रोचना दिवि॥1॥

1469. युञ्जन्ति अस्य काम्या,
हरी विपक्षसा रथे।
शोणा धृष्णू नृवाहसा॥2॥

1470. केतुम् कृण्वन् अकेतवे,
पेशो मर्या अपेशसे।
सम् उषद्भिः अजायथाः॥3॥

(320) सूक्त 15

1471. अयम् सोम इन्द्र तुभ्यम् सुन्वे,
तुभ्यम् पवते त्वम् अस्य पाहि।
त्वम् ह यम् चकृषे त्वम् ववृष,
इन्दुम् मदाय युज्याय सोमम्॥1॥

1472. स ईम् रथो न भुरिषाट् अयोजि,
महः पुरूणि सातये वसूनि।
आत् ईम् विश्वा नहुष्याणि जाता,
स्वर्षाता वन ऊर्ध्वा नवन्त ॥2॥

1473. शुष्मी शर्धो न मारुतम् पवस्व,
नभिशस्ता दिव्या यथा विट्।
आपो न मक्षू सुमतिः भवा नः,
सहस्राप्साः पृतनाषाण् न यज्ञः ॥3॥

(321) सूक्त 16

1474. त्वम् अग्ने यज्ञानाम्,
होता विश्वेषाम् हितः।
देवेभिः मानुषे जने ॥1॥

1475. स नो मन्द्राभिः अध्वरे,
जिह्वाभिः यजा महः।
आ देवान् वक्षि यक्षि च ॥2॥

1476. वेत्थ आ हि वेधो अध्वनः,
पथः च देव अञ्जसा।
अग्ने यज्ञेषु सुक्रतो ॥3॥

(322) सूक्त 17

1477. होता देवो अमर्त्यः,
पुरस्तात् एति मायया।
विदथानि प्रचोदयन् ॥1॥

1478. वाजी वाजेषु धीयते,
अध्वरेषु प्रणीयते।
विप्रो यज्ञस्य साधनः ॥2॥

1479. धिया चक्रे वरेण्यो,
भूतानाम् गर्भम् आ दधे।
दक्षस्य पितरम् तना ॥3॥

(323) सूक्त 18

1480. आ सुते सिञ्चत श्रियम्,
रोदस्योः अभिश्रयम्।
रसा दधीत वृषभम् ॥1॥

1481. ते जानत स्वम् ओक्याम्,
सम् वत्सासो न मातृभिः।
मिथो नसन्त जामिभिः ॥2॥

1482. उप स्रक्वेषु बप्सतः,
कृण्वते धरुणम् दिवि।
इन्द्रे अग्ना नमः स्वः ॥3॥

(324) सूक्त 19

1483. तत् इत् आस भुवनेषु ज्येष्ठम्,
यतो जज्ञ उग्रः त्वेषनृम्णः।
सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रून्,
अनु यम् विश्वे मदन्ति ऊमाः ॥1॥

1484. वावृधानः शवसा भूर्योजा,
शत्रुः दासाय भियसम् दधाति।
अव्यनत् च व्यनत् च सस्नि सम्,
ते नवन्त प्रभृता मदेषु॥2॥

1485. त्वे क्रतुम् अपि वृञ्जन्ति विश्वे,
द्विः यत् एते त्रिः भवन्ति ऊमाः।
स्वादोः स्वादीयः स्वादुना सृजा सम्,
अदः सु मधु मधुना अभि योधीः॥3॥

(325) सूक्त 20

1486. त्रिकद्रुकेषु महिषो,
यवाशिरम् तुविशुष्मः,
तृम्पत् सोमम् अपिबत्,
विष्णुना सुतम् यथावशम्।

स ईम् ममाद महि कर्म,
कर्तवे महाम् उरुम्,
सैनम् सश्चत् देवो देवम्,
सत्य इन्दुः सत्यम् इन्द्रम्॥1॥

1487. साकम् जातः क्रतुना,
साकम् ओजसा ववक्षिथ,
साकम् वृद्धो वीर्यैः,
सासहिः मृधो विचर्षणिः।

दाता राध स्तुवते काम्यम्,
वसु प्रचेतन सैनम्,
सश्चत् देवो देवम्,
सत्य इन्दुः सत्यम् इन्द्रम्॥2॥

1488. अध त्विषीमान् अभि ओजसा कृविम् युधा अभवत्,
आ रोदसी अपृणत् अस्य मज्मना प्र वावृधे।
अधत्त अन्यम् जठरे प्र ईम् अरिच्यत प्र चेतय,
सैनम् सश्चत् देवो देवम् सत्य इन्दुः सत्यम् इन्द्रम्॥3॥

इति एकोनविंशो अध्यायः

ॐ

अथ विंशो अध्यायः

(326) सूक्त 1

1489. अभि प्र गोपतिम् गिरा,
इन्द्रम् अर्च यथा विदे।
सूनुम् सत्यस्य सत्पतिम्॥1॥

1490. आ हरयः ससृज्रिरे,
अरुषीः अधि बर्हिषि।
यत्र अभि सम् नवामहे॥2॥

1491. इन्द्राय गाव आशिरम्,
दुदुह्रे वज्रिणे मधु।
यत् सीम् उपह्वरे विदत्॥3॥

(327) सूक्त 2

1492. आ नो विश्वासु हव्यम्,
इन्द्रम् समत्सु भूषत।
उप ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहन्,
परमज्या ऋचीषम॥1॥

1493. त्वम् दाता प्रथमो राधसाम्,
असि सत्य ईशानकृत्।
तुविद्युम्नस्य युज्या वृणीमहे,
पुत्रस्य शवसो महः॥2॥

(328) सूक्त 3

1494. प्रत्नम् पीयूषम् पूर्व्यम् यत् उक्थ्यम्,
महो गाहात् दिव आ निरधुक्षत।
इन्द्रम् अभि जायमानम् समस्वरन्॥1॥

1495. आत् ईम् के चित् पश्यमानास आप्यम्,
वसु रुचो दिव्या अभि अनूषत।
दिवो न वारम् सविता व्यूर्णुते॥2॥

1496. अध यत् इमे पवमान रोदसी,
इमा च विश्वा भुवना अभि मज्मना।
यूथे न निष्ठा वृषभा वि राजसि॥3॥

(329) सूक्त 4

1497. इमम् उ षु त्वम् अस्माकम्,
सनिम् गायत्रम् नव्यांसम्।
अग्ने देवेषु प्र वोचः॥1॥

1498. विभक्ता असि चित्रभानो,
सिन्धोः ऊर्मा उपाक आ।
सद्यो दाशुषे क्षरसि॥2॥

1499. आ नो भज परमेषु,
आ वाजेषु मध्यमेषु।
शिक्षा वस्वो अन्तमस्य ॥3॥

(330) सूक्त 5

1500. अहम् इत् हि पितुः परि,
मेधाम् ऋतस्य जग्रह।
अहम् सूर्य इव अजनि ॥1॥

1501. अहम् प्रत्नेन जन्मना,
गिरः शुम्भामि कण्ववत्।
येन् इन्द्रः शुष्मम् इत् दधे ॥2॥

1502. ये त्वाम् इन्द्र न तुष्टुवुः,
ऋषयो ये च तुष्टुवुः।
मम इत् वर्धस्व सुष्टुतः ॥3॥

(331) सूक्त 6

1503. अग्ने विश्वेभिः अग्निभिः,
जोषि ब्रह्म सहस्कृत।
ये देवत्रा य आयुषु तेभिः,
नो महय आ गिरः ॥1॥

1504. प्र स विश्वेभिः अग्निभिः,
अग्निः स यस्य वाजिनः।
तनये तोके अस्मत् आ,
सम्यङ् वाजैः परीवृतः ॥2॥

1505. त्वम् नो अग्ने अग्निभिः,
ब्रह्म यज्ञम् च वर्धय।
त्वं नो देवतातये,
रायो दानाय चोदय ॥3॥

(332) सूक्त 7

1506. त्वे सोम प्रथमा वृक्तबर्हिषो,
महे वाजाय श्रवसे धियम् दधुः।
स त्वम् नो वीर वीर्याय चोदय ॥1॥

1507. अभि अभि हि श्रवसा ततर्दिथ,
उत्सम् न कंचित् जनपानम् अक्षितम्।
शर्याभिः न भरमाणो गभस्त्योः ॥2॥

1508. अजीजनो अमृत मर्त्याय कम्
ऋतस्य धर्मन् अमृतस्य चारुणः।
सदा असरो वाजम् अच्छा सनिष्यदत् ॥3॥

(333) सूक्त 8

1509. आ इन्दुम् इन्द्राय सिञ्चत,
पिबाति सोम्यम् मधु।
प्र राधांसि चोदयते महित्वना ॥1॥

1510. उप उ हरीणाम् पतिम्,
राधः पृञ्चन्तम् अब्रवम्।
नूनम् श्रुधि स्तुवतो अश्वस्य ॥2॥

1511. न हि अङ्ग पुरा च,
न जज्ञे वीरतरः त्वत्।
न की राया न एवथा न भन्दना॥3॥

(334) सूक्त 9

1512. नदम् व ओदतीनाम्,
नदम् योयुवतीनाम्।
पतिम् वो अघ्न्यानाम्,
धेनूनाम् इषुध्यसि॥1॥

(335) सूक्त 10

1513. देवो वो द्रविणोदाः,
पूर्णाम् विवष्टु आसिचम्।
उद्वा सिञ्चध्वम् उप वा पृणध्वम्,
आदित् वो देव ओहते॥1॥

1514. तम् होतारम् अध्वरस्य प्रचेतसम्,
वह्निम् देवा अकृण्वत।
दधाति रत्नम् विधते सुवीर्यम्,
अग्निः जनाय दाशुषे॥2॥

(336) सूक्त 11

1515. अदर्शि गातुवित्तमो,
यस्मिन् व्रतानि दधुः।
उप उ षु जातम् आर्यस्य वर्धनम्,
अग्निम् नक्षन्तु नो गिरः॥1॥

1516. यस्मात् रेजन्त कृष्टयः,
चर्कृत्यानि कृण्वतः।
सहस्रसाम् मेधसातौ इव त्मना,
अग्निम् धीभिः नमस्यत॥2॥

1517. प्र दैवोदासो अग्निः,
देव इन्द्रो न मज्मना।
अनु मातरम् पृथिवीम् वि वावृते,
तस्थौ नाकस्य शर्मणि॥3॥

(337) सूक्त 12

1518. अग्न आयूँषि पवस,
आसुव ऊर्जम् इषम् च नः।
आरे बाधस्व दुच्छुनाम्॥1॥

1519. अग्निः ऋषिः पवमानः,
पाञ्चजन्यः पुरोहितः।
तम् ईमहे महागयम्॥2॥

1520. अग्ने पवस्व स्वपा,
अस्मे वर्चः सुवीर्यम्।
दधत् रयिम् मयि पोषम्॥3॥

(338) सूक्त 13

1521. अग्ने पावक रोचिषा,
मन्द्रया देव जिह्वया।
आ देवान् वक्षि यक्षि च ॥1॥

1522. तम् त्वा धृतस्नो ईमहे,
चित्रभानो स्वर्दृशम्।
देवान् आ वीतये वह ॥2॥

1523. वीतिहोत्रम् त्वा कवे,
द्युमन्तम् समिधीमहि।
अग्ने बृहन्तम् अध्वरे ॥3॥

(339) सूक्त 14

1524. अव आ नो अग्न ऊतिभिः,
गायत्रस्य प्र भर्मणि।
विश्वासु धीषु वन्द्य ॥1॥

1525. आ नो अग्ने रयिम् भर,
सत्रासाहम् वरेण्यम्।
विश्वासु पृत्सु दुष्टरम् ॥2॥

1526. आ नो अग्ने सुचेतुना,
रयिम् विश्वायुपोषसम्।
मार्डीकम् धेहि जीवसे ॥3॥

(340) सूक्त 15

1527. अग्निम् हिन्वन्तु नो धियः,
सप्तिम् आशुम् इव आजिषु।
तेन जेष्म धनम् धनम् ॥1॥

1528. यया गा आकरामहै,
सेनया अग्ने तव ऊत्या।
ताम् नो हिन्व मघत्तये ॥2॥

1529. आ अग्ने स्थूरम् रयिम् भर,
पृथुम् गोमन्तम् अश्विनम्।
अङ्‌ग्धि खम् वर्तय आ पविम् ॥3॥

1530 अग्ने नक्षत्रम् अजरम्,
आ सूर्यम् रोहयो दिवि।
दधत् ज्योतिः जनेभ्यः ॥4॥

1531. अग्ने केतुः विशाम् असि,
प्रेष्ठः श्रेष्ठ उपस्थसत्।
बोध आ स्तोत्रे वयो दधत् ॥5॥

(341) सूक्त 16

1532. अग्निः मूर्धा दिवः ककुत्,
पतिः पृथिव्या अयम्।
अपाम् रेतांसि जिन्वति ॥1॥

1533. ईशिषे वार्यस्य हि,
दात्रस्य अग्ने स्वः पतिः।
स्तोता स्याम् तव शर्मणि ॥2॥

1534. उद् अग्ने शुचयः तव,
शुक्रा भ्राजन्त ईरते।
तव ज्योतींषि अर्चयः ॥3॥

इति विंशो अध्यायः

ॐ

अथ एकविंशो अध्यायः

(342) सूक्त 1

1535. कः ते जामिः जनानाम्,
अग्ने को दाश्वध्वरः।
को ह कस्मिन् असि श्रितः ॥1॥

1536. त्वम् जामि जनानाम्,
अग्ने मित्रो असि प्रियः।
सखा सखिभ्य ईड्यः ॥2॥

1537. यजा नो मित्रावरुणा,
यजा देवान् ऋतम् बृहत्।
अग्ने यक्षि स्वम् दमम् ॥3॥

(343) सूक्त 2

1538. ईडेन्यो नमस्यः,
तिरः तमांसि दर्शतः।
सम् अग्निः इध्यते वृषा ॥1॥

1539. वृषो अग्निः समिध्यते,
अश्वो न देववाहनः।
तम् हविष्मन्त ईडते ॥2॥

1540. वृषणम् त्वा वयम् वृषन्,
वृषणः समिधीमहि।
अग्ने दीद्यतम् बृहत्॥3॥

(344) सूक्त 3

1541. उत् ते बृहन्तो अर्चयः,
समिधानस्य दीदिवः।
अग्ने शुक्रास ईरते॥1॥

1542. उप त्वा जुह्वो मम,
घृताचीः यन्तु हर्यत।
अग्ने हव्या जुषस्व नः॥2॥

1543. मन्द्रम् होतारम् ऋत्विजम्,
चित्रभानुम् विभावसुम्।
अग्निम् ईडे स उ श्रवत्॥3॥

(345) सूक्त 4

1544. पाहि नो अग्न एकया,
पाहि उत द्वितीयया।
पाहि गीर्भिः तिसृभिः ऊर्जाम् पते,
पाहि चतसृभिः वसो॥1॥

1545. पाहि विश्वस्मात् रक्षसो,
अराव्णः प्र स्म वाजेषु नो अव।
त्वाम् इत् नेदिष्ठम् देवातातय,
आपिम् नक्षामहे वृधे॥2॥

(346) सूक्त 5

1546. इनो राजन् अरतिः समिद्धो,
रौद्रो दक्षाय सुषुमान् अदर्शि।
चिकित् वि भाति भासा बृहता,
असिक्नीम् एति रुशतीम् अपाजन्॥1॥

1547. कृष्णाम् यत् एनीम् अभि वर्पसा भूत्,
जनयन् योषाम् बृहतः पितुः जाम्।
ऊर्ध्वम् भानुम् सूर्यस्य स्तभायन्,
दिवो वसुभिः अरतिः वि भाति॥2॥

1548. भद्रो भद्रया सचमान आगात्,
स्वसारम् जारो अभ्येति पश्चात्।
सुप्रकेतैः द्युभिः अग्निः वितिष्ठन्,
उशद्भिः वर्णै अभि रामम् अस्थात्॥3॥

(347) सूक्त 6

1549. कया ते अग्ने अङ्गिर,
ऊर्जो नपात् उपस्तुतिम्।
वराय देव मन्यवे॥1।

1550. दाशेम कस्य मनसा,
यज्ञस्य सहसो यहो।
कद् उ वोच इदम् नमः ॥2॥

1551. अध आ त्वम् हि नस्करो,
विश्वा अस्मभ्यम् सुक्षितीः।
वाजद्रविणसो गिरः ॥3॥

(348) सूक्त 7

1552. अग्न आ याहि अग्निभिः,
होतारम् त्वा वृणीमहे।
आ त्वाम् आनक्तु प्रयता हविष्मती,
यजिष्ठम् बर्हिः आसदे ॥1॥

1553. अच्छा हि त्वा सहसः सूनो,
अङ्गिरः स्रुचः चरन्ति अध्वरे।
ऊर्जो नपातम् घृतकेशम् ईमहे,
अग्निम् यज्ञेषु पूर्व्यम् ॥2॥

(349) सूक्त 8

1554. अच्छ आ नः शीर शोचिषम्,
गिरो यन्तु दर्शतम्।
अच्छा यज्ञासो नमसा पुरूवसुम्,
पुरुप्रशस्तम् ऊतये ॥1॥

1555. अग्निम् सूनुम् सहसो,
जातवेदसम् दानाय वार्याणाम्।
द्विता यो भूत् अमृतो मर्त्येषु,
आ होता मन्द्रतमो विशि ॥2॥

(350) सूक्त 9

1556. अदाभ्यः पुर एता,
विशाम् अग्निः मानुषीणाम्।
तूर्णी रथः सदा नवः ॥1॥

1557. अभि प्रयांसि वाहसा,
दाश्वान् अश्नोति मर्त्यः।
क्षयम् पावकशोचिषः ॥2॥

1558. साह्वान् विश्वा अभियुजः,
क्रतुः देवानाम् अमृक्तः।
अग्निः तुविश्रवस्तमः ॥3॥

(351) सूक्त 10

1559. भद्रो नो अग्निः आहुतो,
भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः।
भद्रा उत प्रशस्तयः ॥1॥

1560. भद्रम् मनः कृणुषु आ वृत्रतूर्ये,
येन आ समत्सु सासहिः।
अव स्थिर आ तनुहि भूरि,
शर्धताम् वनेम आ ते अभिष्टये॥2॥

(352) सूक्त 11

1561. अग्ने वाजस्य गोमत,
ईशानः सहसो यहो।
अस्मे देहि जातवेदो महि श्रवः॥1॥

1562. स इधानो वसुः कविः,
अग्नि ईडेन्यो गिरा।
रेवत् अस्मभ्यम् पुर्वणीक दीदिहि॥2॥

1563. क्षपो राजन् उत त्मना,
अग्ने वस्तोः उत उषसः।
स तिग्मजम्भ रक्षसो दह प्रति॥3॥

(353) सूक्त 12

1564. विशो विशो वो अतिथिम्,
वाजयन्तः पुरुप्रियम्।
अग्निम् वो दुर्यम् वच,
स्तुषे शूषस्य मन्मभिः॥1॥

1565. यम् जनासो हविष्मन्तो,
मित्रम् न सर्पिरासुतिम्।
प्रशंसन्ति प्रशस्तिभिः॥2॥

1566. पन्यांसम् जातवेदसम्,
यो देवताति उद्यता।
हव्यानि ऐरयत् दिवि॥3॥

(354) सूक्त 13

1567. समिद्धम् अग्निम् समिधा गिरा गृणे,
शुचिम् पावकम् पुरो अध्वरे ध्रुवम्।
विप्रम् होतारम् पुरुवारम् अद्रुहम्,
कविम् सुम्नैः ईमहे जातवेदसम्॥1॥

1568. त्वाम् दूतम् अग्ने अमृतम् युगे युगे,
हव्यवाहम् दधिरे पायुम् ईड्यम्।
देवासः च मर्त्तासः च जागृविम्,
विभुम् विश्वपतिम् नमसा नि षेदिरे॥2॥

1569. विभूषन् अग्न उभयान् अनु व्रता,
दूतो देवानाम् रजसी समीयसे।
यत् ते धीतिम् सुमतिम् आवृणीमहे,
अध स्म नः त्रिवरूथः शिवो भव॥3॥

(355) सूक्त 14

1570. उप त्वा जामयो गिरो,
दे दिशतीः हविष्कृतः¯।
वायोः अनीके अस्थिरन्॥1॥

1571. यस्य त्रिधातु अवृतम्,
बर्हिः तस्थौ असन्दिनम्।
आपः चित् नि दधा पदम्॥2॥

1572. पदम् देवस्य मीढुषो,
अनाधृष्टाभिः ऊतिभिः।
भद्रा सूर्य इव उपदृक्॥3॥

इति एकविंशो अध्यायः

ॐ

अथ द्वाविंशो अध्यायः

(356) सूक्त 1

1573. अभि त्वा पूर्वपीतये,
इन्द्र स्तोमेभिः आयवः।
समीचीनास ऋभवः समस्वरन्,
रुद्रा गृणन्त पूर्व्यम्॥1॥

1574. अस्य इत् इन्द्रो वावृधे,
वृष्ण्यम् शवो मदे सुतस्य विष्णवि।
अद्य आ तमस्य महिमानम्,
आयवो अनु ष्टुवन्ति पूर्वथा॥2॥

(357) सूक्त 2

1575. प्र वाम् अर्चन्ति उक्थिनो,
नीथाविदो जरितारः।
इन्द्राग्नी इष आ वृणे॥1॥

1576. इन्द्राग्नी नवतिम् परो,
दासपत्नीः अधूनुतम्।
साकम् एकेन कर्मणा॥2॥

1577. इन्द्राग्नी अपसः परि,
उप प्र यन्ति धीतयः।
ऋतस्य पथ्या अनु ॥3॥

1578. इन्द्राग्नी तविषाणि वाम्,
सधस्थानि प्रयांसि च।
युवोः अप्तूर्यम् हितम् ॥4॥

(358) सूक्त 3

1579. शग्धि उ षु शचीपत,
इन्द्र विश्वाभिः ऊतिभिः।
भगम् न हि त्वा यशसम् वसुविदम्,
अनु शूर चरामसि ॥1॥

1580. पौरो अश्वस्य पुरुकृत् गवाम्,
असि उत्सो देव हिरण्ययः।
न किः हि दानम् परिमर्धिषत् त्वे,
यत् यत् यामि तत् आ भर ॥2॥

(359) सूक्त 4

1581. त्वम् हि एहि चेरवे,
विदा भगम् वसुत्तये।
उद्वावृषस्व मघवन् गविष्टय,
उत् इन्द्र अश्वम् इष्टये ॥1॥

1582. त्वम् पुरू सहस्राणि शतानि,
च यूथा दानाय मंहसे।
आ पुरन्दरम् चकृम,
विप्रवचस इन्द्रम् गायन्तो अवसे ॥2॥

(360) सूक्त 5

1583. यो विश्वा दयते वसु,
होता मन्द्रो जनानाम्।
मधोर्न पात्रा प्रथमानि अस्मै,
प्र स्तोमा यन्तु अग्नये ॥1॥

1584. अश्वम् न गीर्भी रथ्यम्,
सुदानवो मर्मृज्यन्ते देवयवः।
उभे तोके तनये दस्म विश्पते,
पर्षि राधो मघोनाम् ॥2॥

(361) सूक्त 6

1585. इमम् मे वरुण श्रुधी,
हवम् अद्य आ च मृडय।
त्वाम् अवस्युः आ चके ॥1॥

(362) सूक्त 7

1586. कया त्वम् न ऊत्या,
अभि प्र मन्दसे वृषन्।
कया स्तोतृभ्य आ भर ॥1॥

(363) सूक्त 8

1587. इन्द्रम् इत् देवतातय,
इन्द्रम् प्रयति अध्वरे।
इन्द्रम् समीके वनिनो हवामह,
इन्द्रम् धनस्य सातये॥1॥

1588. इन्द्रो मह्ना रोदसी पप्रथत्,
शव इन्द्रः सूर्यम् अरोचयत्।
इन्द्रे ह विश्वा भुवनानि येमिर,
इन्द्रे स्वानास इन्दवः॥2॥

(364) सूक्त 9

1589. विश्वकर्मन् हविषा वावृधानः,
स्वयं यजस्व तन्वाम् स्वाहिते।
मुह्यन्ति अन्ये अभितो जनास,
इह अस्माकम् मघवा सूरिः अस्तु॥1॥

(365) सूक्त 10

1590. अया रुचा हरिण्या, पुनानो विश्वा द्वेषांसि,
तरति सयुग्वभिः, सूरो न सयुग्वभिः।
धारा पृष्ठस्य रोचते पुनानो अरुषो हरिः,
विश्वा यत् रुपा परियासि ऋक्वभिः,
सप्तास्येभिः ऋक्वभिः॥1॥

1591. प्राचीम् अनु प्रदिशम् याति,
चेकितत् सम् रश्मिभिः यतते,
दर्शतो रथो दैव्यो दर्शतो रथः।
अग्मन् उक्थानि पौंस्या,
इन्द्रम् जैत्राय हर्षयन्।
वज्रः च यत् भवथो अनपच्युता,
समत्सु अनपच्युता॥2॥

1592. त्वम् ह त्यत् पणीनाम्, विदो वसु सम् मातृभिः,
मर्जयसि स्व आ दम, ऋतस्य धीतिभिः दमे।
परावतो न साम तत्, यत्र आ रणन्ति धीतयः,
त्रिधातुभिः अरुषीभिः वयो दधे, रोचमानो वयो दधे॥3॥

(366) सूक्त 11

1593. उत नो गोषणिम् धियम्,
अश्वसाम् वाजसाम् उत।
नृवत् कृणुहि ऊतये॥1॥

(367) सूक्त 12

1594. शशमानस्य वा नरः,
स्वेदस्य सत्यशवसः।
विदा कामस्य वेनतः॥1॥

(368) सूक्त 13

1595. उप नः सूनवो गिरः,
शृण्वन्तु अमृतस्य ये।
सुमृडीका भवन्तु नः॥1॥

(369) सूक्त 14

1596. प्र वाम् महि द्यवी अभि,
उपस्तुतिम् भरामहे।
शुची उप प्रशस्तये॥1॥

1597. पुनाने तन्वा मिथः,
स्वेन दक्षेण राजथः।
उह्याथे सनात् ऋतम्॥2॥

1598. मही मित्रस्य साधथः,
तरन्ती पिप्रती ऋतम्।
परि यज्ञम् नि षेदथुः॥3॥

(370) सूक्त 15

1599. अयम् उ ते समतसि,
कपोत इव गर्भधिम्।
वचः तत् चित् न ओहसे॥1॥

1600. स्तोत्रम् राधानाम् पते,
गिर्वाहो वीर यस्य ते।
विभूतिः अस्तु सूनृता॥2॥

1601. ऊर्ध्वः तिष्ठ आ न ऊतये,
अस्मिन् वाजे शतक्रतो।
समन्येषु ब्रवावहै॥3॥

(371) सूक्त 16

1602. गाव उप वद अवटे,
मही यज्ञस्य रप्सुदा।
उभा कर्णा हिरण्यया॥1॥

1603. अभि आरम् इत् अद्रयो,
निषिक्तम् पुष्करे मधु।
अवटस्य विसर्जने॥2॥

1604. सिञ्चन्ति नमसा अवटम्,
उच्चा चक्रम परिज्मानम्।
नीचीनवारम् अक्षितम्॥3॥

(372) सूक्त 17

1605. मा भेम मा श्रमिष्म,
उग्रस्य सख्ये तव।
महत् ते वृष्णो अभिचक्ष्यम्,
कृतम् पश्येम तुर्वशम् यदुम्॥1॥

1606. सव्याम् अनु स्फिग्यम् वावसे,
वृषा न दानो अस्य रोषति।
मध्वा सम्पृक्ताः सारघेण धेनवः,
तूयम एहि द्रव आ पिब॥2॥

(373) सूक्त 18

1607. इमा उ त्वा पुरूवसो,
गिरो वर्धन्तु या मम।
पावकवर्णाः शुचयो,
विपश्चितो अभि स्तोमैः अनूषत ॥1॥

1608. अयम् सहस्रम् ऋषिभिः सहस्कृतः,
समुद्र इव पप्रथे।
सत्यः सो अस्य महिमा गृणे,
शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये ॥2॥

(374) सूक्त 19

1609. यस्य अयम् विश्व आर्यो,
दासः शेवधिपा अरिः।
तिरः चित् अर्ये रुशमे पवीरवि,
तुभ्य इत् सो अज्यते रयिः ॥1॥

1610. तुरण्यवो मधुमन्तम् घृतश्चुतम्,
विप्रासो अर्कम् आनृचुः।
अस्मे रयिः पप्रथे वृष्णयम्,
शवो अस्मे स्वानास इन्दवः ॥2॥

(375) सूक्त 20

1611. गोमत् इन्दो अश्ववत्,
सुतः सुदक्ष धनिव।
शुचिम् च वर्णम् अधि गोषु धारय ॥1॥

1612. स नो हरीणाम् पत,
इन्दो देव प्सरस्तमः।
सखेव सख्ये नर्यो रुचे भव ॥2॥

1613. सनेमि त्वम् अस्मदा,
अदेवम् कम् चित् अत्रिणम्।
साह्वान् इन्दो परि बाधो अप द्वयुम् ॥3॥

(376) सूक्त 21

1614. अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते,
क्रतुम् रिहन्ति मधु अभ्यञ्जते।
सिन्धोः उच्छ्वासे पतयन्तम् उक्षणम्,
हिरण्यपावाः पशुम् अप्सु गृभ्णते ॥1॥

1615. विपश्चिते पवमानाय गायत,
मही न धारा अति अन्धो अर्षति।
अहिः न जूर्णाम् अति सर्पति त्वचम्,
अत्यो न क्रीडन् असरद् वृषा हरिः ॥2॥

1616. अग्रेग्रो राजा आप्यः तविष्यते,
विमानो अह्नाम् भुवनेषु अर्पितः।
हरिः घृतस्नुः सुदृशीको अर्णवे,
ज्योतीरथः पवते राय ओक्यः ॥3॥

इति द्वाविंशो अध्यायः

ॐ

अथ त्रयोविंशो अध्यायः

(377) सूक्त 1

1617. विश्वेभिः अग्ने अग्निभिः,
इमम् यज्ञम् इदम् वचः।
चनो धा सहसो यहो ॥1॥

1618. यत् चित् हि शश्वता,
तना देवम् देवम् यजामहे।
त्वे इत् हूयते हविः ॥2॥

1619. प्रियो नो अस्तु विश्पतिः,
होता मन्द्रो वरेण्यः।
प्रियाः सु अग्नयो वयम् ॥3॥

(378) सूक्त 2

1620. इन्द्रम् वो विश्वतः,
परि हवामहे जनेभ्यः।
अस्माकम् अस्तु केवलः ॥1॥

1621. स नो वृषन् अमुम् चरुम्,
सत्रादावन् अपा वृधि।
अस्मभ्यम् अप्रतिष्कुतः ॥2॥

1622. वृषा यूथा इव वंसगः,
कृष्टीः इयतिः ओजसा।
ईशानो अप्रतिष्कुतः ॥3॥

(379) सूक्त 3

1623. त्वम् नः चित्र ऊत्या,
वसो राधांसि चोदय।
अस्य रायः त्वम् अग्ने रथीः असि,
विदा गाधम् तुचे तु नः ॥1॥

1624. पर्षि तोकम् तनयम् पर्तृभिः,
त्वम् अदब्धैः अप्रयुत्वभिः।
अग्ने हेडांसि दैव्या युयोधि,
नो देवानि ह्वरांसि च ॥2॥

(380) सूक्त 4

1625. किम् इत् ते विष्णो परिचक्षि नाम,
प्र यत् ववक्षे शिपिविष्टो अस्मि।
मा वर्पो अस्मत् अप गूह एतत्,
यत् अन्यरूपः समिथे बभूथ ॥1॥

1626. प्र तत् ते अद्य शिपिविष्ट हव्यम्,
अर्यः शंसामि वयुनानि विद्वान्।
तम् त्वा गृणामि तवसम् अतव्यान्,
क्षयन्तम् अस्य रजसः पराके ॥2॥

1627. वषट् ते विष्णवासः आ कृणोमि,
तत् मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम्।
वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे,
यूयम् पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥3॥

(381) सूक्त 5

1628. वायो शुक्रो अयामि ते,
मध्वो अग्रम् दिविष्टिषु।
आ याहि सोमपीतये,
स्पार्हो देव नियुत्वता ॥1॥

1629. इन्द्रः च वायो एषाम्,
सोमानाम् पीतिम् अर्हथः।
युवाम् हि यन्ति इन्दवो,
निम्नम् अपो न सध्र्यक् ॥2॥

1630. वायो इन्द्रः च शुष्मिणा,
सरथम् शवसः पती।
नियुत्वन्ता न ऊतये,
आ यातम् सोमपीतये ॥3॥

(382) सूक्त 6

1631. अध क्षपा परिष्कृतो,
वाजान् अभि प्र गाहसे।
यदी विवस्वतो धियो,
हरिम् हिन्वन्ति यातवे ॥1॥

1632. तम् अस्य मर्जयामसि,
मदो य इन्द्रपातमः।
यम् गाव आसभिः दधुः,
पुरा नूनम् च सूरयः ॥2॥

1633. तम् गाथया पुराण्या,
पुनानम् अभ्यनूषत।
उतो कृपन्त धीतयो,
देवानाम् नाम बिभ्रतीः ॥3॥

(383) सूक्त 7

1634. अश्वम् न त्वा वारवन्तम्,
वन्दध्या अग्निम् नमोभिः।
सम्राजन्तम् अध्वराणाम् ॥1॥

1635. स घा नः सूनुः शवसा,
पृथुप्रगामा सुशेवः।
मीढ्वान् अस्माकम् बभूयात् ॥2॥

1636. स नो दूरात् च आसात्,
च नि मर्त्यात् अघायोः।
पाहि सदम् इत् विश्वायुः ॥3॥

(384) सूक्त 8

1637. त्वम् इन्द्र प्रतूर्तिषु,
अभि विश्वा असि स्पृधः।
अशस्तिहा जनिता वृत्रतूः,
असि त्वम् तूर्य तरुष्यतः॥1॥

1638. अनु ते शुष्मम् तुरयन्तम्,
ईयतुः क्षोणी शिशुम् न मातरा।
विश्वाः ते स्पृधः श्नथयन्त,
मन्यवे वृत्रम् यत् इन्द्र तूर्वसि॥2॥

(385) सूक्त 9

1639. यज्ञ इन्द्रम् अवर्धयत्,
यत् भूमिम् व्यवर्तयत्।
चक्राण ओपशम् दिवि॥1॥

1640. वि अन्तरिक्षम् अतिरन्,
मदे सोमस्य रोचना।
इन्द्रो यत् अभिनत् वलम्॥2॥

1641. उत् गा आजत् अङ्गिरोभ्य,
आविष्कृण्वन् गुहा सतीः।
अर्वाञ्चम् नुनुदे वलम्॥3॥

(386) सूक्त 10

1642. त्यम् उ वः सत्रासाहम्,
विश्वासु गीर्षु आयतम्।
आ च्यावयसि ऊतये॥1॥

1643. युध्मम् सन्तम् अनर्वाणम्,
सोमपाम् अनपच्युतम्।
नरम् अवार्यक्रतुम्॥2॥

1644. शिक्षा ण इन्द्र राय आ,
पुरु विद्वान् ऋचीषम।
अव आ नः पार्ये धने॥3॥

(387) सूक्त 11

1645. तव त्यत् इन्द्रियम् बृहत्,
तव दक्षम् उत क्रतुम्।
वज्रम् शिशाति धिषणा वरेण्यम्॥1॥

1646. तव द्यौः इन्द्र पौंस्यम्,
पृथिवी वर्धति श्रवः।
त्वाम् अपः पर्वतासः च हिन्विरे॥2॥

1647. त्वाम् विष्णुः बृहत् क्षयो,
मित्रो गृणाति वरुणः।
त्वाम् शर्द्धा मदति अनु मारुतम्॥3॥

(388) सूक्त 12

1648. नमः ते अग्न ओजसे,
गृणन्ति देव कृष्टयः।
अमैः अमित्रम् अर्दय ॥1॥

1649. कुवित् सु नो गविष्टये,
अग्ने सम् वेषिषो रयिम्।
उरुकृत् उरु ण कृधि ॥2॥

1650. मा नो अग्ने महाधने,
परा वर्क् भारभृत् यथा।
सम् वर्गम् सम् रयिम् जय ॥3॥

(389) सूक्त 13

1651. सम् अस्य मन्यवे विशो,
विश्वा नमन्त कृष्टयः।
समुद्राय इव सिन्धवः ॥1॥

1652. वि चित् वृत्रस्य दोधतः,
शिरो बिभेद वृष्णिना।
वज्रेण शतपर्वणा ॥2॥

1653. ओजः तत् अस्य तित्विष,
उभे यत् समवर्त्तयत्।
इन्द्रः चर्म इव रोदसी ॥3॥

(390) सूक्त 14

1654. सुमन्मा वस्वी रन्ती सूनरी ॥1॥

1655. सरूप वृषन् आ गहि,
इमौ भद्रौ धुर्यौ अभि।
तौ इमा उप सर्पतः ॥2॥

1656. नीव शीर्षाणि मृढ्वम्,
मध्य आपस्य तिष्ठति।
शृङ्गेभिः दशभिः दिशन् ॥3॥

इति त्रयोविंशो अध्याय

ॐ

अथ चतुर्विंशो अध्यायः

(391) सूक्त 1

1657. पन्यम् पन्यम् इत् सोतार,
आ धावत मद्याय।
सोमम् वीराय शूराय॥1॥

1658. आ इह हरी ब्रह्मयुजा,
शग्मा वक्षतः सखायम्।
इन्द्रम् गीर्भिः गिर्वणसम्॥2॥

1659. पाता वृत्रहा सुतमा,
घ आ गमत् आरे अस्मत्।
नि यमते शतमूतिः॥3॥

(392) सूक्त 2

1660. आ त्वा विशन्तु इन्दवः,
समुद्रम् इव सिन्धवः।
न त्वाम् इन्द्र अति रिच्यते॥1॥

1661. विव्यक्थ महिना वृषन्,
भक्षम् सोमस्य जागृवे।
य इन्द्र जठरेषु ते॥2॥

1662. अरम् त इन्द्र कुक्षये,
सोमो भवतु वृत्रहन्।
अरम् धामभ्य इन्दवः॥3॥

(393) सूक्त 3

1663. जराबोध तत् विविड्ढि,
विशेविशे यज्ञियाय।
स्तोमम् रुद्राय दृशीकम्॥1।

1664. स नो महान् अनिमानो,
धूमकेतुः पुरुश्चन्द्रः।
धिये वाजाय हिन्वतु॥2॥

1665. स रेवान् इव विश्पतिः,
दैव्यः केतुः शृणोतु नः।
उक्थैः अग्निः बृहत् भानुः॥3॥

(394) सूक्त 4

1666. तत् वो गाय सुते सचा,
पुरुहूताय सत्वने।
शम् यत् गवे न शाकिने॥1॥

1667. न घा वसुः नि यमते,
दानम् वाजस्य गोमतः।
यत् सीम् उपश्रवत् गिरः॥2॥

1668. कुवित्सस्य प्र हि व्रजम्,
गोमन्तम् दस्युहा गमत्।
शचीभिः अप नो वरत्॥3॥

(395) सूक्त 5

1669. इदम् विष्णुः वि चक्रमे,
त्रेधा नि दधे पदम्।
समूढम् अस्य पांसुले॥1॥

1670. त्रीणि पदा वि चक्रमे,
विष्णुः गोपा अदाभ्यः।
अतो धर्माणि धारयन्॥2॥

1671. विष्णोः कर्माणि पश्यत,
यतो व्रतानि पस्पशे।
इन्द्रस्य युज्यः सखा॥3॥

1672. तत् विष्णोः परमम् पदम्,
सदा पश्यन्ति सूरयः।
दिवि इव चक्षुः आततम्॥4॥

1673. तत् विप्रासो विपन्युवो,
जागृवांसः समिन्धते।
विष्णोः यत् परमम् पदम्॥5॥

1674. अतो देवा अवन्तु नो,
यत् उ विष्णुः विचक्रमे।
पृथिव्या अधि सानवि॥6॥

(396) सूक्त 6

1675. मा उ षु त्वा वाघतः च,
नारे अस्मत् नि रीरमन्।
आरात्तात् वा सधमादम्,
न आ गहीह वा सन् उप श्रुधि॥1॥

1676. इमे हि ते ब्रह्मकृतः सु ते,
सचा मधौ न मक्ष आसते।
इन्द्रे कामम् जरितारो वसूयवो,
रथे न पादम् आ दधुः॥2॥

(397) सूक्त 7

1677. अस्तावि मन्म पूर्व्यम्,
ब्रह्म इन्द्राय वोचत।
पूर्वीः ऋतस्य बृहतीः अनूषत,
स्तोतुः मेधाः असृक्षत॥1॥

1678. सम् इन्द्रो रायो बृहतीः अधूनुत,
सम् क्षोणी सम् उ सूर्यम्।
सम् शुक्रासः शुचयः सम् गवाशिरः,
सोमा इन्द्रम् अमन्दिषुः॥2॥

(398) सूक्त 8

1679. इन्द्राय सोम पातवे,
वृत्रघ्ने परि षिच्यसे।
नरे च दक्षिणावते,
वीराय सदनासदे ॥1॥

1680. तम् सखायः पुरूरुचम्,
वयम् यूयम् च सूरयः।
अश्याम वाजगन्ध्यम्,
सनेम वाजः पत्यम् ॥2॥

1681. परि त्यम् हर्यतम् हरिम्,
बभ्रुम् पुनन्ति वारेण।
यो देवान् विश्वान् इत् परि,
मदेन सह गच्छति ॥3॥

(399) सूक्त 9

1682. कः तम् इन्द्र त्वा वसो,
आ मर्त्यो दधर्षति।
श्रद्धा हि ते मघवन् पार्ये दिवि,
वाजी वाजम् सिषासति ॥1॥

1683. मधोनः स्म वृत्रहति एषु चोदय,
ये ददति प्रिया वसु।
तव प्रणीती हरि अश्व सूरिभिः,
विश्वा तरेम दुरिता ॥2॥

(400) सूक्त 10

1684. आ इत् उ मधोः मदिन्तरम्,
सिञ्च अध्वर्यो अन्धसः।
एवा हि वीर स्तवते सदावृधः ॥1॥

1685. इन्द्र स्थातः हरीणाम्,
न किः ते पूर्व्यस्तुतिम्।
उदानंश शवसा न भन्दना ॥2॥

1686. तम् वो वाजानाम् पतिम्,
अहूमहि श्रवस्यवः।
अप्रायुभिः यज्ञेभिः वावृधेन्यम् ॥3॥

(401) सूक्त 11

1687. तम् गूर्धया स्वः नरम् देवासो,
देवम् अरतिम् दधन्विरे।
देवत्रा हव्यम् ऊहिषे ॥1॥

1688. विभूतरातिम् विप्र चित्रशोचिषम्,
अग्निम् ईडिष्व यन्तुरम्।
अस्य मेधस्य सोम्यस्य सोभरे,
प्र ईम् अध्वराय पूर्व्यम् ॥2॥

(402) सूक्त 12

1689. आ सोम स्वानो अद्रिभिः,
तिरो वाराणि अव्यया।
जनो न परि चम्वोः विशत्,
हरिः सदो वनेषु दध्रिषे॥1॥

1690. स मामृजे तिरो अण्वानि मेष्यो,
मीढ्वान् सप्तिः न वाजयुः।
अनुमाद्यः पवमानो मनीषिभिः,
सोमो विप्रेभिः ऋक्वभिः॥2॥

(403) सूक्त 13

1691. वयम् एनम् इत् आ हि,
अपीपेम् इह वज्रिणम्।
तस्मा उ अद्य सवने सुतम्,
भरा नूनम् भूषत श्रुते॥1॥

1692. वृकः चित् अस्य वारण उरामथिः,
आ वयुनेषु भूषति।
सा इमम् नः स्तोमम् जुजुषाण आ गहि,
इन्द्र प्र चित्रया धिया॥2॥

(404) सूक्त 14

1693. इन्द्र अग्नी रोचना दिवः,
परि वाजेषु भूषथः।
तत् वाम् चेति प्र वीर्यम्॥1॥

1694. इन्द्र अग्नी अपसः परि,
उप प्र यन्ति धीतयः।
ऋतस्य पथ्या अनु॥2॥

1695. इन्द्र अग्नी तविषाणि वाम्,
सधस्थानि प्रयांसि च।
युवोः अप्तूर्यम् हितम्॥3॥

(405) सूक्त 15

1696. कईम् वेद सुते सचा,
पिबन्तम् कत् वयो दधे।
अयम् यः पुरो विभिनत्ति ओजसा,
मन्दानः शिप्री अन्धसः॥1॥

1697. दाना मृगो न वारणः,
पुरुत्रा चरथम् दधे।
न किः त्वा नि यमदा सुते गमो,
महान् चरसि ओजसा॥2॥

1698. यः उग्रः सन् अनिष्टृतः,
स्थिरो रणाय संस्कृतः।
यदि स्तोतुः मघवा शृणवत्,
हवम् न इन्द्रो योषति आ गमत् ॥3॥

(406) सूक्त 16

1699. पवमाना असृक्षत,
सोमाः शुक्रास इन्दवः।
अभि विश्वानि काव्या ॥1॥

1700. पवमाना दिवः परि,
अन्तरिक्षात् असृक्षत।
पृथिव्या अधि सानवि ॥2॥

1701. पवमानास आशवः,
शुभ्रा असृग्रम् इन्दवः।
घ्नन्तो विश्वा अप द्विषः ॥3॥

(407) सूक्त 17

1702. तोशा वृत्रहणा हुवे,
सजित्वाना अपराजिता।
इन्द्र अग्नी वाजसातमा ॥1॥

1703. प्र वाम् अर्चन्ति उक्थिनो,
नीथाविदो जरितारः।
इन्द्र अग्नी इष आ वृणे ॥2॥

1704. इन्द्र अग्नी नवतिम् पुरो,
दासपत्नीः अधूनुतम्।
साकम् एकेन कर्मणा ॥3॥

(408) सूक्त 18

1705. उप त्वा रण्व संदृशम्,
प्रयस्वन्तः सहस्कृत।
अग्ने ससृज्महे गिरः ॥1॥

1706. उप छायाम् इव घृणेः,
अगन्म शर्म ते वयम्।
अग्ने हिरण्यसंदृशः ॥2॥

1707. य उग्र इव शर्यहा,
तिग्मशृङ्गो न वंसगः।
अग्ने पुरो रुरोजिथ ॥3॥

(409) सूक्त 19

1708. ऋतावानम् वैश्वानरम्,
ऋतस्य ज्योतिषः पतिम्।
अजस्रम् घर्मम् ईमहे ॥1॥

1709. य इदम् प्रतिपप्रथे,
यज्ञस्य स्वः उत्तिरन्।
ऋतून् उत्सृजते वशी ॥2॥

1710. अग्निः प्रियेषु धामसु,
कामो भूतस्य भव्यस्य।
सम्राट् एको विराजति ॥3॥

इति चतुर्विंशो अध्यायः

ॐ

अथ पञ्चविंशो अध्यायः

(410) सूक्त 1

1711. अग्निः प्रत्नेन जन्मना,
शुम्भानः तन्वाम् स्वाम्।
कविः विप्रेण वावृधे ॥1॥

1712. ऊर्जो न पातम् आ हुवे,
अग्निम् पावकशोचिषम्।
अस्मिन् यज्ञे स्वध्वरे ॥2॥

1713. स नो मित्रमहः त्वम्,
अग्ने शुक्रेण शोचिषा।
देवैः आ सत्सि बर्हिषि ॥3॥

(411) सूक्त 2

1714. उत् ते शुष्मासो अस्थू,
रक्षो भिन्दन्तो अद्रिवः।
नुदस्व याः परिस्पृधः ॥1॥

1715. अया निजघ्निः ओजसा,
रथसंगे धने हिते।
स्तवा अबिभ्युषा हृदा ॥2॥

1716. अस्य व्रतानि नाधृषे,
पवमानस्य दूढ्या।
रुज यः त्वा पृतन्यति ॥3॥

1717. तम् हिन्वन्ति मदच्युतम्,
हरिम् नदीषु वाजिनम्।
इन्दुम् इन्द्राय मत्सरम् ॥4॥

(412) सूक्त 3

1718. आ मन्द्रैः इन्द्र हरिभिः,
याहि मयूररोमभिः।
मा त्वा के चित् नि येमुः इत्,
न पाशिनो अति धन्वेव तान् इहि ॥1॥

1719. वृत्रखादो वलम् रुजः,
पुराम् दर्मो अपामजः।
स्थाता रथस्य हर्योः अभिस्वर,
इन्द्रो दृढा चित् आरुजः ॥2॥

1720. गम्भीराम् उदधीः इव,
क्रतुम् पुष्यसि गा इव।
प्र सुगोपा यवसम् धेनवो यथा,
ह्रदम् कुल्या इवाशत ॥3॥

(413) सूक्त 4

1721. यथा गौरो अपा कृतम्,
तृष्यन् एति अव ईरिणम्।
आपित्वे नः प्रपित्वे तूयमा गहि,
कण्वेषु सु सचा पिब ॥1॥

1722. मन्दन्तु त्वा मघवन् इन्द्र इन्दवो,
राधो देयाय सुन्वते।
आमुष्य आ सोमम् अपिबः चमू सुतम्,
ज्येष्ठम् तत् दधिषे सहः ॥2॥

(414) सूक्त 5

1723. त्वम् अङ्ग प्र शंसिषो,
देवः शविष्ठ मर्त्यम्।
न त्वत् अन्यो मघवन् अस्ति,
मर्डिता इन्द्र ब्रवीमि ते वचः ॥1॥

1724. मा ते राधांसि मा त ऊतयो,
वसो अस्मान् कदा चना दभन्।
विश्वा चन उप मिमीहि मानुष,
वसूनि चर्षणीभ्य आ ॥2॥

(415) सूक्त 6

1725. प्रतिष्या सूनरी जनी,
व्युच्छन्ती परि स्वसुः।
दिवो अदर्शि दुहिता ॥1॥

1726. अश्वा इव चित्रा अरुषी,
माता गवाम् ऋतावरी।
सखा भूत् अश्विनोः उषाः ॥2॥

1727. उत सखा असि अश्विनोः,
उत माता गवाम् असि।
उत उषो वस्व ईशिषे ॥3॥

(416) सूक्त 7

1728. एषो उषा अपूर्व्या,
व्युच्छति प्रिया दिवः।
स्तुषे वाम् अश्विना बृहत् ॥1॥

1729. या दस्रा सिन्धुमातरा,
मनोतरा रयीणाम्।
धिया देवा वसुविदा ॥2॥

1730. वच्यन्ते वाम् ककुहासो,
जूर्णायाम् अधि विष्टपि।
यत् वाम् रथो विभिः पतात् ॥3॥

(417) सूक्त 8

1731. उषः तत् चित्रम् आ भर,
अस्मभ्यम् वाजिनीवति।
येन तोकम् च तनयम् च धामहे ॥1॥

1732. उषो अद्य इह गोमति,
अश्वावति विभावरि।
रेवत् अस्मे व्युच्छ सूनृतावति ॥2॥

1733. युङ्क्ष्वा हि वाजिनीवति,
अश्वान् अद्य अरुणान् उषः।
अथा नो विश्वा सौभगानि आ वह ॥3॥

(418) सूक्त 9

1734. अश्विना वर्तिः अस्मत् आ,
गोमत् दस्रा हिरण्यवत्।
अर्वाक् रथम् समनसा नि यच्छतम् ॥1॥

1735. आ इह देवा मयोभुवा,
दस्रा हिरण्यवर्त्तनी।
उषः बुधो वहन्तु सोमपीतये ॥2॥

1736. यौ इत्था श्लोकमा दिवो,
ज्योतिः जनाय चक्रथुः।
आ न ऊर्जम् वहतम् अश्विना युवम् ॥3॥

(419) सूक्त 10

1737. अग्निम् तम् मन्ये यो वसुः,
अस्तम् यम् यन्ति धेनवः।
अस्तम् अर्वन्त आशवो,
अस्तम् नित्यासो वाजिन,
इषम् स्तोतृभ्य आ भर ॥1॥

1738. अग्निः हि वाजिनम् विशे,
ददाति विश्वचर्षणिः।
अग्नी राये स्वाभुवम्,
स प्रीतो याति वार्यम्
इषम् स्तोतृभ्य आ भर॥2॥

1739. सो अग्निः यो वसुः गृणे,
सम् यम् आ यन्ति धेनवः।
सम् अर्वन्तो रघुद्रुवः,
सम् सुजातासः सूरय,
इषम् स्तोतृभ्य आ भर॥3॥

(420) सूक्त 11

1740. महे नो अद्य बोधय,
उषो राये दिवित्मती।
यथा चित् नो अबोधयः,
सत्यश्रवसि वाय्ये,
सुजाते अश्वसूनृते॥1॥

1741. या सुनीथे शौचद्रथे,
व्यौच्छो दुहितः दिवः।
सा व्युच्छ सहीयसि,
सत्यश्रवसि वाय्ये,
सुजाते अश्वसूनृते॥2॥

1742. सा नो अद्य आ भरत् वसुः,
व्युच्छा दुहितः दिवः।
या उ व्यौच्छः सहीयसि,
सत्यश्रवसि वाय्ये,
सुजाते अश्वसूनृते॥3॥

(421) सूक्त 12

1743. प्रति प्रियतमम् रथम्,
वृषणम् वसुवाहनम्।
स्तोता वाम् अश्विनौ ऋषि,
स्तोमेभिः भूषति प्रति,
माध्वी मम श्रुतम् हवम्॥1॥

1744. अति आयातम् अश्विना,
तिरो अश्विना अहम् सना।
दस्रा हिरण्यवर्तनी,
सुषुम्णा सिन्धुवाहसा,
माध्वी मम श्रुतम् हवम्॥2॥

1745. आ नो रत्नानि बिभ्रतौ,
अश्विना गच्छतम् युवम्।
रुद्रा हिरण्यवर्तनी,
जुषाणा वाजिनी वसू,
माध्वी मम श्रुतम् हवम्॥3॥

(422) सूक्त 13

1746. अबोधि अग्निः समिधा जनानाम्,
प्रति धेनुम् इव आयतीम् उषासम्।
यह्वा इव प्र वयाम् उज्जिहानाः,
प्र भानवः सस्रते नाकम् अच्छ॥1॥

1747. अबोधि होता यजथाय देवान्,
ऊर्ध्वो अग्निः सुमनाः प्रातः अस्थात्।
समिद्धस्य रुशत् अदर्शि पाजो,
महान् देवः तमसो निरमोचि॥2॥

1748. यत् ईम् गणस्य रशनाम् अजीगः,
शुचिः अङ्क्ते शुचिभिः गोभिः अग्निः।
आत् दक्षिणा युज्यते वाजयन्ति,
उत्तानाम् ऊर्ध्वो अधयत् जुहूभिः॥3॥

(423) सूक्त 14

1749. इदम् श्रेष्ठम् ज्योतिषाम् ज्योतिः आगात्,
चित्रः प्रकेतो अजनिष्ट विभ्वा।
यथा प्रसूता सवितुः सवाय,
एवा रात्री उषसे योनिम् आरैक्॥1॥

1750. रुशद्वत्सा रुशती श्वेत्या आगात्,
आरैक् उ कृष्णा सदनानि अस्याः।
समानबन्धू अमृते अनूची,
द्यावा वर्णम् चरत आमिनाने॥2॥

1751. समानो अध्वा स्वस्रोः अनन्तः,
तम् अन्या अन्या चरतो देवशिष्टे।
न मेथेते न तस्थतुः सुमेके,
नक्तोषासा समनसा विरूपे॥3॥

(424) सूक्त 15

1752. आ भाति अग्निः उषसाम् अनीकम्,
उत विप्राणाम् देवया वाचः अस्थुः।
अर्वाञ्चा नूनम् रथ्या इह यातम्,
पीपिवांसम् अश्विना घर्मम् अच्छ॥1॥

1753. न संस्कृत प्र मिमीतो गमिष्ठान्ति,
नूनम् अश्विना उपस्तुता इह।
दिवा-भिपित्वे अवसा गमिष्ठा,
प्रति अवर्त्तिम् दाशुषे शम् भविष्ठा॥2॥

1754. उत आ यातम् सङ्गवे प्रातः,
अह्नो मध्यन्दिन उदिता सूर्यस्य।
दिवा नक्तम् अवसा शन्तमेन,
न इदानीम् पीतिः अश्विना ततान॥3॥

(325) सूक्त 16

1755. एता उ त्या उषसः केतुम् अक्रत,
पूर्वे अर्धे रजसो भानुम् अञ्जते।
निष्कृण्वाना आयुधानि इव धृष्णवः,
प्रति गावो अरुषीः यन्ति मातरः॥1॥

1756. उदा-पप्तन् आरुणा भानवो वृथा,
स्वायुजो अरुषीः गा अयुक्षत।
अक्रन् उषासो वयुनानि पूर्वथा,
रुशन्तम् भानुम् अरुषीः अशिश्रयुः ॥2॥

1757. अर्चन्ति नारीः अपसो न विष्टिभिः,
समानेन योजनेन आ परावतः।
इषम् वहन्तीः सुकृते सुदानवे,
विश्वा इत् अह यजमानाय सुन्वते ॥3॥

(426) सूक्त 17

1758. अबोधि अग्निः ज्म उदेति सूर्यो,
वि उषाः चन्द्रा मही आवो अर्चिषा।
आयुक्षाताम् अश्विना यातवे रथम्,
प्रासावीत् देवः सविता जगत् पृथक् ॥1॥

1759. यत् युञ्जाथे वृषणम् अश्विना रथम्,
घृतेन नो मधुना क्षत्रम् उक्षतम्।
अस्माकम् ब्रह्म पृतनासु जिन्वतम्,
वयम् धना शूरसाता भजेमहि ॥2॥

1760. अर्वाङ् त्रिचक्रो मधुवाहनो रथो,
जीराश्वो अश्विनोः यातु सुष्टुतः।
त्रिबन्धुरो मघवा विश्वसौभगः,
शम् न आ वक्षत् द्विपदे चतुष्पदे ॥3॥

(427) सूक्त 18

1761. प्र ते धारा असश्चतो,
दिवो न यन्ति वृष्टयः।
अच्छ आ वाजम् सहस्रिणम् ॥1॥

1762. अभि प्रियाणि काव्या,
विश्वा चक्षाणो अर्षति।
हरिः तुञ्जान आयुधा ॥2॥

1763. स मर्मृजान आयुभिः,
इभो राजा इव सुव्रतः।
श्येनो न वसुम् षीदति ॥3॥

1764. स नो विश्वा दिवो,
वसूतो पृथिव्या अधि।
पुनान इन्दव आ भर ॥4॥

इति पञ्चविंशो अध्यायः

ॐ

अथ षड्विंशो अध्यायः

(428) सूक्त 1

1765. प्र अस्य धारा अक्षरन्,
वृष्णः सुतस्य ओजसः।
देवान् अनु प्रभूषतः ॥1॥

1766. सप्तिम् मृजन्ति वेधसो,
गृणन्तः कारवो गिरा।
ज्योतिः जज्ञानम् उक्थ्यम् ॥2॥

1767. सुषहा सोम तानि ते,
पुनानाय प्रभूवसो।
वर्धा समुद्रम् उक्थ्य ॥3॥

(429) सूक्त 2

1768. एष ब्रह्मा य ऋत्विय,
इन्द्रो नाम श्रुतो गृणे ॥1॥

1769. त्वाम् इत् शवसस्पते,
यन्ति गिरो न संयतः ॥2॥

1770. वि स्रुतयो यथा पथा,
इन्द्र त्वत् यन्तु रातयः ॥3॥

(430) सूक्त 3

1771. आ त्वा रथम् यथा ऊतये,
सुम्नाय वर्तयाम् असि।
तुविकूर्मिम् ऋतीषहम्,
इन्द्रम् शविष्ठम् सत्पतिम् ॥1॥

1772. तुविशुष्म तुविक्रता,
शचीवो विश्वया मते।
आ पप्राथ महित्वना ॥2॥

1773. यस्य ते महिना महः,
परि ज्मायन्तम् ईयतुः।
हस्ता वज्रम् हिरण्ययम् ॥3॥

(431) सूक्त 4

1774. आ यः पुरम् नार्मिणीम् अदीदेत्,
अत्यः कविः नभन्यो न अर्वा।
सूरो न रुरुक्वान् शतात्मा ॥1॥

1775. अभि द्विजन्मा त्री रोचनानि,
विश्वा रजांसि शुशुचानो अस्थात्।
होता यजिष्ठो अपाम् सधस्थे ॥2॥

1776. अयम् स होता यो द्विजन्मा,
विश्वा दधे वार्याणि श्रवस्या।
मर्तो यो अस्मै सुतुको ददाश॥3॥

(432) सूक्त 5

1777. अग्ने तम् अद्य अश्वम् न स्तोमैः,
क्रतुम् न भद्रम् हृदिस्पृशम्।
ऋध्याम आ त ओहैः॥1॥

1778. अध आ हि अग्ने क्रतोः,
भद्रस्य दक्षस्य साधोः।
रथीः ऋतस्य बृहतो बभूथ॥2॥

1779. एभिः नो अर्कैः भवा,
नो अर्वाक् स्वाः न ज्योतिः।
अग्ने विश्वेभिः सुमना अनीकैः॥3॥

(433) सूक्त 6

1780. अग्ने विवस्वत् उषसः,
चित्रम् राधो अमर्त्य।
आ दाशुषे जातवेदो वह आ त्वम्,
अद्य आ देवान् उषः बुधः॥1॥

1781. जुष्टो हि दूतो असि हव्यवाहनो,
अग्ने रथीः अध्वराणाम्।
सजूः अश्विभ्याम् उषसा सुवीर्यम्,
अस्मे धेहि श्रवो बृहत्॥2॥

(434) सूक्त 7

1782. विधुम् दद्राणम् समने बहूनाम्,
युवानम् सन्तम् पलितो जगार॥
देवस्य पश्य काव्यम् महित्वा,
अद्य आ ममार स हि समान॥1॥

1783. शाक्मना शाको अरुणः सुपण,
आ यो महः शूरः सनात् अनीडः।
यत् चिकेत सत्यम् इत् तत् न मोघम्,
वसु स्पार्हम् उत जेता उत दाता॥2॥

1784. एभिः ददे वृष्ण्या पौंस्यानि,
येभिः औक्षत् वृत्रहत्याय वज्री।
ये कर्मणः क्रियमाणस्य मह्न,
ऋते कर्मम् उत् अजायन्त देवाः॥3॥

(435) सूक्त 8

1785. अस्ति सोमो अयम् सुतः,
पिबन्ति अस्य मरुतः।
उत स्वराजो अश्विना॥1॥

1786. पिबन्ति मित्रो अर्यमा,
तना पूतस्य वरुणः।
त्रिषधस्थस्य जावतः॥2॥

1787. उतो नु अस्य जोषम् आ,
इन्द्रः सुतस्य गोमतः।
प्रातः होता इव मत्सति॥3॥

(436) सूक्त 9

1788. बट् महान् असि सूर्य,
बट् आदित्य महान् असि।
महः ते सतो महिमा पनिष्टम,
मह्ना देव महान् असि॥1॥

1789. बट् सूर्य श्रवसा महान् असि,
सत्र आ देव महान् असि।
मह्ना देवानाम् असुर्यः पुरोहितो,
विभु ज्योतिः अदाभ्यम्॥2॥

(437) सूक्त 10

1790. उप नो हरिभिः सुतम्,
याहि मदानाम् पते।
उप नो हरिभिः सुतम्॥1॥

1791. द्विता यो वृत्रहन्तमो,
विद इन्द्रः शतक्रतुः।
उप नो हरिभिः सुतम्॥2॥

1792. त्वम् हि वृत्रहन् एषाम्,
पाता सोमानाम् असि।
उप नो हरिभिः सुतम्॥3॥

(438) सूक्त 11

1793. प्र वो महे महे वृधे भरध्वम्,
प्रचेतसे प्र सुमतिम् कृणुध्वम्।
विशः पूर्वीः प्र चर चर्षणिप्राः॥1॥

1794. उरुव्यचसे महिने सुवृक्तिम्,
इन्द्राय ब्रह्म जनयन्त विप्राः।
तस्य व्रतानि न मिनन्ति धीराः॥2॥

1795. इन्द्रम् वाणीः अनुत्तमन्युम् इव,
सत्रा राजानम् दधिरे सहध्यै।
हर्यश्वाय बर्हया सम् आपीन्॥3॥

(439) सूक्त 12

1796. यत् इन्द्र यावतः त्वम्,
एतावत् अहम् ईशीय।
स्तोतारम् इत् दधिषे रदावसो,
न पापत्वाय रंसिषम्॥1॥

1797. शिक्षेयम् इत् महयते दिवेदिवे,
राय आ कुह चित् विदे।
न हि त्वत् अन्यत् मधवन् न आप्यम्,
वस्यो अस्ति पिता च न॥2॥

(440) सूक्त 13

1798. श्रुधी हवम् विपिपानस्य आद्रेः,
बोधा विप्रस्य अर्चतो मनीषाम्।
कृष्वा दुवांसि अन्तमा सचा इमा ॥1॥

1799. न ते गिरो अपि मृष्ये तुरस्य,
न सुष्टुतिम् असुर्यस्य विद्वान्।
सदा ते नाम स्वयशो विवक्मि ॥2॥

1800. भूरि हि ते सवना मानुषेषु,
भूरि मनीषी हवते त्वाम् इत्।
मारे अस्मत् मघवम् ज्योक् कः ॥3॥

(441) सूक्त 14

1801. प्रो सु अस्मै पुरो रथम्,
इन्द्राय शूषम् अर्चत।
अभीके चित् उ लोककृत्,
सङ्गे समत्सु वृत्रहा।
अस्माकम् बोधि चोदिता नमन्ताम्,
अन्यकेषाम् ज्याका अधि धन्वसु ॥1॥

1802. त्वम् सिन्धून् अवासृजो,
अधराचो अहन् अहिम्।
अशत्रुः इन्द्र जज्ञिषे,
विश्वम् पुष्यसि वार्यम्।
तम् त्वा परि ष्वजामहे नमन्ताम्,
अन्यकेषाम् ज्याका अधि धन्वसु ॥2॥

1803. वि षु विश्वा अरातयो,
अर्यो नशन्त नो धियः।
अस्ता असि शत्रवे वधम्,
यो न इन्द्र जिघांसति।
या ते रातिः ददिः वसु नमन्ताम्,
अन्यकेषाम् ज्याका अधि धन्वसु ॥3॥

(442) सूक्त 15

1804. रेवान् इत् रेवत स्तोता,
स्यात् वावतो मघोनः।
प्र इत् उ हरिवः सुतस्य ॥1॥

1805. उक्थम् च न शस्यमानम्,
नागो रयिः आ चिकेत।
न गायत्रम् गीयमानम् ॥2॥

1806. मा न इन्द्र पीयत्नवे,
मा शर्धते परा दाः।
शिक्ष आ शचीवः शचीभिः ॥3॥

(443) सूक्त 16

1807. आ इन्द्र याहि हरिभिः,
उप कण्वस्य सुष्टुतिम्।
दिवो अमुष्य शासतो,
दिवम् यय दिवावसो ॥1॥

1808. अत्र आ वि नेमिः एषाम्,
उराम् न धूनुते वृकः।
दिवो अमुष्य शासतो,
दिवम् यय दिवावसो ॥2॥

1809. आ त्वा ग्रावा वदन्,
इह सोमी घोषेण वक्षतु।
दिवो अमुष्य शासतो,
दिवम् यय दिवावसो ॥3॥

(444) सूक्त 17

1810. पवस्व सोम मन्दयन्,
इन्द्राय मधुमत्तमः ॥1॥

1811. ते सुतासो विपश्चितः,
शुक्रा वायुम् असृक्षत ॥2॥

1812. असृग्रम् देववीतये,
वाजयन्तो रथा इव ॥3॥

(445) सूक्त 18

1813. अग्निम् होतारम् मन्ये दास्वन्तम् वसोः सूनुम्,
सहसो जातवेदसम् विप्रम् न जातवेदसम्।
य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा।
घृतस्य विभ्राष्टिम् अनु शुक्रशोचिष,
आजुह्वानस्य सर्पिषः ॥1॥

1814. यजिष्ठम् त्वा यजमाना हुवेम,
ज्येष्ठम् अङ्गिरसाम्,
विप्र मन्मभिः विप्रेभिः शुक्र मन्मभिः।
परिज्मानम् इव द्याम्,
होतारम् चर्षणीनाम्।
शोचिष्केशम् वृषणम् यम् इमा,
विशः प्रावन्तु जूतये विशः ॥2॥

1815. स हि पुरू चित् ओजसा,
विरुक्मता दीद्यानो,
भवति द्रुहन्तरः परशुः न द्रुहन्तरः।
वीडु चित् यस्य समृतौ श्रुवत्,
वनेव यत् स्थिरम्।
निष्षहमाणो यमते नायते,
धन्वासहा नायते ॥3॥

इति षड्विंशो अध्यायः

ॐ

सप्तविंशो अध्यायः

(446) सूक्त 1

1816. अग्ने तव श्रवो वयो महि,
भ्राजन्ते अर्चयो विभावसो।
बृहत् भानो शवसा वाजम् उक्थ्याम्,
दधासि दाशुषे कवे ॥1॥

1817. पावकवर्चाः शुक्रवर्चा,
अनूनवर्चा उदियर्षि भानुना।
पुत्रो मातरा विचरन् उपावसि,
पृणक्षि रोदसी उभे ॥2॥

1818. ऊर्जो नपात् जातवेदः सुशस्तिभिः,
मन्दस्व धीतिभिः हितः।
त्वे इषः सम् दधुः भूरिवर्पसः,
चित्रोतयो वामजाताः ॥3॥

1819. इरज्यन् अग्ने प्रथयस्व जन्तुभिः,
अस्मे राय अमर्त्य।
स दर्शतस्य वपुषो वि राजसि,
पृणक्षि दर्शतम् क्रतुम् ॥4॥

1820. इष्कर्तारम् अध्वरस्य प्रचेतसम्,
क्षयन्तम् राधसो महः।
रातिम् वामस्य सुभगाम् महीम्,
इषम् दधासि सानसिम् रयिम् ॥5॥

1821. ऋतावानम् महिषम् विश्वदर्शतम्,
अग्निम् सुम्नाय दधिरे पुरो जनाः।
श्रुत्कर्णम् सप्रथस्तमम् त्वा गिरा,
दैव्यम् मानुषा युगा ॥6॥

(447) सूक्त 2

1822. प्र सो अग्ने तव ऊतिभिः,
सुवीराभिः तरति वाजकर्मभिः।
यस्य त्वम् सख्यम् आ विथ ॥1॥

1823. तव द्रप्सो नीलवान् वाश ऋत्विय,
इन्धानः सिष्णो आ ददे।
त्वम् महीनाम् उषसाम् असि,
प्रियः क्षपो वस्तुषु राजसि ॥2॥

(448) सूक्त 3

1824. तम् ओषधीः दधिरे गर्भम् ऋत्वियम्,
तम् आपो अग्निम् जनयन्त मातरः।
तम् इत् समानम् वनिनः च वीरुधो,
अन्तर्वतीः च सुवते च विश्वहा ॥1॥

(449) सूक्त 4

1825. अग्निः इन्द्राय पवते,
दिवि शुक्रो वि राजति।
महिषीव वि जायते॥1॥

(450) सूक्त 5

1826. यो जागार तमृचः कामयन्ते,
यो जागार तम् उ सामानि यन्ति।
यो जागार तमयम् सोम आह,
तव अहम् अस्मि सख्ये न्योकाः॥1॥

(451) सूक्त 6

1827. अग्निः जागार तमृचः कामयन्ते,
अग्निः जागार तम् उ सामानि यन्ति।
अग्निः जागार तमयम् सोम आह,
तव अहम् अस्मि सख्ये न्योकाः॥1॥

(452) सूक्त 7

1828. नमः सखिभ्यः पूर्वसद्भ्यो,
नमः साकंनिषेभ्यः।
युञ्जे वाचम् शतपदीम्॥1॥

1829. युञ्जे वाचम् शतपदीम्,
गाये सहस्र वर्तनि।
गायत्रम् त्रैष्टुभम् जगत्॥2॥

1830. गायत्रम् त्रैष्टुभम् जगत्,
विश्वा रूपाणि सम् भृता।
देवा ओकांसि चक्रिरे॥3 ॥

(453) सूक्त 8

1831. अग्निः ज्योतिः ज्योतिः अग्निः,
इन्द्रो ज्योतिः ज्योतिः इन्द्रः।
सूर्यो ज्योतिः ज्योतिः सूर्यः॥1॥

1832. पुनः ऊर्जा नि वर्तस्व,
पुनः अग्न इषा आयुषा।
पुनः नः पाहि अंहसः॥2॥

1833. सह रय्या नि वर्तस्व,
अग्ने पिन्वस्य धारया।
विश्वप्स्नया विश्वतः परि॥3॥

(454) सूक्त 9

1834. यत् इन्द्र अहम् यथा त्वम्,
ईशीय वस्व एक इत्।
स्तोता मे गोसखा स्यात्॥1॥

1835. शिक्षेयम् अस्मै दित्सेयम्,
शचीपते मनीषिणे।
यत् अहम् गोपतिः स्याम्॥2॥

1836. धेनुष्ट इन्द्र सूनुता,
यजमानाय सुन्वते।
गाम् अश्वम् पिप्युषी दुहे ॥3॥

(455) सूक्त 10

1837. आपो हि ष्ठा आ मयोभुवः,
ता न ऊर्जे दधातन।
महे रणाय चक्षसे ॥1॥

1838. यो वः शिवतमो रसः,
तस्य भाजयत इह नः।
उशतीः इव मातरः ॥2॥

1839. तस्मा अरम् गमाम वो,
यस्य क्षयाय जिन्वथ।
आपो जनयथा च नः ॥3॥

(456) सूक्त 11

1840. वात आ वातु भेषजम्,
शम्भु मयोभु नो हृदे।
प्र न आयूँषि तारिषत् ॥1॥

1841. उत वात पितासि न,
उत भ्राता उत नः सखा।
स नो जीवातवे कृधि ॥2॥

1842. यत् अदो वात ते गृहे,
अमृतम् निहितम् गुहा।
तस्य नो धेहि जीवसे ॥3॥

(457) सूक्त 12

1843. अभि वाजी विश्वरूपो जनित्रम्,
हिरण्ययम् बिभ्रत् अत्कम् सुपर्णः।
सूर्यस्य भानुम् ऋतुथा वसानः,
परि स्वयम् मेधम् ऋजो जजान ॥1॥

1844. अप्सु रेतः शिश्रिये विश्वरूपम्,
तेजः पृथिव्याम् अधि यत् सम् बभूव।
अन्तरिक्षे स्वम् महिमानम् मिमानः,
कनिक्रन्ति वृष्णो अश्वस्य रेतः ॥2॥

1845. अयम् सहस्रा परि युक्ता वसानः,
सूर्यस्य भानुम् यज्ञो दाधार।
सहस्रदाः शतदा भूरिदावा,
धर्ता दिवो भुवनस्य विश्पतिः ॥3॥

(458) सूक्त 13

1846. नाके सुपर्णम् उप यत् पतन्तम्,
हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा।
हिरण्यपक्षम् वरुणस्य दूतम् यमस्य,
योनौ शकुनम् भुरण्युम् ॥1॥

1847. ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि नाकेअस्थात्,
प्रत्यङ् चित्रा बिभ्रत् अस्य आयुधानि।
वसानो अत्कम् सुरभिम् दृशे कम्,
स्वाः ण नाम जनत प्रियाणि॥2॥

1848. द्रप्सः समुद्रम् अभि यत् जिगाति,
पश्यन् गृध्रस्य चक्षसा विधर्मन्।
भानुः शुक्रेण शोचिषा चकानः,
तृतीये चक्रे रजसि प्रियाणि॥3॥

इति सप्तविंशो अध्यायः

ॐ

अथ अष्टाविंशो अध्यायः

(459) सूक्त 1

1849. आशुः शिशानो वृषभो न भीमो,
घनाघनः क्षोभणः चर्षणीनाम्।
सङ्क्रन्दनो अनिमिष एकवीरः,
शतम् सेना अजयत् साकम् इन्द्रः॥1॥

1850. सङ्क्रन्दनेन अनिमिषेण जिष्णुना,
युत् कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना।
तत् इन्द्रेण जयत तत् सहध्वम्,
युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा॥2॥

1851. स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी,
संसृष्टा स युध इन्द्रो गणेन।
संसृष्टजित् सोमपा बाहुशर्धी,
उग्रधन्वा प्रतिहिताभिः अस्ता॥3॥

(460) सूक्त 2

1852. बृहस्पते परि दीय आ रथेन,
रक्षोहा अमित्रान् अपबाधमानः।
प्रभञ्जन् सेनाः प्रमृणो युधा जयन्,
अस्माकम् एधि अविता रथानाम्॥1॥

1853. बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः,
सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः।
अभिवीरो अभिसत्वा सहोजा,
जैत्रम् इन्द्र रथम् आ तिष्ठ गोवित्॥2॥

1854. गोत्रभिदम् गोविदम् वज्रबाहुम्,
जयन्तम् अज्म प्रमृणन्तम् ओजसा।
इमम् सजाता अनु वीरयध्वम्,
इन्द्रम् सखायो अनु सम् रभध्वम्॥3॥

(461) सूक्त 3

1855. अभि गोत्राणि सहसा गाहमानो,
अदयो वीरः शतमन्युः इन्द्रः।
दुश्च्यवनः पृतनाषाड् अयुध्यो,
अस्माकम् सेना अवतु प्र युत्सु॥1॥

1856. इन्द्र आसाम् नेता बृहस्पतिः,
दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः।
देवसेनानाम् अभिभञ्जतीनाम्,
जयन्तीनाम् मरुतो यन्तु अग्रम्॥2॥

1857. इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ,
आदित्यानाम् मरुताम् शर्ध उग्रम्।
महामनसाम् भुवनच्यवानाम्,
घोषो देवानाम् जयताम् उदस्थात्॥3॥

(462) सूक्त 4

1858. उत् हर्षय मघवन् आयुधानि,
उत् सत्वनाम् मामकानाम् मनांसि।
उत् वृत्रहन् वाजिनाम् वाजिनानि,
उत् रथानाम् जयताम् यन्तु घोषाः॥1॥

1859. अस्माकम् इन्द्रः समृतेषु ध्वजेषु,
अस्माकम् या इषवः ता जयन्तु।
अस्माकम् वीरा उत्तरे भवन्तु,
अस्मान् उ देवा अवता हवेषु॥2॥

1860. असौ या सेना मरुतः परेषाम्,
अभ्येति नः ओजसा स्पर्धमाना।
ताम् गूहत तमसा अपव्रतेन,
यथा एतेषाम् अन्यः अन्यम् न जानात्॥3॥

(463) सूक्त 5

1861. अमीषाम् चित्तम् प्रतिलोभयन्ती,
गृहाण अङ्गानि अप्वे परेहि।
अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोकैः,
अन्धेन अमित्राः तमसा सचन्ताम्॥1॥

1862. प्रेत आ जयता नर,
इन्द्रो वः शर्म यच्छतु।
उग्रा वः सन्तु बाहवो,
अनाधृष्या यथासथ॥2॥

1863. अवसृष्टा परा पत,
शरव्ये ब्रह्मसंशिते।
गच्छ अमित्रान् प्र पद्यस्व,
मामीषाम् कम् च न उच्छिषः॥3॥

(464) सूक्त 6

1864. कङ्काः सुपर्णा अनु यन्तु एनान्,
गृध्राणाम् अन्नम् असौ अस्तु सेना।
मा एषाम् मोचि अघहारः च न इन्द्र,
वयांसि एनान् अनुसंयन्तु सर्वान्॥1॥

1865. अमित्रसेनाम् मघवन्,
अस्मान् शत्रुयतीम् अभि।
उभौ ताम् इन्द्र वृत्रहन्,
अग्निः च दहतम् प्रति॥2॥

1866. यत्र बाणाः सम् पतन्ति,
कुमारा विशिखा इव।
तत्र नो ब्रह्मणः पतिः,
अदितिः शर्म यच्छतु
विश्वाहा शर्म यच्छतु॥3॥

(465) सूक्त 7

1867. वि रक्षो वि मृधो जहि,
वि वृत्रस्य हनू रुज।
वि मन्युम् इन्द्र वृत्रहन्,
अमित्रस्य अभिदासतः॥1॥

1868. वि न इन्द्र मृधो जहि,
नीचा यच्छ पृतन्यतः।
यो अस्मान् अभिदासति,
अधरम् गमया तमः॥2॥

1869. इन्द्रस्य बाहू स्थविरौ युवानौ,
अनाधृष्यौ सुप्रतीकौ असह्यौ।
तौ युञ्जीत प्रथमौ योग आगते,
याभ्याम् जितम् असुराणाम् सहो महत्॥3॥

(466) सूक्त 8

1870. मर्माणि ते वर्मणा छादयामि,
सोमः त्वा राजाम् अमृतेन् अनु वस्ताम्।
उरोः वरीयो वरुणः ते कृणोतु,
जयन्तम् त्वा अनु देवा मदन्तु॥1॥

1871. अन्धा अमित्रा भवत,
अशीर्षाणो अहय इव।
तेषाम् वो अग्निनुन्नानाम्,
इन्द्रो हन्तु वरम् वरम्॥2॥

1872. यो नः स्वो अरणो यः,
च निष्ठ्यो जिघांसति।
देवास्तम् सर्वे धूर्वन्तु,
ब्रह्म वर्म मम अन्तरम्,
शर्म वर्म मम अन्तरम्॥3॥

(467) सूक्त 9

1873. मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः,
परावत आ जगन्था परस्याः।
सृकम् संशाय पविम् इन्द्र तिग्मम्,
वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व॥1॥

1874. भद्रम् कर्णेभिः श्रुणुयाम देवा,
भद्रम् पश्येम अक्षभिः यजत्राः।
स्थिरैः अङ्गैः तुष्टुवांसः तनूभिः,
व्यशेमहि देवहितम् यद् आयुः॥2॥

1875. स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः,
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नः तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः,
स्वस्ति नो बृहस्पतिः दधातु।
स्वस्ति नो बृहस्पतिः दधातु॥3॥

इति अष्टाविंशो अध्यायः

इति सामवेद संहिता समाप्त

ॐ

स्वामी शरण कृत साहित्य

मो. 9839105629, 8687849004

1. ऋग्वेद भाष्य :- **ऋग्वेद भाष्य के इस सार-संक्षेप संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। जन सामान्य तथा शोधकर्ताओं-अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण। (बृहद् आकार)** रु. 2000.00

2. सामवेद भाष्य :- **सामवेद भाष्य के इस सम्पूर्ण संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण।**

(बृहद् आकार) रु. 2000.00

3. अथर्ववेद भाष्य :- **अथर्ववेद भाष्य के इस सार-संक्षेप संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण।**

(बृहद् आकार) रु. 2000.00

4. यजुर्वेद भाष्य :- **यजुर्वेद भाष्य के इस सम्पूर्ण संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण।**

(बृहद् आकार) रु. 2000.00

5. वेदायन भाष्य :- **चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेद सूक्तों का मन्त्रार्थ, पदार्थ, भावार्थ तथा सरस गेय पद्यानुवाद भी दिया गया है। सन्धियों-संयुक्ताक्षरों से मुक्त सरल सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द**

का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। जन सामान्य तथा शोधकर्ताओं-अध्येताओं के लिए उपयोगी संस्करण।

रु. 500.00

6. वेदायन प्रवचन :- **चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेद सूक्तों का मन्त्रार्थ, पदार्थ, भावार्थ तथा सरस गेय पद्यानुवाद भी दिया गया है। इसके साथ ही इन मन्त्रों पर विस्तृत प्रवचन भी इस पुस्तक में संकलित हैं। सन्धियों-संयुक्ताक्षरों से मुक्त सरल सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है। सभी के लिए उपयोगी संस्करण।**

रु. 500.00

7. वेदायन (सरल पाठ, काव्यानुवाद, भावार्थ सहित):- **चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेदसूक्तों का सन्धियों से मुक्त सरल पाठ, काव्यानुवाद एवम् भावार्थ।** रु. 100.00

8. वेदायन (सरल पाठ, काव्यानुवाद) :- **चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेदसूक्तों का सन्धियों से मुक्त सरल पाठ, काव्यानुवाद एवम् भावार्थ। वेदपाठ तथा उपासना के लिए।** रु. 100.00

9. वेद सूक्तायन :- **चारो वेदों से चुने हुए 15 प्रमुख वेदसूक्तों का**

सन्धियों से मुक्त सरल पाठ (छन्द पाठ), मन्त्रार्थ, विशेष भावार्थ-व्याख्या, व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। रु. 100.00

10. एकादशोपनिषद् :- **यजुर्वेद के अन्तिम 11 अध्यायों का मन्त्रार्थ, पदार्थ, भावार्थ दिया गया है। सन्धियों-संयुक्ताक्षरों से मुक्त सरल सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। जन सामान्य तथा शोधकर्ताओं-अध्येताओं के लिए उपयोगी संस्करण।** रु. 500.00

11. चतुर्वेद सरल पाठ :- **प्रथम बार प्रस्तुत सन्धियों से मुक्त चारों वेदों का सरल पाठ जन साधारण के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। (बृहद् आकार)** रु. 2500.00

12. ऋग्वेद सरल पाठ :- **ऋग्वेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है।**

(बृहद आकार) रु. 900.00

13. सामवेद सरल पाठ :- **सामवेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है।** रु. 500.00

14. अथर्ववेद सरल पाठ :- **अथर्ववेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है। (बृहद आकार)** रु. 700.00

15. यजुर्वेद सरल पाठ :- **यजुर्वेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम**

बार प्रस्तुत किया जा रहा है। रु. 700.00

16. वैदिक धात्वादि कोश :- **पाणिनि तथा काशकृत्स्न प्रोक्त धातुपाठों को समाहित कर सम्पूर्ण धातुकोश तैयार किया गया है। उपसर्ग, अव्यय, संख्या, सर्वनाम शब्द भी दिये गये हैं। इसकी सहायता से वेद सहित सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य का अर्थ किया जा सकता है।अत्यन्त उपयोगी संस्करण।** रु. 500.00

17. वैदिक शब्दकोश :- **वैदिक पदों (शब्दों) का धातुज, व्याकरण-सम्मत प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ।इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत वैदिक शब्दकोश।(वृहद आकार)** रु. 900.00

18. वैदिक शब्दकोश (लघु संस्करण) :- **वैदिक पदों (शब्दों) का धातुज, व्याकरण-सम्मत प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ।इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत वैदिक शब्दकोश।** रु. 200.00

19. सरल संस्कृत व्याकरण :- **व्याकरण के मूल तत्वों पर आधारित इस पद्धति से शब्द रूप, धातु रूप, पाणिनीय सूत्र रटे बिना एक मास में संस्कृत पढ़ना, लिखना, बोलना सीख सकते हैं। दशकों के अनुभव के बाद प्रस्तुत चमत्कारिक व्याकरण प्रणाली।** रु. 95.00

20. वैदिक इतिहास :- **ब्रह्मा व मनु से आरम्भ कर बुद्ध तक का सम्पूर्ण क्रमबद्ध इतिहास एक पुस्तक में सर्वप्रथम प्रस्तुत किया गया है। सूर्यवंश की 128 पीढ़ियों का इतिहास प्रथम बार प्रस्तुत किया है। सूर्यवंश, चन्द्रवंश की शाखाओं सहित मनु से भोज तक सम्पूर्ण वंशावली भी दी गयी है।** रु . 200.00

21. ओम् साधना :- **ओम् साधना, वैदिक संस्कृति, वैदिक**

आध्यात्मिक चिकित्सा, वैदिक योग साधना।
रु. 200.00

22. चिन्तन प्रवाह :- **वैदिक संस्कृति तथा जीवन दर्शन सम्बन्धी चिन्तन।** रु. 500.00

23. वैदिक विज्ञान :- **वैदिक संस्कृति, आध्यात्मिक चिकित्सा, वैदिक योग साधना।** रु. 50.00

24. युगबोध :- **प्रबन्ध काव्य।** रु. 300.00

25. चेतना :- **काव्य संकलन।** रु. 100.00

26. नवांकुर :- **काव्य संकलन।** रु. 20.00

❖❖ ❖ ❖❖

ॐ यो असौ आदित्ये पुरुषः, सो असौ अहम्, ओम् खम् ब्रह्म॥

आगामी प्रकाशन योजना

1. वैदिक व्याकरण : पंचपाठी व्याकरण का समयानुकूल प्रस्तुतीकरण। अष्टाध्यायी सूत्रों का अनुवृत्ति सहित प्रस्तुतीकरण, जिससे प्रत्येक सूत्र स्वयम् ही सम्पूर्ण अर्थ स्पष्ट कर सके। व्यापक प्रभाव वाले सूत्रों को महत्व देते हुए, अपवादों को स्पष्ट करना तथा उनकी सीमाओं का स्पष्टीकरण करना। पंचपाठी की अन्य पुस्तकों का भी इसी भाँति सम्पादन तथा उणादि कोष आदि का अकारादि क्रम से प्रस्तुतीकरण।

2. वैदिक महापुराण : पुराण विद्या का व्यापक शोधपरक अध्ययन कर पंच-लक्षणों के आधार पर सम्पादन।

3. वैदिक जीवन : वैदिक संस्कृति तथा जीवन दर्शन के साथ ही वैदिक साहित्य का सम्पूर्ण परिचय।

❖❖ ❖ ❖❖

ॐ यो असौ आदित्ये पुरुषः, सो असौ अहम्, ओम् खम् ब्रह्म॥

सामवेद स्वामी शरण